लावनी ब्रह्मज्ञान
प्रकाशक : गोवर्द्धन प्रकाशन, मथुरा

* श्री हरिम्वंदे *

वृहद्

* लावनी ब्रह्मज्ञान *

जिसको
श्री १०८ काशीगिरी बनारसी परमहंस आश्के हक्कानी
ने वनाया जिसमें इश्क मार्फत मतलव तौहीद की
लावनी ऐसी ऐसी हैं कि जिनके पढ़ने से
ज्ञान व भक्ति दोनों प्राप्त होती हैं ।

प्रकाशक

गोवर्द्धन प्रकाशन
मथुरा

स्पेशल संस्करण

मूल्य ६०)

मुद्रक - गोवर्द्धन प्रेस, काजीपाड़ा, मथुरा ।

भूमिका

कोई इसको लावनी कहते हैं और कोई मरहठी का ख्याल कहते हैं असल
में इसका बनाना और गाना दक्षिण से उत्पन्न है और इसके दो कर्त्ता हुए एक
का नाम तुकनगिर और दूसरे का नाम शाहअली था । उन्होंने दो मत खड़े किये
तुर्रा और कलंगी । तुकनगिर तुर्रे को बड़ा कहते हैं और शाहअली कलंगी को
बड़ा रखते थे, आपस में विवाद किया करते थे और अपना पंथ उन्होंने चलाया
यहाँ तक कि आज तक उनके मतवाले बहुत से लोग इस देश में भी बनाते गाते
हैं । उनमें पढ़े लिखे भी हैं परन्तु बड़ा अफसोस है कि गाली गुफता वकते हैं,
इस कदर से कि आपस में लड़ भी पड़ते हैं । इस सववसे इसको कोई भला
आदमी पसन्द नहीं करता है और मैं भी इसी विषय में वाल अवस्था से मशगूल
था, जब ईश्वर ने मेरे ऊपर अपनी कृपा करी तो इस पाप से मुझको छुड़ाया
और फकीर वनाया अपना जलवा मुझको दिखलाया उसको देखते ही वह मस्ती
का आलम हुआ कि आली- २ मजमून नजर आने लगे तो मैंने अपने दिल में
यह विचारा कि तू इसी लावनी से भगवत् आराधना कर तो उर्दू वोली में मैंने
इश्कमारफत मतलव तौहीद की और हिन्दी में उपासना व्रह्मज्ञान को कहा, इस
ास्ते कि जो कोई इसके असल मतालिव को पायेगा वह जीते ही जी उसमें मिल
येगा और वही ईश्वर मेरे दिल में वैठ के ये सव वातें वनाता है मैं कुछ पढ़ा
वा नहीं, परन्तु जो कोई इसके मजमून को सुनते हैं वह जाय तअज्जुव समझते
ौर पसन्द करते हैं । इसी सववसे मैंने यह लावनी 'गोवर्द्धन प्रकाशन' द्वारा
ई है और आगे भी सिर्फ इनको ही छापने का हक दिया है जिससे इसको
मीर व गरीव पढ़ें और इसको समझें और जो कोई इसको अपनी तवीअत
पढ़ेंगे तो उनका भला होगा ।

दो पदी — जो कहता हम करते वो दुःख भरता है ।
जो करता जगके कार वही करता है ॥

– श्रीमत्काशीगिरि वनारसी परमहंस आशके हक्कानी

* श्री गणेशाय नमः *

❁ लावनी ब्रह्मज्ञान ❁

भजन

जय जय गजराज हे भक्त रिछपाला ॥ १ ॥
सब लायक सुखदायक स्वामी सन्तन के प्रतिपाला ॥
पान पुष्प सिन्दूर चढ़त हैं उमा पुत्र शिवजी के लाला ॥जय॥
एक रदन गजबदन बिनायक मस्तक चन्द्र विशाला ।
माथे मुकुट जराव विराजे गल सोहै मुतियनकी माला ॥जय॥
नव निधि रहे खवासी तेरी मूसे वाहन आला ।
ऋद्धि सिद्धि हर वक्त आरती स्वामी नित प्रति करत उजाला।जय।
विपद विदारण हरण सकल दुःख काटो कठिनकराला ।
कहैं कृष्ण कवि वेद पुराणन प्रथम नाम तेरा नीका निकाला।जय।

लावनी

हृदय में है हिंगलाज करे काज लाज रखने वाली । नयना देवी नयनमें बसें हँसें दे दे ताली ॥ शीशमें सीता सति विराजें सावित्री संकटारानी । मस्तकमें रहें आप श्री महाविद्या औ महारानी । भृकुटीमें करै वास भैरवी भय मानें सब अभि-मानी । ब्रह्ममें अपने विराजें विंध्याचल और ब्रह्मानी । बसें नासिकामें नवदुर्गे नगर कोट लाटों वाली । नयनादेवी नयन में बसें हँसे देदे ताली ॥१॥ मुख में बसें मंगला देवी सब कारज करदें मंगल । होठमें हेमावती रहें क्षणमें काटिदेवें कलिमल । जिह्वामें जान्हवी और यमुना सरस्वती सबसे निर्मल । गले में गौरी और गायत्री का जप नाम अटल ॥

कंठमें बसें कालिकादेवी कंकाली और महाकाली । नयन देवी नयनमें बसें हँसे देदे ताली ॥२॥ कानमें कमला और कात्यायिनी क्रिया रूप अद्भुत माया । दोनों भुजामें बसें भवानी बड़ा मुख दिखलाया ॥ उरमें बसें उमा उत्रानी उग्रतेज उनका छाया । कहाँलौं वर्णौं लखो नहीं जाती है अपनी काया ॥ बुद्धि में बसे विधाता माता बड़ी बुद्धि देने वाली । नयना देवी नयनमें बसें हँसें देदे ताली ॥३॥ रोम रोममें रमी रम्भा और नाभि कमलमें निरवानी । कहैं देवीसिंह इसे कोई पहिचाने चातुर ज्ञानी । श्वास २ में शक्ति बोले ध्यान धरें पूरे ध्यानी । बनारसी यह कहैं भगवतीकी भक्ति मनमानी ॥ मेवा और मिष्ठान्न हार फूलों की नित चढ़त डाली । नयना देवी नयनमें बसें हँसें देदे ताली ॥४॥

सब धर्मसे परे वेदमें लिखा है सुन संन्यासी का धर्म । क्या कोई जाने पण्डितके संन्यासी का कौन है कर्म ॥ ग्रहण करें तो बनै नहीं और त्याग करें तो क्या त्यागें । सोवें तो निद्रा नहीं आवै जागे तो सोवत जागें ॥ युद्ध करें तो धर्म घटे और पाप लगे रण से भागें । त्रैलोकीके दाता हैं फिर क्या भिक्षा घर-घर माँगें । उनको गति वोही जानें नहीं मिले किसीको जिनका धर्म । क्या कोई जाने पण्डितके संन्यासी का कौन है कर्म ॥१॥ मौन रहें पर बोलें सबसे बरत रहें और सब खावें। आसन दृढ़ ह्वै वाट चलें जित चाहै वह उतही जावें॥ पढे नहीं एको अक्षर और बेद शास्त्र निशि दिन गावें। आँख मूंद देखें सबको पर आप दृष्टिमें नहिं आवें॥ वह क्या देखेंगे उनको जिनकी दृष्टिमें लगा है चर्म । क्या कोई जाने पण्डित के संन्यासी का क्या है कर्म ॥२॥ योग विषे वह भोग करें और

भोग विषे साधें वह योग। शोक विषे वह हर्ष करें और रोग विषे रहें सदा निरोग ॥ वियोगमें संयोग करें संयोग विषे रहें बिना वियोग । लोक विषे परलोक सुधारे इसको समझें ज्ञानी लोग। जिनकी मायासे सृष्टिमें व्याप रहाहै सबको भर्म । क्याकोई जाने पण्डितके संन्यासी का कौन है कर्म ॥३॥ देह विषे वह रहें विदेह मायामें रहै निर्माया । देवीसिंह ये कहैं कि उनका पार किसीने नहिं पाया॥ चार वेद षट शास्त्र अठारों पुराणने योंही गाया । सब धर्मसे बड़ा धर्म संन्यास मेरे मनमें भाया॥ बनारसी तीनों गुणसे हैं रहित न समझें धर्म अधर्म । क्या कोई जाने पण्डित के संन्यासी का कौन है कर्म ॥४॥

मन मुरशदसे मिलके अब तू चित्तको अपने चेला कर । दुई दूरकर हमेशा निर्भय पदमें खेलाकर ॥ देख तो अपने आपको तू है कौन कहाँसे आया है । किसने पैदा किया और किसने तुझे बनाया है ॥ जो तू कहै हूँ बाप से पैदा माय ने मुझको जाया है । यह तो गलत है अरे तू आपीमें आप समाया है ॥ दुविधा को कर अलग और सब दिल का दूर झमेला कर । दुई दूरकर हमेशा निर्भय पदमें खेला कर ॥१॥ जब तक है अज्ञान तभी तक कुटुम्ब कवीला भाई है। ज्ञान हुआ तो आतमा आपमें आप समाई है । कोई बना ब्राह्मण क्षत्री कोई वैश्य शूद्र कोई नाई है । हमने देखा तो सबके बीचमें कुँवर कन्हाई है ॥ समदर्शी हो विचार पड़े जो दुःख सुख तन पर झेला कर। दुईदूर कर हमेशा निर्भय पदमें खेलाकर ॥२॥ तू उसको पहिचान तेरे इस शरीरमें बसता है जो । किस गफलत में पड़ा औ कौन नींद भर रहा है सो ॥ खोलके अपनी आँख देख वह एक है उसको समुझ [illegible] दो । कौन तेरा

और तू किसका है इसे तुम समझो तो । आतममें परमातम को अब देखले दर्शन मेलाकर । दुईदूरकर हमेशा निर्भय पद में खेलाकर ॥३॥ 'एक ब्रह्म और द्वितियो नास्ति' यही वेद की बानी है । इसको समझे वही नर जो पूरा विज्ञानी है ॥ जैसे जल की तरंग फिर जल ही के बीच समानी है । कहैं देवीसिंह बात यह बनारसीने जानी है ॥ छोड़ तुर्रे कलंगी का गाना निर्गुणके दण्ड पेलाकर । दुई दूरकर हमेशा निर्भय पद में खेलाकर ॥ ४ ॥

होली सन्त मार्गी निर्गुण—बहेर लंगड़ी

संत खेलते होली जिसमें इज्जत हुरमत लाज रहे। गुणी-जनोंके अगाड़ी अनहद बाजे बाज रहे ॥ ज्ञान गुलाल के बादल छाये प्रेम रंग नित वर्षावें । ब्रह्मवादसों लड़ें और धर्मधूलको उड़्डावें॥ धीरजका ढफ बाजे संगमें नाम नारायणकागावें। क्रोध कुमकुमा मारके काम शत्रुको हट्टावें ॥ दयाकी दौलत देते सबको साथमें सभी समाज रहे । गुणीजनों के अगाड़ी अनहद बाजे बाज रहे॥१॥अमर अवीरको साधू लगाये मुक्त रूप पहिने माला । भस्मके भूषण झलकते तन पर मन में उजियाला । मंत्र मिठाई सन्त पावते बहुत खूब सबसे आला। अमृत रसको पियें और खोल देईं घटका ताला। नेह नाचको देखें हरिजन सत्त साजको साज रहे । गुणीजनों के अगाड़ी अनहद बाजे बाज रहे ॥२॥ लौको लकड़ी लूटले आये आतम कोअगनी करते । हरहरहोली जगावेंवहीनहिंजनमें नहिंमरते। विज्ञानकी गालो देते हैं सन्त किसीसे नहिं डरते । कष्टकेकपड़े पहिनके काया को निर्मल करते । शील सितार सुनावें साधू नाम नक्कारे बाज रहे । गुणीजनों के अगाड़ी अनहद बाजे

बाजरहे।३।रामनामका शोर चलावेंपरस्वारथकी पिचकारी। जिसके मारे उसीके मुख पर लगती हैं प्यारी । मिलें गले गोविन्दसे चलके जाप जपे गिरवर धारी । भाव भोग को करे हैं वही यती वही ब्रह्मचारी ॥ शुद्धसिंहासन पर चढ़ बैठे तीन लोक में राज रहे । गुणीजनों के अगाड़ी अनहद बाजे बाज रहे ॥४॥ तीरथकी फेरी फिरते हैं सुमत समग्रीले जाते। पूजें होली गुणीजन ब्रह्मज्ञानमें मतमाते ॥ देवीसिंह यों कहैं कि ऐसी होली जो कोई गाते। भवसागरके पार हो परमधाम पदवी पाते । बनारसीने हरिको पाया किसीके नहिं मुहताज रसे । गुणीजनों के अगाड़ी अनहद बाजे बाज रहे ॥ ५ ॥

रहस मण्डल निर्गुण—बहेर लंगड़ी

इस तनमें आत्माकृष्ण है और गोपी ग्वालों का दल । सुनो कानदे बना है तनमें मेरे रहस मंडल । विश्वकर्मा ने आज्ञा पाके शीश महल तैयार किया । अनहद बाजोंका उसमें संपूरण विस्तार किया । चारों खम्भे लगाये उसमें ऐसा सुन्दर कार किया । खुशी हुये हम तो अपने रहस का वही विचार किया । सबको साथले आयामैं दिखलाया उन्हें भवन उज्वल । सुनो कानदे बना है तनमें मेरे रहस मंडल ॥१॥ मन ऊधवजो मित्र हमारे सदा से हैं आज्ञाकारी।बुद्धि राधिका सो मेरे प्राणोंको है अति प्यारी । नेत्र करण मुख दन्त कण्ठ सब सखा हमारे हितकारी । लगन है ललिता बहुत सुन्दर शोभा है सबसे न्यारी। बल हैं सो बलभद्र हमारे भ्राता जिनका अटूट है बल । सुनो कानदे बना है तनमें मेरे रहस मंडल॥२॥ हजार इक्कीस छः सै श्वासा सो सब सखियाँ संग आँई । बोतौ समझी हमो थे कृष्ण हमारे हैं साँई । गलेसे मेरे लपट

झपट क्या-क्या ही तानें सुन्दर गांई। बजाई बंशी जो मैंने अनहद तो सब बिलमाँई। प्रेममें मगन भई ब्रजबनिता काम ने किया बहुत बेकल। सुनो कानदे बना है तनमें मेरे रहस मंडल ॥३॥ नौ नारी थीं पतिव्रता सो भी सब आईं पास मेरे रोम रोम को सखा समझो या समझो दास मेरे। मेरी लीला देख देख नहीं होते मित्र उदास मेरे। वर्णन करते हैं गुणको जगतमें वेदव्यास मेरे। मैं तो हूँ आत्माकृष्ण यह शरीर मेरा है मंडल। सुनो कानदे बना है तनमें मेरें रहस मंडल ॥४॥ आये वहाँ गोपिका बनके ज्ञान रूपधर गोपेश्वर। हमने उन को लखा ये गोपी नहीं हैं शिवशंकर। पूजन करंके पास बिठाया रहस दिखाया अति सुन्दर। कहाँ लग वरणन करूं इस कायामें है चराअचर। बनारसी सच्चिदानन्द चैतन्यरूप निर्गुण निर्मल। सुनो कानदे बना है तनमें मेरे रहसमंडल ।५।

पूरे जौहर संत परखते मनमें मणि और लाल रतन। हितका हीरा खरीदें जिसका नहीं कुछ मोल बजन ॥ ब्रह्म बजार लगाया घटमें कृपा कमर बाँधी कसके। साँचे जौहर साधु संत गुरु सबजा साधैं हँस हँसके ॥ ज्ञानकी गठरी लगी पेटमें जरा नहीं नीचे खसके। करते सौदा सदा वो दया दुकानों पर बसके ॥ लगन की लड़ियाँ लटकें जिसमें मुक्त रूप मोती लटकन। हित का हीरा खरीदें जिसका कुछ नहीं मोल बन-जन ॥१॥ चतुराईको चुन्नी ले आपसमें सबको दिखलाते। मेलका मूँगा खरीदें हरिभक्तों से मिलजाते ॥ दिन पर दिन हो मोल सवाया कभी नहीं घाटा खाते। साँचे जौहरी के आगे सभी जवाहिर शर्माते ॥ तप करने का लिया तामड़ा पासमें रक्खा करके यतन। हित का होरा खरीदें जिसका

नहीं कुछ मोल वजन ॥२॥ यश करने का जामा पहना घर से निकल बाहर आये। बड़ी दूरपर जायकर अकीक हिक-मत का लाये ॥ पुण्य पापसे न्यारे होकर लाखों पारस बनाये। फते नामके फिरोजे हर भक्तोंके मन भाये ॥ मनका मनका मेरे मनमें श्याम श्याम का कर सुमिरन। हित का हीरा खरीदे जिसका नहीं कुछ मोल वजन ॥३॥ हमने अब इस दिलको जौहर किया हैं ये है सच्चा दाना ॥ वही जौहरीकि जिसने अपने दिल को पहिचाना ॥ इसके बीच में सबकी खानि है मुल्क-मुल्क का खज्जाना ॥ कहै देवीसिंह वोही मालिक जिसका कुल जम्माना ॥ बनारसी ने दिल परखा कई लाख बजेके लगाये धन। हित का हीरा खरीदें जिसका नहीं कुछ मोल वजन ॥ ४ ॥

योगी होय जो सकलमें देखे दशवें द्वारको वो। कारज करे जगतके सब और लखे अलख करतार को वो। नाचै गावै गाल बजावै ध्यान आत्मामें धरके। सबमें रहे और सब से न्यारा पूरण होय योग करके ॥ निर्भय होके विचरे निश दिन कबहूँ नहीं चले डरके। अपने आपमें आप को देखा धन्य भाग हैं वा नरके ॥ जब वह काया त्यागे तब फेर पहुँचे परलो पार को वो। कारज करै जगतके सब और लखे अलख कर्तार को वो ॥१॥ प्रसन्न चित्त औ बुद्धी निर्मल कर्म अकर्म न कुछ जाने ॥ द्वैत भावसे अलग रहे अद्वैत ज्ञानको बखाने ॥ समदर्शी औ शुद्ध समाधी अपने को आपी माने। जीव ब्रह्म में एक भावकर अपने मनमें पहिचाने। भूमि भार उतारन कारन धरै आप अवतार को वो। कारज करै जगतके सब और लखे अलख कर्तार को वो ॥२॥ त्रैगुण को जीते औ

चौथे पदपर अपनी करे मती । सम्पूर्ण सृष्टि को भोग जो करे वोही हो बालयती ।। चराचरमें अपने आपको देखे सब से उसको होय गती । आपी पिता और आपी पुत्र है आपी स्त्री आप पती ।। चाहै करे वह प्रलय और चाहे रचे सकल संसार को वो । कारज करे जगतके सब और लखे अलख कर्तार को वो ।।३।। पुण्य पापसे अलग रहे दुख सुख का नहीं विचार करै । ब्रह्मज्ञान की चर्चा अपने मुख से बारम्बार करै ।। आत्मदर्शी होय तो अपने सब कुल का उद्धार करै ।। बनारसी ये कहैं वह जो चाहे सो आप करतार करै । चाहै करै वह नर पैंदा और चाहे बनाये नारिको वो । कारज करै जगत के सब और लखे अलख कर्तार को वो ।। ४ ।।

कालबलीसे लड़के कुश्ती जीते जगतमें साधू संत। उनके दावका किसी ने आज तलक नहिं पाया अन्त । बाँध लंगोटा बने जितेन्द्रिय कभी न देखें परनारी । गमके भोजन करैं जब चढ़ै बदन पर तैयारी । काम क्रोध मद लोभ मोह इन पाँच की कुश्ती भारी। कालके ऊपर जायके बाँधी अपना असवारा। मन को किया मुरीद पेच बतलाये उनके तईं अनन्त । उनके दावका किसीने आज तलक नहिं पाया अन्त ।।१।। रामनाम के कसरत से जब हुआ बदनमें जोर बड़ा । उदय अस्त तक हुआ उनकी कुश्ती का जोर बड़ा। पहलवान है वही जगतमें जो कोई है गमख्वार लड़ा । उसके सानी कोई नहीं हुआ कहीं शहजोर बड़ा । लोग लड़े दुनियाँमें कुश्ती काल को जीतें सन्त तुरन्त । उनके दाव का किसीने आज तलक नहिं पाया अन्त ।।२।। जो कोई उनसे दस्त मिलावे उनके हाथमें यश हो जाय । कभी पछड़े जगतमें मौत भी उसके बस हो

जाय ।। काल फाँस से बचे हुए जिसकी रसनामें हरिरस हो जाय । कपट की कैंची तजै तो पहलवान चौरस होजाय । वह नहिं गिरे किसीके गिराये जो सद्‌गुरु की पढ़ै पढ़न्त । उसके दावका किसीने आज तलक नहिं पाया अन्त ।।३।। हतकोड़ा गल लपेट कुश्ती और पेंच सब झूठे खेल । इन्हें छोड़ के तू भज हरनाम और दण्ड निर्गुणके पेल ।। शील सत्यका बाँध सींगडा जो गुजरे वह दिल पर खेल । कहैं देवीसिंह अरे नर मूढ़ तू कर सद्‌गुरुसे मेल । बनारसी सन्तों का सेवक कहै बात जो होवै तन्त ।। उनके दावका किसी ने आज तलक नहीं पाया अन्त ।। ४ ।।

हिरदय में हरिहर हीरामन परखें जौहर संत रतन । प्रीति का पारस पास में अलख लालका करें भजन ।। बोधके वस्तर पहने तन पर नये नये सजके भूषनायशका जामा पहर के कुंज कुंज में फिरें मगन ।। पुण्य पोट की फेंट लगाई वासा रखते तेरी पवन । तेज तत्व का तामड़ा झलकें जैसे दिव्य अगन। मुक्त की माला अमोल दाने परमहंस पहिरे सज्जन। प्रीतिका पारस पास में अलख लाल का करें भजन ।।१।। जपता हूँ मैं नाम उसी का सत्य शब्द का गहि सुमिरन । सादा दिल था खरीदा सद्‌गुरु सबजा शुद्ध वरन ।। तुरिया पद को यतु मुरली श्याम श्याम के गहे चरन । लगन लाड़िलो मिलि गये मोर मुकुट वाले को शरन ।। लौ का लाल लसुनियाँ पाया कहा ये हमने सत्य वचन । प्रीति का पारस पास में अलख लाल का करें भजन ।।२।। हरी नाम का अकीक इसका बयान करना बहुत कठिन । बुरे काम से बाज आगमन रूप मूंगे को पहिन । ऐसा रस मत छोड़ो साधो राधावर हैं शिरे रतन ।

मती बिसारो नाम शुभ लक्षण का पहिरो लटकन । शुम्बिश नहीं खाते हैं सन्त चित चुन्नी को करके धारन । प्रीति का पारस पास में अलख लाल का करे भजन ।।३।। परमारथ का पहिन के पन्ना जीति लिए अब तीनों पन । कोई कहै कुछ भी अपना मेरा तो है वही वतन । कहूँ मार अपने मन को अब पहिर जमुर्रद जस जीवन । देवीसिंह ये कहैं कहूँ ख्याल दुसमानी नया चलन । मैंने तो अब लखा है मन में मुक्त रूप मोती भगवन । प्रीति का पारस पास में अलख लाल का करें भजन ।।४।।

त्रिलोकी है जिह्वा पर सब और किसी से काम नहीं । कोटि जन्म तक कभी जो भूले शिव का नाम नहीं ।। इसी जिह्वा पर गंगा यमुना सरस्वती की है धारा । जिह्वा पर रचाया तीन लोक का पसारा ।। ब्रह्मा विष्णु महेश ने अब जिब्वा पर आसन मारा । चाँद और सूरज रहें इस जिह्वा पर नव लख तारा ।। नारायण गोविन्द शब्द जिसने जिह्वा से उच्चारा । उसी के तांई हुआ मालूम हाल घट का सारा ।। चार धाम हैं इस जिब्वा पर जिब्वा सा कोई धाम नहीं । कोटि जन्म तक कभी जो भूले शिव का नाम नहीं।।१।।हीरे मोती लाल औ पारस जिब्वा पर अकसीर बसे । दई देवते इसी जिब्वा पर पाँचों पीर बसे ।। नौ नाथ चौरी सिद्ध जिब्वा पर इसमें वामन वीर बसे । ऋषि मुनि सब इस जिब्वा में साधु फकीर बसे ।। भरत शत्रुहन हनूमानजो जिब्वा में रघुवीर बसे । समुद्र सातो इसी जिब्वा पर अमृत नीर बसे ।। रामचन्द्र हैं इस जिब्वा पर और कहीं आराम नहीं । कोटिजन्म तक कभी जो भूले शिव का नाम नहीं ।।२।। चार बेद षटशास्त्र

अठारह पुराण जिह्वा के भीतर । सात द्वीप हैं औ चौदह भुवन रत्न चौदह सुन्दर ।। जब जिह्वा से कहा तो आई श्री गंगाहरदास के घर । अजामिल ने कहा नारायण सुखसे गया वो तर ।। और कहीं नहीं है प्यारे जो कुछ है सो जिह्वा पर । इस जिह्वा पर गायत्री पार्वती शंकर हरहर । आठयाम हैं इस जिह्बा पर जिह्वा सा कोई याम नहीं । कोटि जन्म तक कभी जो भूले हर का नाम नहीं ।।२।। श्रीकृष्ण ने इस जिह्वा पर तीन लोक को दिखलाया । देखके अर्जुन रूपको अपने मनमें घबराया। हाथ बाँधिके अस्तुति करता सब कुछ है तेरी माया । अभेद है तू तेरा तो भेद किसीने नहिं पाया । जो कोई पूछे भेद किसी का उसे भेद कुछ नहिं आया । कहें देवीसिंह ज्ञान विज्ञान मेरे मन में भाया ।। बनारसी कहै राम राम रट भूलै सुबह और शाम नहीं । कोटि जन्म तक कभी जो भूले शिव का नाम नहीं ।। ४ ।।

श्रीकृष्ण गोपाल गोकुलानन्दन गुरु गिरवरधारी।गोधी गोचर ज्ञान विज्ञान आत्मा अवतारी । पूरणब्रह्म अखण्ड सच्चिदानन्द सदा आनन्द करें । काल को जीते और जंजाल पाप सब बन्द करें ।। दुष्टों को हनहन के मारें राक्षस की मतिमंद करें ।। भावभक्त को देंय और सन्तों को निर्द्वन्द करें ।। बेदशास्त्र गीता को गावें और नये नये छन्द करें । मुखधर मुरली बजावें स्तुति उनकी नन्द करें । मातु यशोदा करें आरती ध्यान करें नित त्रिपुरारी । गोधीगोचर ज्ञान विज्ञानआत्माअवतारी।।१।।मोरमुकुटमकराकृतकुण्डल-कंठ कौस्तुभमणी लसै । उर में मुक्तमाल और कटि पीताम्बर पीत कसे । श्यामगात छवि स्वरूप सुन्दर सन्तों के हिरदय

मेंबसे।चरणमेंझलके वो सुन्दरपद्मपद्मिनी देखहँसे।सबदुख दूरहोंय उनके जो हरिकी भक्ति माहिं धसे।गोविन्द गोविन्द कहै जो उन्हें न काला काल डसे। परम हंस सब करें अस्तुति ब्रह्म ब्रह्म कहें ब्रह्मचारी। गोधी गोचर ज्ञान विज्ञान आत्मा अवतारी ।।२।। नारायण वोही सत्य नारायण अनेक रूप अनंत नयन। मोहिनी मूरति मोहै मन को हँस बोले मधुर बयन। शेषनाग की शय्या करें क्षीरसिंधु में हरी शयन। ब्रज में प्रकटे चराई नन्दबाबा की कामधयन। वृन्दा-वनमें रहस रचाया उजयाली खिल रही रयन। सब सखियन को साथ ले उनके संग में करें चयन ।। जितनी ग्वालिन खड़ी रहस में उतनेही बनगये बनबारी। गोधी गोचर ज्ञान विज्ञान आत्मा अवतारी ।।३।। मीन कूर्म बाराह कहीं नर-सिंह रूप हरीने धारा। बामन बन के छला बलि इन्द्र को राज्य दिया सारा ।। परशुराम हो क्षत्रिय जीते सहस्त्रवाहु को संहारा। राम रूप धरि छेद रावण को एक पलमें मारा।। कृष्ण रूप सोलहों कला बल पण्डों का किया निस्तारा। बनाई गीता इसी से दुर्योधन का दल हारा। बोध रूप धर बने हैं बौद्ध निष्कलंक की तैयारी। गोधी गोचर ज्ञानविज्ञान आत्मा अवतारी ।।४।। अपार माया अलखलखी नहीं जाय कृष्ण अवतारी की। कवी क्या वर्णन करे जो महिमा बनी मुरारी की। सहस्त्रमुख से रटैं शेष नहीं पावै थाह बिहारी की।बालरूप धरि कामना वसुदेवकी सारीको।रखी देवकी की लज्जा कंसा को मार बहुभारी की। कहैं देवीसिंह प्रभू अब हमने शरण तुम्हारो की। बनारसी जै जै करता ब्रह्मा ने अस्तुति उच्चारी।गोधी गोचर ज्ञान विज्ञान आत्मा अवतारो

विश्वरूप खिल रहा बाग में जिसमें आदमी की गुल-जारी। रंग रंग के फूल हैं तरह तरह की फुलवारी ।। पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण ये चारों दीवार बनी ।। हर एक तरफ से नदियों की छूटी है जो नहर घनी। सात सिन्धु सोई तालाब सातों सबका मालिक वही धनी ।। चाहै बनावै चाहै एक पल में करदे फनाफनी। विश्व बाग का मालिक है वही श्री कृष्ण गिरिवरधारी ।। रंग २ के फूल हैं तरह तरह की फुलवारी ।।१।। नव खण्डों के महल बनाये दशों दिशा के दशद्वारे। त्यार किये हैं बागमें चौदह भुवन न्यारे न्यारे ।। आसमान की छत्त लगाई जिसमें जड़ दिये हैं तारे ।। गरज गरज घन करे छिड़काव छोड़ते फब्बारे ।। चाँद और सूरज चारों तरफ की करते हैं चौकीदारी। रंग रंग के फूल हैं तरह तरह की फुलवारी ।।२।। चमत्कार का चमन लगाया परब्रह्म ने आपहि आप। हर जरे में झलकता हरशय में वही रहा है ब्याप ।। इसी बाग के भीतर बैठे ऋषी मुनी सब करते जाप। कोई गावके भजन और कोई रहे पंचग्नी ताप। साधूसन्त करे सैर बाग में परमहंस औ ब्रह्मचारी। रंग रंग के फूल हैं तरह तरह की फुलवारी ।।३।। तोते मैंना लाल हंस सब सैर बाग की करते हैं। जो नर हरहर रटें वह नहिं जन्में नहिं मरते हैं ।। देवीसिंह ये कहै ध्यान जो उस मालिक का धरते हैं। भवसागर के पार वह सहजहि जाय उतरते हैं। बाग जहाँ के बीच में उनके कुदरत की फैली क्यारी। रंग रंग के फूल हैं तरह तरह की फुलवारी ।। ४ ।।

यह काया है कल्पवृक्ष तीनों गुण की तीनों डालो। हर एक फल है इसी में हरीनाम की हरियालो ।। प्रेम प्रीत के

पत्र लगे और परस्वारथ के फूले फूल । उन फूलों में कोई नहीं कांटा है और कोई न शूल ॥ शील सत्य की शाखा है आनन्द रूप कहैं जिसका मूल । मोर हंस सब और तोते मैंना उसमें रहे हैं भूल ॥ कल्पवृक्ष काया को सीचें निराकार निर्गुण मालो । हर एक फल हैं इसी में हरीनाम की हरियाली ॥१॥ समहष्टी की सुगन्ध सुन्दर परम तत्व की चले पवन । छमा की छायामें बैठे सन्त हरी का करैं भजन ॥ छवि रूपी है छाल वृक्ष में बैठे बोले हीरा मन । ब्रह्मवीर्य्य से हुआ उत्पन्न किया यह सत्य मथन ॥ सब शाखा हैं भरी फूलसे कोई डाल नहीं है खाली । हर एक फल हैं इसीमें हरी नामकी हरियाली ॥२॥सरजोवन जल भरा वृक्षमें हरीहरी कर हुआ हरा । नखसे शिखलौं वृक्ष यह भावभक्तिसे रहै भरा॥ कल्पवृक्ष काया में बैठ के जिसने उसका भजन करा । अजर अमर वह हुआ और भवसागर में सहज तरा ॥ रंग रंग के बने जाल और तरह तरह की हैं जाली । हरएक फल हैं इसीमें हरी नाम की हरियाली॥३॥ मुक्तरूप फल लगे वृक्ष में भजन करै सोई पावै । जन्ममरण से होवे वह रहित नहीं आवे जावे ॥ राम राम रस भरा फलों में जो कि राम सों लव लावे । कहैं देवीसिंह होय वह अमर नहीं मरने पावै । कल्पवृक्ष काया का है वह निराकार निर्गुण मालो । हर एक फल हैं इसोमें हरी नाम की हरियालो ॥ ४ ॥

अमरनाथ ने अमर कथा जब कही सुनी थी पारवती । उत्तराखण्डमें लगा आसनबैठेकैलाशपती॥अविनाशीकैलाशी काशी उत्तराखण्ड में बसाई । बैठ गुफा में गौरी को अमर कथा जब सुनाई ।। अमृतबाणी सुनी उमा के नेत्रमें निद्रा

भरि आई । वही कथा फिर एक तोतेके बच्चेनै सुनि पाई । दिया हुँकारा शिवजी को शिव कहैं अर्थ कर समुझाई । सुआ सुनता था और वहीं सोती थीं गौरा माई । परब्रह्म का खेल हुआ पर उस तोते को बढ़ो रती । उत्तराखण्ड में लगा आसन बैठे कैलाशपति ॥१॥ हुई कथा सम्पूरण शिवने पार्वती को बोलाया । उठी गौरिजा कह शिव मैंने कुछ नहिं सुन पाया॥ फिर शिवजी ने कहा हुँकारा किसने मुझको सुनाया । और तीसरा यहाँ पर कौन विधि करके आया ॥ चढ़ा क्रोध शिव शंकरको करसे त्रिशूलको उठाया । उसीवक्त फिर वह तोते का बच्चा उठके धाया ॥ दौड़े शिव उसके पीछे वह निकल गया सुमतमती । उत्तराखण्ड में लगा आसन बैठे कैलाशपती ।२। तीनलोकमें उड़ावह तोताकहीं मिलानहीं ठिकाना।उड़तेउड़ते बहुतसा अपने मनमें घबड़ाना॥ पतिव्रता थी खड़ी करे स्नान उसी को पहिचाना । दौड़ के तोता जाय फिर उसके मुखमें सामाना ॥ वहाँ किसी का जोर चले नहीं क्यों पर हो उसका पाना । फिर शिवजी ने दिया वरदान कहा ये है स्याना । वही हुए शुकदेव व्यास के पुत्र बड़े भये यती सती ।उत्तराखण्ड में लगा आसन बैठे कैलाशपति ॥३॥ अमर कथा का बड़ा महातम है जो कोई सुनने जावे । श्रवण किये से होय वह अमर नहीं मरने पावे ॥ चार वेद षट्शास्त्र अठारह पुराण सब इसमें आवें । अमर कथा को आप शुकदेव सदा मुखसे गावें ॥ वह पण्डित हैं बड़े कि जो कोई अमर कथा को सुनावें । और दूसरे बोल नहीं कछु मेरे मन में भावें । जिस दिन शिव ने कही कथा थी कौन बार तिथि कौन हती। उत्तराखण्ड में लगा आसन बैठे कैलाशपति ॥ ४ ॥

योगी साधें योग योगमें काया को है खेद बड़ा । हमने जाना योग से वियोग का है भेद बड़ा ।। योग किया रावणने योगी बन सीता माता हरलाया । रामचन्द्र ने किया वियोग बड़ा एक यश पाया । योग किया हिरण्यकशिपु ने प्रहलाद भक्तको डरपाया। वियोग करके बने नरसिंह दुष्टको गिरराया।। योग किया भस्मासुरने शिवशंकर को अति सत्ताया। वियोग करके विष्णु ने उसे भस्मकर जल्लाया । योगी पढ़ते योग शास्त्र वियोग का है भेद बड़ा। हमने जाना योगसे वियोग का है भेद बड़ा ।।१।। योगी बनके चला जलन्धर हरसे युद्ध कीना भारा । वियोग करके हरीने छली जलन्धर की दारा।। उसका योग घटगया पकड़के शिवने दुष्टोंको संहारा । इसी से कहते योगसे वियोग का रस्ता न्यारा।। योग किया कंसा ने भाग श्रीकृष्णको बीचारा। वियोग करके कृष्ण ने केश पकड़ उसको मारा।। योगी करते योग विधीसे वियोग का है विषेध बड़ा । हमने जाना योग से वियोका है भेद बड़ा ।।२।। योग करन की श्रीकृष्णने सखियों को भेजी पाती । कहतीं सखियाँ ऊधो यह बात नहीं मन में भाती ।। योगी धारें भस्म हमने वियोग में जाली छाती । योगी मद को पीवें हम वियोगमें हैं मदमाती ।। योगी बांधे सेहला हमने वियोग की बाँधी गाती । जाय के ऊधो कृष्ण से कहो यह सखियां समझाती । वियोगी बेधे हीया योगी तो काममें करते बड़ा । हमने जाना योग से वियोग का है भेद बड़ा ।।३।। योगी कहते ज्ञान वियोग फिरें इश्कमें दीवाने। वियोग जिसको न हो वह योग के रस्ता क्या जाने । योगी तो जंगल में बैठे चढ़ावते अपना प्राने । वियोग करके वियोगी घट में आतम पहिचाने ।।

योगी के शिर जटा वियोगी शिरसे पर हैं मस्ताने । कहैं देवीसिंह योगी से वियोगी हैगे सय्याने । बनारसीने वियोग साधा योग में देखा खेद बड़ा । हमने जाना योग से वियोग का है भेद बड़ा ।। ४ ।।

गंगालहर–बहेर खड़ी

ब्रह्मा रचते सृष्टि पालना विष्णु करें शिव संहारें । धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियोंको तारें । गणेशजी विद्या का वर दें बुद्धि बुद्धि का दान करें । सूर्य तेज देवे शरीर में जगमें सब सम्मान करें । शीतलताई देवें चन्द्रमा सतगुण का परधान करें ।। हनुमानजी चाहें तो एक पल भर में बलवान करें ।। भैंरोंजी भयहरैं डरैं नहिं दुर्जन को पल में मारैं। धन्यधन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियोंको तारैं।।१।। इन्द्र का सुमिरन करे तो पावे सुन्दर सी अवला नारी। दुर्वासाजी पवन अहारी कामी को करें ब्रह्मचारी ।। कुबेर के हैं भक्त जो वह तो बड़े बड़े माया धारी । धर्मराजजी धर्म बतावें जो हैं उनके हितकारी ।। शेषजी अपने सहस्त्र मुखसे नये नाम नित उच्चारैं । धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियों को तारें।।२।। तनुका रोग दूर कर देते बड़े वैद्य अश्विनी कुमार । वेदव्यास पुराण के मुनि हैं वेद का निशिदिन करें विचार।। बालपनेसे त्याग बचावै सनक सनन्दन सनतकुमार। करो शनैश्चर का पूजन तो सकल विपद को देवें टार। जितने देवते हैंगे सो तो गुरु वृहस्पति को धारें । धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियों को तारें ।। ३।। तेंतीस कोट देवते सब अपना अपना देते हैं फल । अति प्रसन्न होते हैं उनपै जब चढ़ता है गंगाजल ।। देवीसिंह यह कहैं न भूलूं मैं श्रीगंगा को यकपल। सबसे ऊँचे शिवजी उनके शीशके ऊपर गंग अचल । बनारसी

के अधम पाप को धोवें गंगा की धारें। धन्य धन्य श्रीगंगाजी जो अधम पापियों को तारें ॥ ४ ॥

सिवा कृष्ण महाराज के मेरा बाबा भैया कोई नहीं। वही प्रभु है मेरा और अपना भैया कोई नहीं॥ यह संसार अपार है इसका पार करैया कोई नहीं। सिवा कृष्णके जन्म और मरण छुड़ैया कोई नहीं ॥ लाखों मूरती हैं पर ऐसा कुँवर कन्हैया कोई नहीं। विश्वरूपका जगतमें और दिखैया कोई नहीं ॥ १ ॥

शैर—महाभारत में उठाया वो रथ का पैया है। बिना हथियार लड़ा ऐसा वह लड़ैया है। बना अर्जुनका सारथि वह रथ हँकैया है। मेरा मन रातो दिन उसी की ले वलैया है॥ बडे बडे पापियों का ऐसा पाप छुडैया कोई नहीं। वही प्रभु है मेरा और जगत् में भैया कोई नहीं॥ २ ॥ दरिद्र को देवे धन ऐसा तो दिवैया कोई नहीं। कहै सुदामा ऐसा भण्डार भरैया कोई नहीं ॥ नख पर गिरवर धारा ऐसा गिरिका उठैया कोई नहीं। बूढ़त ब्रजको राखा ऐसा तो रखैया कोई नहीं ॥२॥

शैर—रमा सबमें वोही ऐसा वह रमैया है। बिना कानों से सुने ऐसा वह सुनैया है। फक्त वह अपने ही एक नामका रखैया है। यह जगत रातो दिन उसकी दे दुहैया है। इन्द्र के मान को मारा ऐसा गर्व गिरैया कोई नहीं ॥ वही प्रभु मेरा और जगत् में भैया कोई नहीं ॥ ३ ॥ सब ग्वालों से पूंछो ऐसा गाय चरैया कोई नहीं। माखन मिसरी का उनके सिवा खवैया कोई नहीं ॥ गोपी भी कहै मोहन ऐसा दही चुरैया कोई नहीं। मानक मटकी को तोड़े

ऐसा तुड़ैया कोई नहीं ॥३॥

शैर—लोग कहते हैं यशोदा भी उसकी मैया है। वह तो अलख है न उसका कोई लखैया है ॥ वेद वेदान्त का वही तो खुद बनैया है ॥ और उसके अर्थ का आपी वह लगैया है। मुझे है रटना उसके नाम की ऐसा रटैया कोई नहीं ॥ वही प्रभु है मेरा और जगत में भैया कोई नहीं ॥४॥ लूट लिया गोपियों का यौवन ऐसा लुटैया कोई नहीं। माँग्यो दधि को दान ऐसा तो मँगैया कोई नहीं। देवीसिंह कहैं बनारसी सा ख्याल रचैया कोई नहीं। अजब कहन है प्रेम की ऐसा तो कन्हैया कोई नहीं ॥४॥

शैर—मेरा दिल साफ किया ऐसा वह धुलैया है। दुई को भूल गया ऐसा वह भुलैया है। बसी है दिलमें मेरे मन का बसय्या है। मेरा मन उसके भजन का बना गवैया है। अपनी आत्मा देखूं निश दिन ऐसा दिखैया कोई नहीं ॥ वही प्रभु है मेरा और जगत् में भैया कोई नहीं ॥५॥

लावनी पापनाशिनी-बहेर लंगड़ी

रामकृष्ण का सुमिरन करने से पातक सब धुल जाते हैं। धन्य वह नर है कि जो कोई रामकृष्ण गुण गाते हैं। मैंने पाप किये बहुतेरे जिसका कुछ नहीं आदि और अन्त। विषय वासना में डूबा है झूँठ मूंठ कहलाया सन्त। काम क्रोध मद लोभ मोह यह पाँचों मेरे बने महन्त। इन्हीं के वश में रहा सद्गुरु की कुछ नहीं पढ़ी पढ़न्त। युवा अवस्था में नहिं समझे बृद्ध भये पछताते हैं। धन्य वह नर हैं कि जो कोई राम कृष्ण गुण गाते हैं ॥१॥ माता पिता का कहा न माना पढ़ा न पिंगुल वेद पुरान। बना कवी-

श्वर औ मैंने दग्ध छन्द किये बहुत बखान।। मैंने कहा मैं परमेश्वर हूँ ऐसा मुझे व्यापा अभिमान। सत्य न बोला उम्र भर बका बहुत सा झूठ तूफान।। धन पाया तो धर्म किया नहीं भीख माँग अब खाते हैं। धन्य वह नर हैं कि जो कोई राम कृष्ण गुण गाते हैं ।।२।। ब्रह्महत्या या बालहत्या या करे जो कोई गोहत्या।। राम भजन से दूर हो जाय नहीं फिर हो हत्या।। मैंने जीव बहुत से मारे लगींजो वह मुझ को हत्या। कृष्ण कहे से भस्म हो गई करी जो जो हत्या। अपना बीता हाल सुनो हम सब को सत्य सुनाते हैं। धन्य वो नर हैं कि जो कोई राम कृष्ण गुण गाते हैं ।। ३ ।। सब अपराध क्षमाकर मेरे राम कृष्णजी बारम्बार। तुम हो दयानिधि दया करके करदो मेरा उद्धार। अधम पापियों को तारा अब मुझको भी तुम दीजे तार। आगे मरजी आपकी जो चाहें करिये करतार ।। अब मुझसे कछु बन नहीं पड़ता आपका भजन बनाते हैं। धन्य वह नर हैं कि जो कोई राम कृष्ण गुण गाते हैं ।।४।। जो जो पाप किये मैंने प्रभु तुम जानो या जाने हम। और, कोई क्या जानता किसके आगे करूँ करम।। किये पाप देवीसिंहने तरगये वो अपना करा कलम। श्रीगंगा के तीर तनु त्यागा जाने कुल आलम।। बनारसी कहे हम भी तो उनके मुरीद कहलाते हैं। धन्य वह नर हैं कि जो कोई राम कृष्ण गुण गाते हैं। ५।

लावनी विभूती योग-बहेर लंगड़ी

राम कृष्ण महाराज मेरे अब अन्तर्यामी तुम्हीं तो हो। विश्व के कर्त्ता और इस जगत के स्वामी तुम्हीं तो हो। कंसा छेदन कौरव मारन पाँडव तारन तुम्हीं तो हो।

नरसिंह बन दुष्ट का उदर बिदारन तुम्हीं तो हो। बूडत ब्रज को राख लियो गोवर्द्धन धारन तुम्हीं तो हो। गज को उवारन ग्राह के मारन कारन तुम्हीं तो हो ।।

शैर—तुम्हीं सर्वज्ञ हो और सबसे तो न्यारे हो तुम्हीं। जो कोई भगत हैं उसके भी तो प्यारे हो तुम्हीं।। मेरे अपराध क्षमा करके मुझे तारो तुम। मैं हूँ सेवक और स्वामी तो हमारे हो तुम्हीं।तुम्हींतो वृन्दावनके वसैया गोकुल ग्रामी तुम्हीं तो हो।। वो विश्व के कर्त्ता और इस जगत के स्वामी तुम्हीं तो हो ।।१।। दैत्यों में प्रहलाद और सिद्धों में कपिल मुनि तुम्हीं तो हो। चार वेद में श्याम की सुनी अजब ध्वनी तुम्हीं तो हो ।।अक्षर में हो मकार और सुन्नों में महासुन तुम्हीं तो हो। और पाँडव में धनुषधारी वह अर्जुन तुम्हीं तो हो ।।

शैर—दशों इन्द्री में जो देखा तो यह मन आपही हैं। पवित्र करने में देखा तो पवन आपही हैं। अधम के तारने को आप बने परमेश्वर। मैंने जाना कि वह तारन तरन आप ही हैं।। अनन्त हैंगे नाम आपके ऐसे नामी तुम्हीं तो हो। बिश्व के कर्त्ता और इस जगत के स्वामी तुम्हीं तो हो ।।२।। वीरों में जो महावीर रुद्रों में शंकर तुम्हीं तो हो। और कवियों में वो शुक्राचार्य कवीश्वर तुम्हीं तो हो।। ज्योति में हो सूर्य अवतारों में शशि सुन्दर तुम्हीं तो हो। ताँत्रिक मत में श्रीबलदाऊजी हलधर तुम्हीं तो हो ।।

शैर—ज्ञानवानों में तो वह ब्रह्मज्ञान आपही हैं। ध्यान करने में वो योगी का ध्यान आपही हैं।। नरों के बीच में राजा हो तुम्हीं चक्रवर्ती। पुण्य करने में तो ज्ञान दान

आप ही हैं ॥ सबकी कामना पूरण करते ऐसे कामी तुम्हीं तो हो। विश्व के कर्ता और इस जगत के स्वामी तुम्हीं तो हो ॥ ३ ॥ देवऋषि में नारद और गुरुओंमें बृहस्पति तुम्हीं तो हो। वाक्‌वाणो में कीर्ति और सरस्वती तुम्हीं तो हो। वृक्षों में पीपल हो पत्रों में वह बेलपती तुम्हीं तो हो। अधम का करते आप उद्धार वह गति तुम्हीं तो हो।

शैर–सकार में तुम्हें देखा तो विश्वरूप हो तुम। जहाँ सुन्दर है कोई उसका भी स्वरूप हो तुम॥ कहाँ लौं आपकी महिमा को देबीसिंह कहे। सगुण में रूप हो निर्गुण में तो अरूप हो तुम॥ बनारसी कहें वासुदेव वसुधा अभिरामी तुम्हीं तो हो। विश्व के कर्त्ता और इस जगत के स्वामी तुम्हीं तो हो ॥ ४ ॥

लावनी श्री अञ्जनीजी की स्तुति-बहेर लंगड़ी

आदि कुवाँरी मात अञ्जनी जो चाहै सो तू भर दे। जय श्रीदुर्गे अटल भण्डार मेरा अब तू भर दे ॥ जो मेरे शत्रु हैं उनका एक पल भर में क्षय करदे। तीन लोक में तू माता साधु सन्त की जय करदे ॥ तू है कालिका काल काल को काल से भी निर्भय करदे। जो तू ब्रह्म है तो अपने बीच में मुझको लय करदे। और न कुछ तुझसे माँगूँ तू जो चाहे मुझको वर दे। जय श्री दुर्गे अटल भण्डार मेरा अब तू भरदे। अद्भुत तेरा ध्यान है अब उसको मेरे मन में करदे। सकल वीर का जोर माता मेरे तनु में करदे ॥ सब दुष्टों को संहारूँ ऐसा तू मुझे रण में करदे। कभी न भूलूँ मुझे हुशियार तू हरफन में करदे ॥ निर्भय होकर विचरूँ निशिदिन कभी नहीं मुझको डर दे। जय श्रीदुर्गे अटल

भण्डार मेरा अब तू भरदे॥ जो कुछ इस जिह्वा से निकले सिद्ध मेरी वाणी करदे। शरणागत हूँ तेरी अब दया तू महारानी करदे ॥ जल को तू अग्नि करदे और अग्नि को पानी करदे। तू जो चाहे तो एक दमभर में फनाफनी कर दे ॥ काट काट दुष्टों के शिर को अपने खप्पर में धर दे। जय श्रीदुर्गे अटल भण्डार मेरा अब तू भर दे ॥ सब कुछ तेरे हाथ में है जो भावै सो मुझको तू दे। चित्त में तेरे मात जो आवै सो मुझको तू दे। जो वस्तु नहीं मेरे हाथ से जावै सो मुझको तू दे। ये जिह्वा जो तेरा गुण गावे सो मुझको तू दे। कभी न खालीहाथ रहूँ माता मुझको इतना जर दे। जय श्रीदुर्गे अटल भंडार मेरा अब तू भरदे॥ जो तू अपनी कृपा करे माता मुझको ऐसा यश दे। ब्रह्मज्ञानका मेरी इस रसना के ऊपर रसदे। देवीसिंहके सब वश में होवें उनको ऐसा यश दे। गाय और कुत्ते जो कोई हनें उन्हें तू अपयश दे॥ बनारसी को श्री माता दरबार तू वह अमृत सर दे। श्रीदुर्गे अटल भण्डार मेरा अब तू भर दे।

लावनी बहरजी की-शापमोचन

दुर्वासाजीका तो शाप होगया वह उन्हें अशीश। तर गये यादव विश्वे बीसजी ॥ तीर्थ के ऊपर आये यादव करनेको स्नान। वहाँ मचगया युद्ध घमासानजी। आपस में सब लड़े कटे देखते रहे भगवान। आया फिर सबके लिये विमानजी। अपना भी तनु त्यागा हरि ने किया न कुछ अरमान। धरौ तुम श्रीकृष्ण का ध्यानजी ॥ सारे कुल को तार दिया कोई करै क्या उनकी रीस। तर गये यादव विश्वे बीसजी ॥ १ ॥ यादव तो सब स्वर्ग गये, परम

धाम हरि आप ॥ वोही सर्वज्ञ रहे हैं व्यापजी । भार उतारा
पृथ्वी का सब दूर किया संताप ॥ न उनका पुण्य न उनको
पापजी ॥ आशीश करके माना प्रभु ने दुर्वासा का शाप ।
जपो सब नारायण का जापजी ॥ वेद शास्त्र यह कहें वहीं थे
नारायण जगदीश ॥ तर गये यादव विश्वे बीसजी ॥२॥
युद्धमें मरना बड़ा धर्म है यह क्षत्री का काम । इसी से मच
वहाँ संग्रामजी । मृत्युलोकको तजा मिला वह स्वर्गका उत्तम
धाम ॥ यहाँ से वहाँ है बड़ा आरामजी ॥ मौत से जो सब
मरते तो फिर हो जाते बदनाम । युद्धमें मरेतो पाया नाम
जी ॥ इस कारण श्रीकृष्णने अपने कुल का कटाया शोश ॥
तर गये यादव विश्वे बीसजी ॥३॥ अब तो भार बढ़ा पृथ्वी
पर चारों तरफ है काल ॥ सूख गये नद्दी नाले तालजी ॥
कोयलोंकी खान बहुत सी गुप्त होगये लाल ॥ नोटने लूट
लिया धन मालजी ॥ देवीसिंह कहें बनारसी से जपो नाम
गोपाल ॥ देखिये कब प्रकटें नंदलालजी ॥ दुरवासा और
श्रीकृष्ण यह दोनों एक थे ईश ॥ तर गये यादव विश्वे
बीसजी ॥४॥

वन काया में मन मृग चारों तरफ चौकड़ी भरता है ॥
बिना पैर से दौड़ता बिन मुख चारा चरता है । बिना नेत्रसे
देखे सबको बिना दाँत दाना खावै। सब कहीं जावै और यह
कहीं नहीं आवै जावै । बिन जिह्वासे बात करै और बिनाकंठ
गाना गावै ॥ बिना सींग से लड़े और बड़े बड़े दल हटावै॥
बहुत सिंह डरते इससे ये किसी से भी नहीं डरता है । बिना
पैर से दौड़ता बिन मुख चारा चरता है ॥ १ ॥ बिन खुर
खोदे सकल जगत को ऐसा यह मदमाता है । बिन इन्द्री से

भोग करत है यही यती कहलाता है । नहीं इसके कोई
तातमात नहीं कुटुम्ब कबीला नाता है । आपोपैदा होय वो
आपी में आप समाता है सब रंगोंसे न्यारा है और हर एक
रूप को धरता है । बिना पैर से दौड़ता बिन मुख चारा
चरता है ॥२॥ बिना जीवका माँस खाय ये किसी को भी
नहिं मारे है ॥ जिसको मारे एक पलभर में उसे सुधारे है ॥
बिना कान से सुनता सबकी जो कोई उसे पुकारे है । ऐसे
ज्ञान को कोई भी साधू संत विचारे है । तीनों लोकमें फिरता
यह मृग भवसागर में तिरता है । बिना पैर से दौड़ता बिन
मुख चारा चरता है ॥३॥ बिना नासिका लेवै वासना हर
एक चीज की खुशबोई । आपी आप है अकेला और न इसके
संग कोई। देवीसिंह कहें कि जिसने बुद्धि निर्मल कर धोई ॥
अपनी आतमा इस मृग को जाने सोई । बनारसी ने देखा
यह मृग नहिं जन्मे नहिं मरता है ॥ बिना पैर से दौड़ता
बिनमुख चारा चरता है ॥ ४ ॥

लावनी सुदामा चरित्र-वहेर छोटी

श्रीकृष्ण ने देखा आये मित्र सुदामा । कर जोड़ खड़े
हो गये वसुधा अभिरामा ॥ नंगे पैरों तनु दुर्बल वस्त्र
मलीना । कुछ शोच न कियो लगाय कण्ठसे लीना । अँसुवन
जलसे प्रभु सींचते चरण प्रवीना ॥ विनती करके हरि बोले
वचन अधीना ॥ इतने दिन तुम कहाँ रहे कहो क्या कीना ॥
दुःख को सुख समझे धन्य तुम्हारा जीना । तुमने पवित्र यह
किया मेरो सब ग्रामा । कर जोड़ खड़े हो गये बसुधा
अभिरामा ॥ १ ॥

उबटन करके गंगा जलसे नहलाया । फिर रत्नसिंहा-

सन पर उनको बिठलाया ।। षट्रस भोजन अति प्रेम से उन्हें जिमाया। फिर कहा मुझे भावज ने क्या भिजवाया। लिये खोल वह तंदुल रुचि २ भोग लगाया । दो फंके मार दिखाई अपनी माया। तीसरी बार रुक्मिणीने करको थामा। कर जोड़ खड़े हो गये बसुधा अभिरामा ।।२।।

फिर लड़कैयाँ की सारी कही कहानी। वह करें बात और सुने रुक्मिणी रानी।। कहे रुक्मिणी यह हैं सखा तुम्हारे ज्ञानी। यह त्यागी भी हैं निर अभिमानी। इनके प्रताप से मिली तुम्हें रजधानी। सारी बसुधा मैंने इनहींकी जानी। कहैं कृष्ण रुक्मिणी धन्य है उनकी जामा। कर जोड़ खड़े होगये वसुधा अभिरामा।। ३ ।।

कहैं कृष्ण सखा तुम थके बाट के हारे। अब शयन करो यह बिछे हैं पलंग तुम्हारे।। फूलोंकी सेज फूलोंके तकिये न्यारे। भये मगन सुदामा उसपर आप पधारे। श्रीकृष्ण ने उनके चरण दबाये सारे ।। और अंग–अंग सब मला वह ऐसे प्यारे।। दिन भर उनकी सेवा की छोड़ और सब कामा ।। कर जोड़ खड़े हो गये बसुधा अभिरामा ।।४।।

जब साँझ भई तब मेवा और मिठाई। वह रत्न जड़ित थाली में आप लगाई। ले सुदामा के आगे यदुराई। जोरुचि होय तो खाव हमारे भाई। मैं कहाँ तलक आपकी करूँ बड़ाई। जिसने तुम्हें जाया धन्य तुम्हारी माई ।। मैं आठ पहर भूलों नहीं तुह्मारो नामा। कर जोड़ खड़े हो गये बसुधा अभिरामा।।५।।

फिर बुलाय के गंधर्व सुनाया गाना। वो हिंडोल मेघ मलार और राग शहाना ।। कहैं कृष्ण कोई से तुमभी बीन

बजाना ।। यह मित्र हमारे इनको खूब रिझाना। बजी सारंगी सहनाई और रवाना ।। कोई मूरख नहीं था सबी लोग थे दाना। कहैं कृष्ण सुदामा से तुम हो निःकामा। करजोर खड़े हो गये बसुधा अभिरामा ।। ६ ।।

फिर सोये सुदामा सुख से रैन गुजारी। भया भोर तौ लाये हरिकंचनकी झारी। मुख धोये सुदामाने यह विचारी। जो कृष्ण कुछ दे तो लज्जा भारी ।। वह अन्तर्यामी आप श्री गिरधारी। पहिले ही उनके घर भेज दी माया सारी। चलती बिरियाँ तो दियो न एकौ दामा। कर जोर खड़े हो गये वसुधा अभिरामा ।। ७ ।।

फिर चले सुदामा घर को नंगे पैयाँ। यह भया शकुन मिल गई राहमें गैयाँ। पानीभी बरसे और बादलकी छैयाँ। करें याद कृष्णकी और अपनी लड़कैयाँ। जो मुझे कृष्ण कुछ देते मेरे सैयाँ। तो बड़ी शर्म मुझे होतो मेरे गुसैयाँ। मुझे सब कुछ दियौ कियौ मुझे प्रणामा। कर जोर खड़े हो गये बसुधा अभिरामा ।। ८ ।।

फिर जाय सुदामा पहुँचे अपने घरको। नहीं मिली कुटी देखा कंचन मन्दिर को। नारी ने उनको देखा अपने वरको। कहा डरो नहीं तुम आ जावो भीतर को। वह आप उतर आई और पकड़ लिया करको। कहा सुनो पति तुम देख आये गिरधर को ।। फिर कहो द्वारिका की सब बात सुदामा। कर जोर खड़े हो गये वसुधा अभिरामा ।।९।।

जो इस चरित्र को सुने और कोई गावे। वह भुक्ति मुक्ति सम्पूर्ण पदारथ पावे।। जो प्रेम सहित भक्ति के छन्द बनावें। वह अन्तकाल में अमरलोकपुर पावे।। कहें देवीसिह

श्रीकृष्ण से जो लव लावे। सुन बनारसी वह आप में आप समावे। संपूर्ण सुदामा के हरि ने किये कामा। कर जोर खड़े हो गये बसुधा अभिरामा ॥ १० ॥

होली कृष्ण वियोग की विरहिन नायिका बहेर छोटी

गये कृष्ण द्वारिका अब मत होली गावो। सुनो सखी चल होली में आग लगावो। अँसुवन से भरकर नयन की पिचकारी। अब इसी रंग सों भिजा लो चूनर सारी ॥ रो रो के पुकारो कहाँ गये गिरधारी ॥ सब देखें अँखियां लाल गुलाल तिहारी। छाती को पीटकर बाजन वहीं बजावो ॥ सुनो सखी चल होली में आग लगावो ॥१॥ जिस विधि से सुलगें होली में अँगारे। उस विधि से छाती जले विरह के मारे। ऊधो माधोको लेकर कहाँ पधारे। और नन्दभीआये पलट कबो अपने द्वारे। फेंको अबीर अब शिर पर धूल उड़ावो। सुनो सखी चल होली में आग लगावो ॥२॥ बिन कृष्ण सखी को अपनी गाली खावैं। मोहन बिन सबको कण्ठ से कौन लगावे। हैं फूटे अपने भाग्य न फाग सुहावे। वो बेहया बेशरम जो होली गावैं ॥ ऐसी होली जल गई को और जलावो। सुनो सखी चल होली में आग लगावो ॥३॥ जो विधना ने कुछ लिखा सो होनीं होली। गये कृष्ण द्वारका मार विरह की गोली। मोहन बिन अब हम किससे करें ठठोली। किस विधि मनको समझावें भोली भोली ॥ कहे बनारसी अब ब्रज से फाग उड़ावो ॥ सुनो सखी चल होली में आग लगावो ॥४॥

लावनी रामकृत रामायण—बहेर लंगड़ी

इन्द्रजीत को कौन जीतता जो पै लषण नहिं होतेवीर।

महाबीर से कहैं यह बात श्रीपति श्रीरघुवीर ॥ रावण के घर में तो कोई नहीं इन्द्रजोत सा था बलवान। त्रिलोकी में कोई को मिला नहीं ऐसा वरदान। बारह बरस नहीं शयन करे नहीं करे जगत में खानो और पान। रहे जितेन्द्रिय कहैं यह रामचन्द्र सुन लो हनुमान ॥

शैर—लखन नहीं साथमें होते तो वह मारानहीं जाता। तो लंका से मैं सीता को अवध में किस विधि लाता ॥ बड़ी प्रारब्ध से मुझको मिले ऐसे मेरे भ्राता। यह जिसकी कोख में जन्मे वह इनकी धन्य है माता ॥ इन्द्रजीत को छेदन कर दिया श्रीलक्ष्मण के ऐसे तीर। महावीर से कहैं यह बात श्रीपति श्रीरघुवीर ॥ १ ॥ इन्द्रने रावण को बाँधा तो इन्द्रजीत ले गया छुड़ाय। बड़ा वलो था वह जिसके तेज से त्रिलोकी थर्राय। शक्तिबाण था पास में उनके काल देख जिसको भयखाय। धन्य यह लक्ष्मण के ऐसी चोट किसी से सही न जाय ॥

शैर—यह मेरेप्राण बीती जो इनकी मूर्छाआई। कहामैंने मिलेंगे किस विधि मुझको मेरे भाई ॥ मरेगा किस विधि रावण का सुत निश्चय वह दुखदाई। मैं इनके शोक में भूला जो कुछ भी मेरी प्रभुताई ॥ हाथ पाँव सब शिथिल होगये थमे नहिं नयनों से नीर। महावीर से कहैं यह बात श्रीपति श्रीरघुवीर ॥ २ ॥ कुम्भकर्ण रावण का मारना तुच्छ था सो मैंने मारा। मेघनाद के मारने में चला मेरा चारा ॥ ऐसा कोई नहीं बली था वह जिसको मैंने संहारा। इन्द्र जोत से इन्द्र भी लड़ा तो एक पल में हारा ॥

शैर—भरोसा था फक्त रावण को अपने सुत के तीरों

का। मरा जिस वक्त वह बल सब घट गया सबके शरीरों का ॥ हुआ तप क्षीण एक क्षण में वह सब रावण के वीरों का। मुकुट भी गिर पड़ा रावण के शिर से था जो हीरों का। पड़ा शोक रावण की लंका में कोई धरै नहीं मन में धीर। महावीर से कहैं यह बात श्रीपति श्रीरघुवीर ॥३॥ रामचंद्र यह कथा कहैं और हनूमान सुनते चितलाय। रोम रोम में वह उनके नाम राम का रहा समाय। श्रीलक्ष्मण के प्रताप से रावण को जीतें श्रीरघुराय। कहें देबीसिंह अब उसके अर्थ कोई क्या सके लगाय ॥

शैर—यह शोभा लक्ष्मणजी की बखानी राम ने आपी। और जो कुछ सामर्थ्य थी उनमें वह जानी राम ने आपी। करी स्तुति कही सुन्दर वह वाणी राम ने आपी ॥ वह जो थी बात लक्ष्मण को वह मानी राम ने आपी। बनारसी कहें इन्द्रजीतको हना लषन ऐसे रणधीर। महावीर से कहैं यह बात श्रीपति श्रीरघुवीर ॥४॥

होली निर्गुण—बहेर लँगड़ी

साधु सन्त खेलें होली निशिदिन अपनी आत्माके संग। भीज रहा है वह चोला उनका उस निर्गुण के रंग ॥ प्रेम की पिचकारी जिसको मारें उसका रंग लाल करें। एकदम-भर में वह तो कंगाल को मालामाल करें ॥ ज्ञान गुलाल से भरदें झोरी सब जग का प्रतिपाल करें। जन्म मरणका दूर इस दुनियाँ से जंजाल करें।

शैर—उन्हें कुछ काम न दुनियाँ की इस लड़ाई से। बुराई से भी न मतलब न कुछ भलाई से ॥ इन्हें कोई लाख गालियाँ दे तो वो कुछ न कहें। सदा वह हँसते रहें जगतकी हँसाई

से ॥ उनके साथमें खेलें होली श्रीगंगाजीकी ओ तरंग ॥ भीज रहा है वह चोला उनका उस निर्गुण के रंग ॥ १ ॥ सन्त तो हैं वे लोग किसीसे कभी नहीं रखते वह लाग। धन्य वह नर हैं जो कोई खेलें वह सतगुरु से फाग ॥ कभी नहीं सोवें निशि दिन वह ज्ञान रात्रि में रहे जाग। जिनके मन में प्रेम और प्रीति का है पूरण वैराग ॥

शैर—सदा वह रामकृष्णजी का भजन गाते हैं। दुरंगी छोड़ दी एक रंग में रंगराते हैं ॥ उन्हें कुछ इन्द्रकी पदवी से सरोकार नहीं। वह अपनी मस्ती में हैं मस्त और मदमाते है ॥ काम क्रोधका मार कुमकुमा करें वो अपने मन में जंग। भीज रहा है वह चोला उनका उस निर्गुण के रंग ॥ २ ॥ ब्रह्मा विष्णु महेष शेष सनकादिक सब लेलेके अबीर। खेलें होली वह निर्गुण संग साधु सन्तनकी भीर। ज्ञान में हैं मदमाते और रंगराते उनके शुद्ध शरीर। कबीर देखें वह होली कबीर भी फिर कहैं कबीर।

शैर—पहनके भक्ती के भूषणका वह शृंगार करें। गले निर्गुणके लगें ब्रह्मा का विचार करें ॥ ज्ञान की आग में वह कर्मकी होली दें जला। न पुण्य पाप से मतलब वह यह पुकार करें। जब जब जन्म धरें पृथ्वी पर तब तब उनकी यही उमंग भीज रहा है वह चोला उनका उस निर्गुण के रंग ॥ ३ ॥ दयाधर्म का खेल धुरैंहिरो होलीका उद्धार करें। ऐसे साधू जो हैं वह कभी न मारामार करें ॥ प्रहलाद ने खेली होली यह देवीसिंह पुकार करें। पूरे साधू जो हैं वह परमेश्वरको याद करें।

शैर—जो कोई योग से करता है भोग होली में। उसे होता न कभी कष्ट रोग होली में ॥ जो कोई मेरी यह होली

के अर्थ जानेगा। उसे होगा न कभी यारो सोग होली में। बनारसी ने ऐसी होली कही कि होलका होगई दंग । भीज रहा है वह चोला उनका उस निर्गुण के रंग ।।४।।

ख्याल गौरी रक्षा श्रीकृष्ण करें-बहेर छोटी

गोपा होतो सब गौवोंको पालो । दुष्टोंको मारौ तनिक न देखो भालो ।। यह तृण चुगलेवें अमृत दूध का देवें । यह सबको देवें कोईसे कुछनहिं लेवें। हैधन्य वह उनके भाग्यजो इनकोसेवें ।। उनकी नैया भवसागर मेंहरिखेवें ।सारेकसाईयों केअब घरको घालो ।। दुष्टोंकोमारो तनिक न देखोभालो।१

गये कितनेही युग बीत इन्हें दुख भारी। यह बिनागुनाह तकसीर है जाती भारी।।निश्चयकरदेखा यहसब महतारी । यह अर्ज मेरी अब सुनलीजै गिरधारी।।सारी पृथ्वीपरसे यह पाप उठालो । दुष्टोंको मारो तनिक न देखो भालो ।।२।।

हो कोई जात जो मास गाय का खावे । तो उसे वह मालिकदो जखमें पहुँचावे।।नहींकहींपर ऐसा लिखाजो मुझे दिखावे।वह बेईमान बदजातजो इन्हेंसतावे ।जो इनकोमारे उसे कत्लकरडालो। दुष्टोंको मारो तनिक न देखोभालो।३।

हैं बड़े वह उनके सींग न तनिक चलावें । जो जरा भी घुरका बहुतसा यह डरजावें। मातामरजाय फिर यहीतोदूध पिलावें।यह देवीसिंहऔर बनारसी सचगावें। गौवोंकेद्रोही को श्रीकालिकाखालो। दुष्टोंकोमारोतनिक नदेखोभालो।४।

बहेर-लंगड़ी

उधर राधिका सखियोंके संग इधर ग्वाललेकृष्णमुरार । खेलेंहोली परस्पर श्रीराधा और नंदकुमार ।। उधरतोकेसर का रंगबरसे और वह सुन्दर पड़े फुहार । इधर से चलते

कुमकुम दोऊ तरफों मारामार ।। उधर से राधा दौड़त आवें संगलिये सब ब्रज की नार । इधर झपटे कृष्ण संग ग्वाल बालक करें बहार ।।

शैर—उधरसे राधिका कृष्णजीको प्यार करें।इधरसे कृष्ण भी राधाके संग बिहार करें ।। वहहोली हो रही दोनोंतरफसे रंग भरी। गगन में देवते देखें तो ये विचार करें ।। इनकी महिमा लखी न जावै यह दोऊ हैं अपरम्पार । खेलें होली परस्पर श्रीराधा और नन्दकुमार ।।१।। उधर राधिका अद्भुत तनपर किये वह मणियों के शृंगार। इधर कृष्ण के शीश पर मोरमुकुट की लटक अपार ।। उधर भीज रही कुसुम सारी गले में वह मोतियन के हार । इधर पीतपट वह तर और वनमाला शोभित गुलजार ।।

शैर—उधर से राधिका श्रीकृष्णसे पुकार करें। इधरसे कृष्णभी ग्वालोंके संग गोहार करें ।।वह होली होरही मधुवन में जिसका अन्त नहीं । और ऐसी होली की महिमा भी वेद उचार करें । थकित होगई शेषकी जिह्वा हजारमुखसे वदो हजार । खेलें होली परस्पर श्रीराधा और नन्दकुमार ।।२।। उधरसे राधा गुलाल फेंके भर-भर मुट्ठी बिनाशुमार।इधर से मोहन वह मारें तक-तक पिचकारिनकी धार ।। उधरसे राधा दे सीठनी और सखियनकी खड़ी कतार । इधरसे गावें वह गाली गोविन्द और सब उनके यार ।।

शैर—उधरसे श्रीराधिका श्रीराग का उचचार करें। इधर से कृष्णभी बंशी की वह झनकार करें।। उधरतो बज रहेढफ ढोल इस धड़ाके से । इधर से ग्वाल भी शंखों की धुधुकार करें । उधर से तो गावें हिडोल मिलके इधर से गावें मेघ

मलार । खेलें होली परस्पर श्रीराधा और नन्दकुमार ।३।
उधर नाचतींसखी तथैथै दैं दैं ताली बारम्बार इधरथिरकते
ग्वाल सब लिये हाथ में बीन सितार ॥ उधर राधिका देख
कृष्णको अपना तनमन दे वार । इधर कृष्ण भी हो मोहित
श्रीराधा को रहे निहार ॥
शैर–उधर क्या राधिका श्रीकृष्णसे करार करें । इधर
का भेद बतावौ तौ बेड़ा पार करें ॥ उधर से राधिकाजी
को जो भजें भक्ति मिलें । इधर से कृष्ण भी भक्तों का वह
उद्धार करैं॥ देवीसिंह कहैं बनारसी हरि अब पृथ्वीकाउतारो
भार । खेलें होली परस्पर श्रीराधा और नन्दकुमार ॥४॥

होली-बहेर बहुत छोटी अद्‌भुत

खेलत होली ब्रज में नन्दलाल। मचो वह खूब धमाल॥
चले वह हँस हँस के लटपट चाल । हाथ में लिये गुलाल ।
बजावें बंशी की दै दै ताल । गावें ध्रुपद ख्याल ॥
शैर–कृष्णतो हाथमें लेकर बहुत अबीर चले । गुलाल
भर के वह झोली सुनो बलवीर चले ॥ उधर से राधिका
सखियोंको साथ ले धाईं । इधरसे साथमें इनके बहुत अहीर
चले॥ गालियाँ गावेंहँस हँस गोपाल । मचो वहखूब धमाल॥
बहुत सा राधा रंग दीनों डाल। बने कृष्णजी लाल ॥ मल
मुख रोरी और चूमें गाल। सखियाँ भईं निहाल ॥
शैर–कोई को होश भी मुतलक न रहा होलीमें । गली
में कुंजनकी ओर रंग बहा होली में॥ कोई लपटें कोई झपटें
व कोई शोर करैं॥ कोई बेहोश हुईं कुछ न कहा होली में ॥
हालकोईका हो गया बेहाल। मचो यह खूब धमाल॥ कोईके
मुखड़ेपर बिखरे बाल । पड़ाहो जैसेजाल। कोईके माथेपर

केशर भाल । कोई के बिन्दी लाल ॥
शैर–कोई गाते और बजाते वह लिए ढोल चले । हर
के साथ में अपना वह लिए गोल चले ॥ किसी के हाथ में
केशर की भरी पिचकारी । कोई तो रंग भी टेसू का बहुत
घोर चले ॥ सुनो तुम ब्रज का सारा अहवाल । मचो वह
खूब धमाल । कोई दौलतवर कोई कंगाल । सबका रूप
विशाल ॥ कहैं यह अद्भुत ख्याल । बजा चंग करताल ॥
शैर–यह ढंग सबसे निराला बनारसी का सुनो। ख्याल
भी सबसे है आला बनारसी का सुनो॥ किसी की शायरी में
लुत्फ कहाँ होता है। सखुन यह सब पै हैं बाला बनारसी का
सुनो॥ मगन् भये सुन के यह तीनों ताल ।मचोवहखूबधमाल॥

योगाभ्यास

सुख मनमें तो तब होवे जब प्राणायाम परायण हो। ऊर्द्ध
मूलको लसे अलग होय नर से फिर नारायण हो॥ षट्चक्कर
के ऊपर उत्तम सप्तम चक्र सुदर्शन है । निराकार अव्यय
अविनाशी ज्योति रूपका दर्शन है । द्वैत नहीं उसमें किंचित
अद्वैत यह दरशन परशन है॥ और काम है सहज कठिन यह
वो ही तो आकरषण है ॥ अनहद बाजे बजें वहाँपर दीपक
राग का गायन हो । ऊर्द्ध मूलको लखे अलख होय नरसे फिर
नारायण हो ॥ १ ॥ नाभि कमल में ब्रह्मा और हिरदे में
विष्णु भोग करें । मस्तक में शिव करें तपस्या तपें और
पूरण योग करें । जो प्राणी तीनों गुण से हों रहित और
सदा वियोग करें । परमहंस के दरशन तो इस जगत में वो
ही लोग करें॥ चाहै स्त्री पुरुष होंय या योग यती गोसा-
यन हो । ऊर्द्ध मूलको लखे अलख होय नरसे फिर नारायण

हो ॥२॥ जहाँ अग्नि नहीं पवन न पानी और नहिं नदवी नाला है। चले न चन्दा सूर्य वहाँ पर आपीआप उजाला है।। सत्य चित्त आनन्द रूप वह गोरा नहीं न काला है। हर रंग में हर झलक रहा पर सबसे रहे निराला है। जब प्राणी यह जन्म लये तो पैदा उलटे पाँयन हो। ऊर्द्ध मूल को लखे अलख होय नर से फिर नारायण हो।।३।। खुले आँख जब भीतर को तब दिव्य दृष्टि होजाय उसे। महाकाल वहआप बने औ काल नहीं फिर खाय उसे। देवींसिंह यह कहैं देख तो ब्रह्म को ध्यान लगाय उसे। बनारसी तू वही तो है सद्गुरु ने दिया लखाय उसे ॥ लखचौरासी से छुट जावें भूत प्रेत नहिं डायन हो। ऊर्द्धमूल को लखे अलख होय नर से फिर नारायण हो ॥ ४ ॥

त्याग देह अभिमान का-बहेर खड़ी

नहीं मिले हरि धन त्यागे नहीं मिलें रामजी जाल तजै। नारायण तो मिलें उसको जो देह अभिमान तजै ॥ सुत दारा या कुटुम्ब त्यागे या अपना घरबार तजै। नहीं मिलें प्रभु कदापि जगतका सब व्यवहार तजै। कन्द मूलफल खाय रहे और अन्न का भी आहार तजै। वस्त्रको त्याग नग्न हो रहे और पराई नारि तजै ॥ तोभी हरि नहिं मिलें यह त्यागे चाहै अपने प्राण तजै। नारायण तो मिलें उसको जो देह अभिमान तजै ॥१॥ तजै पलंग फूलका और चाहै हीरामोती लाल तजै। जातको अपनी तजै कुल की सारी चाल तजै ॥ वन में निशि दिन विचरै और इस दुनियाँ का जंजाल तजै। देह को अपनी जलावै शर की भी खाल तजै ॥ ब्रह्मज्ञान नहीं हो तो भी चाहै वो अपनी शान तजै। नारायण तो

मिलें उसको जो देह अभिमान तजै ॥२॥ रहे मौन बोले नहीं मुखसे अपनी सारी बात तजै। बालपनेसे योग ले तात तजै या पात तजै ॥ शिखा सूत त्यागन करदे और उत्तम अपनी मात तजै। कभी जीव को न मारेघात तजै अपघात तजै ॥ इतना तजै तो क्या होवे जो देह का नहीं गुमान तजै। नारायण तो मिलें उसको जो देह अभिमान तजै ॥३॥ रहे रात दिन खड़ा न सोवें पृथ्वी की भी शैन तजै। कष्टउठावे रहे बेचेन औ सारी चैन तजै।। मीठाहोकर बोलै सबसे कड़ुवे अपने वचन तजै। इतना त्यागे देह अभिमान नहीं दिन रैन तजै। बनारसी कहैं उसे मिलें नहीं हरिचाहे सकल जहान तजै। नारायण तो मिलें उसको जो देह अभिमान तजै।।४।।

ख्याल श्रीदुर्गाजी चारों पदारथ देनेवाली-बहेर लंगड़ी

सरस्वती विद्या देवे और अन्नपूरणा अन्न देवे। ज्ञान दे गौरी और धवलागढ़ वाली धन देवे ॥ यमुना यम से छुड़ादे और गंगा परमगती देवे। नाम नर्मदा दे और सीता सुमति मती देवे॥ ब्रह्मानीदे ब्रह्मविद्या रुद्रानी बड़ीरती देवे। कमला देवे कामना प्रेम वोह पारवती देवे। मंगल दे मंगला देवी ललिता मुझे लगन देवे ॥ ज्ञान दे गौरी और धवलागढ़ वाली धन देवे। विन्ध्यवासिनी विन्द दे और योग योगमाया देवे। कृपा कमक्षा दे काली निर्मल काया देवे। ज्वाला दे जिह्वापर यश माता पूरण माया देवे। दया दे दुर्गाभवानी मेरे मन माया देवे। विद्या दे वेदांतसार भैरवी तो मोहिं भजन देवे ॥ ज्ञान दे गौरी और धवलागढ़ वाली धन देवे। त्रिकुटात्रैगुण छुटा देवे औरतुलसी परमतत्व देवे।।अष्टभुजी दे आठ सिद्धि और सत्ती सत्त देवे। वागेश्वरी दे वाकवाणी

भगवती तो मोहि भक्ति देवे ॥ तांत्र दे तारा और जयंती जीत जगत देवे। कोट कांगड़ा कोटिन वरदे रमाभिराम चरण देवे। ज्ञान देवे गौरी और धवलागढ़ वाली धन देवे॥ नयना देवी नयनन में सुख दे नारायण नीत देवे। कहैं देवीसिंह मुझे तो पुण्यागिरि प्रीति देबे। बनारसीको जयजयवेंती तीनों लोक जीत देवे। गायत्री दे सकल गुण गोदावरी गीत देबे॥ हिरदे में श्रीहिंग लाज हितसे अपना दर्शन देवे। ज्ञान दे गौरी और धवलागढ़ वाली धन देबे।

ख्याल भगवती का बहेर-लंगड़ी

नाम तुम्हारा गौरी है पर कोह रूप धारा काली। रक्त वरण हो शारदा बनी रहे जगमें लाली॥ तीनों गुणसे रहित है तू पर त्रयगुण तेरे हैं आधीन। इसकारण ते भगवतीधरे रूप ये तुमने तीन॥ सद्गुण से पालन करै और रजसे रज करै परवीन। तुम गुण से तो करै संहार तू है सबमें लवलीन॥ भक्ति मुक्तिकी दाता है तू ऋद्धि सिद्धि देनेवाली। रक्त वरण हो शारदा बनो रहे जग में लाली॥ ब्रह्मा विष्णु महेश शेष सनकादिक सब तुझको ध्यावें। अपार माया है तेरी पार न सुर नर मुनि पावें॥ धन्य वह पुरुष हैं जो हिरदेसे तेरा गुणगावें। नंगे चरणों तेरे दरबारमें इन्द्रादिक आवें। सप्तदीप नवखंड औरचौदहों भुवनमें तेरीउजियाली। रक्त वरणहो शारदा बनी रहे जग में लाली॥ ब्रह्मा तेरी गोदमें खेलें विष्णु को दूध पिलावे तू। शिवशंकरको तांडव नृत्यका नाच नचावे तू॥ बड़े-बड़े असुरों कोमार कर मुण्ड की माल बनावे तू। कोटिन तेरी भुजा और असंख्य शस्त्र चलावे तू॥ रक्त बीजका रक्त पिया एक बुन्दन पृथ्वीपर

डाली॥ रक्त वरण हो शारदा बनी रहै जग में लाली। जिसको तूने चक्र से मारा चक्रवर्ती वह कहलाया॥ पार न जिसका कोई पावे वह तेरी माया। त्रिशूलसे छेदा जिसको त्रिभुवन का राज्य उसने पाया॥ कहैं देवीसिंह तूने बैरियों को भी सुख दिखलाया। बनारसी कहै दयावन्त श्रीदुर्गे तू भोली भाली। रक्तवरण हो शारदा बनी रहे जग में लाली।

ख्याल निर्गुण कालीजी का-बहेर लंगड़ी

यह काया कलका कलकत्ता इसी मैं है कृष्णा काली। तीनों गुण के तीन हैं नेत्र बड़ी शोभावाली। मन मन्दिर में आप विराजे खुशी खंग खप्पर धारे॥ सप्तसिंहपर आनकर बैठी पद्मासन मारे॥ मन्त्र मधुर मधुपान करे त्रिलोक में हो रहे जयकारे। झपट झपट के काम और क्रोधदैत्य सब संहारे॥ समताका शृंगार सजे तनु पर मनमें रहे खुशियाली। तीनों गुण के तीन हैं नेत्र बड़ी शोभावाली॥ चमत्कार की चार भुजा और रचना मुण्डों की माला। तेज और तप का खड़ा त्रिशूल जगत से निरयाला॥ चित्त का चक्र वह घूमैं चारों तरफ मेरी जय जय ज्वाला। दुर्बुद्धि को मारकर टुकड़े टुकड़े कर डाला॥ दृढ़ता का डमरू बाजे और सप्त ताल बजती ताली। तीनोंगुणोंके तीनों हैं नेत्रबड़ी शोभावाली॥ बोधके वस्त्रको पहिने तनुपर प्रीत पुष्पके हार गले। बुद्धि वेदको पढे और दया धर्मकी चाल चले। लोभ मोह दो चण्ड मुण्ड हैं इन दोनोंके दल्ल दले। ऐसी काली बसे काया में अगम की लाट बले॥ जगमग २ जगै ज्योति यश कीरति की है उजियाली। तीनों गुण के तीन हैं नेत्र बड़ी शोभावाली॥ करै भलाई के भोजन और ज्ञान गंगाजल नित्त पिये। जोग

की योगन भाव के भूत और भैरव संग लिए।। विद्याके बीड़े चाबै और तिलसमात के तिलक दिये। कहैं देवीसिंह हैं उनके बड़े भाग्य जिन दरश किये।। बनारसी यह कहै मेरे वह घटमें करती रखवाली तीनों गुण के तीन हैं नेत्र बड़ी शोभावाली।

रामचन्द्रके स्वरूप का वर्णन-बहेर लंगड़ी

निर्गुण ब्रह्म श्रीरामचन्द्र भये सगुण ब्रह्म और श्याम वरण ।। आनन परते मैं हरिके वारूँ रविकी कोटिकिरण।। घूँघरवाली अलकन पर मैं श्याम घटा वारूँ और घन। शेष नाग की भी जिव्हा वारूँ गौर काली का फण।। मस्तक पर शशि वारूँ केशर मुश्न और मलयागिरि चन्दन। भृकुटी पर से धनुष वारूँ और करूँ फिर मैं धन धन।

शैर–राम के नाम पै वारूँ मैं सैकड़ों रावण। फिर वारूँ इन्द्रजीत और वह बली कुम्भकरण।। और उनके ध्यान पै वारूँ मैं योगियोंकी यतन। बड़े हैं सब में वही जिनकी है प्रभुसे लगन।। पलकों पर मैं बाण बारूँ और चितवनपर वारूँ खजन। आनन परते मैं हरिके वारूँ रवि की कोटि किरन।। नेत्र पर उनके कमलको वारूँ और जंगलके काले हरिण। अमृत वारूँ हलाहल वारूँ और मदिराकी फवन।। खाँडा बिछुवा खंजर वारूँ और बाँकका बारूँ बाँकपन। अपने नेत्र भी मैं वारूँ स्वामी का करके दर्शन ।।

शैर–राम के रूप पर वारूँ मैं सोलहों लक्षण। और उनके तेज पै वारूँ मैं विश्व भर की अगन।। बात पर उनकी बनाकर मैं वारूँ कोटि भजन। दया पै राम की वारूँ कुबेर का सब धन ।। वारूँ नासिकाके ऊपर मैं बुला बुलाकर हीरा मन। आनन परते मैं हरिके वारूँ रविकी कोटि किरन ।।

करण पै वारूँ सूरज के कुण्डल ओठ पै वारूँ लाल यमन। चमक दाँतकी पै दामिन वारूँ और चौदहों रतन ।। दो कपोल पै रवि शशि वारूँ जिसका तेज छाया त्रिभुवन। जिव्हा पर से वेद वारूँ मैं राम का कर सुमिरन ।।

शैर–राम के बाण पै वारूँ मैं तीनों लोक कारण। धनुष पै उनके मैं वारूँ जो धनुष निकले गगन ।। और उनके क्रोध पै वारूँ मैं काली रुद्रका मन। राज पै रामके वारू वह जो है इन्द्रासन ।। कण्ठ पै वारूँ चहौं राग औ तीस रागिनीकी सब परन। आनन पर ते मैं हरि के वारूँ रवि की कोटि किरन ।। हाथपै वारूँ दान पुण्यजो राजाबलि से अधिक कठिन ।। हिरदे पर से मैं उनके वारू जोवन का जोवन। नाभि कमल पै भँवरको वारूँ कटि पै केहरिकी लचकन। जंघा पर से मैं उनके वारूँ कजरी थंब के वन ।।

शैर–राम की चाल पै बारूँ हरएकका चालो चलन। चरण पर अप्सरा वारूँ मैं उनके छूके चरण ।। वह उनके काव्य पै वारूँ कवीश्वरोंका कथन। मैं उनके विशवरूप पर यह वारूँ चौदहों भुवन ।। देवीसिंह कहैं बनारसी तेरी रहै राम से लगी लगन। आननपर ते मैं हरिके वारूँ रविकीकोटकिरन।

निर्गुण रामायण-बहेर लंगड़ी

घटमें शिवके रकार है और मुख में हर के मकार है। रामनाम का सदा श्री महादेव को अधार है ।। रकार से दे ऋद्धि सदाशिव मकारसे देते मुक्ति। ऐसे भोले हैं जिनकेपास में दोनों जुगती। रकार रक्षा करे सदा और मकारसे ममता रुक्ति। शिवशंकरके पास नानाप्रकार की है उक्ति" अष्ट पहर दिन रैन सदा दोनों अक्षरका विचार है। रामनामका

सदा श्री महादेवको अधार है ।। रकारसे हर हरें रोग और मकारसे देते माया । विश्वनाथ के हिरदे में राम नाम है समाया ।। रकार रम रहा रोमरोममें मकार मेरे मन भाया दो अक्षरका आदि और अन्त किसीने नहिं पाया ।। रकार रचना करैऔ महिमा मकारकी भी अपार है । राम नाम का सदा श्रीमहादेव को अधार है।। मकारमें है रकारकारस रकार का है मकार मन । विश्वनाथजी इसीसे राम नामका करें भजन ।। रकार ने राक्षस संहारे मकार ने मारे दुर्जन । राम नामके रटेसे नीलकण्ठ रहें सदा मगन।। विचार करके देखा मैंने-चार बेदका ये सार है । राम नामका सदा श्रीमहादेवको अधार है ।। रकार के हैं रंग सभी और मकार का मतज्ञानी है। रामकी लीला सिवाशिवकें नहीं किसीने जानी है ।। राम के नाम का अन्त नहीं है थको शेष की बानी है। बनारसीने कीर्तिरामको सदा बखानी है ।। पल पल छिन छिन निशि दिन मुझको दो अक्षरकी पुकार है । राम नाम का सदा श्री महादेवको अधार हैं ।।

श्रीकृष्णं के अंगुली की स्तुति-बहेर लंगड़ी

श्रीकृष्ण के हाथ में क्या नाजुक है भोली भालीअँगुली।। रंग रंगके जवाहरसे है रंगवाली अँगुली । कभी अँगुली पहरे लाल की दिखलाती लाल अँगुली।। कभी पिरोजों से हो जंगाली अँगुली। जबके जमरुदके छल्लों में हरिने बोडाली अँगुली ।। हरी होगई दिखाने लगो व हरियाली अँगुली। जितने रंग हैं इस पृथ्वी पर किसीसे नहीं खाली अँगुली।। रंग रंग के जवाहर से ओ रंगवाली है अँगुली । एक तो बाले कृष्ण एक उनसे उनकी बाली अँगुली ।। दूजी दूध से

यशोदा ने उनकी पाली अँगुली। तीजी त्रयगुण रहित औ चौथीचौथे पदवाली अँगुली। चार पदारथ चारोंमें एकसेएक आलो अंगुली। अर्थ धर्म और काम मोक्ष सबके देने वाली अँगुली ।। रंग रंग के जवाहरसे वह रंगवाली अँगुली।।कभी पहने हीरों छल्ले हरिने चमकाली अँगुली ।। किरण सूर्य को देखकर होगई मतवाली अँगुली। चित्रविचित्रके लक्षण जिसमें ऐसी कर ढाली अँगुली ।। धन्य वह विधनाके जिसने साँचेमें ढाली अँगुली । चन्द्रकला नखमें जिनके शोभित है वह आली अँगुली ।। रंगरंगके जवाहरसे वह रंगवाली अँगुली एक समय राधाने कृष्णकी अँगुली में डाली अँगुली ।। गंगा यमुना मिलगई वह गोरी काली अँगुली। श्याम कहैं श्यामसे तुम्हारी चन्द्र से उजियाली अँगुली ।। श्याम बोले आपकी अद्भुत बनमाली अँगुली। देवीसिंह कहैं बनारसी ने वह देखी भाली अँगुली। रंग रंगके जवाहर सेवह रंगवालीअँमुली ।।

गंगा लहरी-बहेर खड़ी

पापी एक मरा गंगा पर हुई वो उसकी तैयारी ।। महिमा सुनो कान दे जैसी निकली बाकी असवारी ।। आयो कञ्चन विमान सुन्दर और वामें रत्नजड़े। ब्रह्मा विष्णुमहेश शेष सनकादिक सब लेनेको खड़े ।। उधर से आये यम के दूत वो लेले हाथमें शस्त्र बड़े । देखते ही दल श्रीगंगा का भागे यमके पाँव पड़े ।। वह जो पापी था सो तो तनुत्याग के बन गया त्रिपुरारी। महिमा सुनो कान दे जैसी निकली वाकी असवारी ।।अद्भुतभूषण कुबेरजी झटपट सो आपी ले आये। पीत वस्त्र नख सिखलौं उत्तम उनके तनु में पहिराये। चोबा चन्दन अतर अरगजा सभी देबते ले धाये। पत्र पुष्प से

पूजन करकर मगन भये मंगल गाये ॥ तीन लोक चौदहों
भुवन की पाई उसने सरदारी ॥ महिमा सुनो कानदे जैसी
निकली वाकी असवारी ॥ मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल
गले बैजयन्ती माला। शीशछत्र सोवरनका झूमें जयजय शब्द
की ध्वनि आला ॥ कंठकौस्तुभ मणोहार गज मुक्ताका उर
में डाला। बाजूबन्द नवरत्नऔर करमें कंगनका उजियाला।
भरे अटल भंडार उसे गंगाने माया दी सारी। महिमा सुनो
कान दे जैसी निकली वाकी असवारी। जब वह बैठा विमान
में तब ब्रह्माजी मुरछल लाये। इन्द्र डुलावैं पंखा सब देवतों
ने पुष्प अति बरषाये। शिव और विष्णु ने करी शंखध्वनि
ऐसे फल उसने पाये ॥ धन्य भाग्य हैं उनके जो कलिकाल
में गंगाजीन्हाये ॥ करें नृत्य गन्धर्व सकल मिल बाजे बजन
लगे भारी। महिमा सुनो कान दे जैसी निकली बाकी अस-
वारी॥ अष्टसिद्धि नवनिद्धि सभी कर जोर जोर आईं आगे।
जब वह उठा विमान तो गोले अनहद के दगने लागे ॥ नंदी
गण और गरुड़ सिंह गज विमान के नीचे लागे ॥ और
सकल वाहन काँधादेने लागे बारीबारी। महिमा सुनो कान
दे जैसो निकली बाकी असवारी ॥ हनूमानजी खवास बन
गये भैरव बन गये अगमानी। गणेशजी डंका ले आगे चले
महा योगी ध्यानी ॥ छप्पन कोटि मेघ ने मिलके रस्ते में
छिड़का पानी। चन्द्रसूर्यने करी रोशनी सब देवतों के मन-
मानी॥ तेंतीस कोटि फौज सब संगमें चली और छबि न्यारी
न्यारी। महिमा सुनो कान दे जैसी निकली वाकी असवारी॥
जब वह पहुँचा अमरलोकपुर सब फिर आये अपने धाम।
मिला ज्योति में ज्योति रूप होय श्रीगंगाको करो प्रणाम॥

याही ते मैं कहत बात हों जपो सकल गंगा का नाम। और
कोई नहीं अन्त समयमें आवेगा अब तुम्हरे काम॥ बनारसी
यह कहै कभी तो आवेगी मेरी बारी। महिमा सुनो कान दे
जैसी निकली वाकी असवारी॥

गंगालहरी-बहेर खड़ी

भोजनकर या भूखा रहु या वस्त्र पहर या फिर नंगा।
जौलौं जिये तू कहु इस मुखसे जयगंगा श्री जयगंगा॥ नेम
धर्म और कर्म अकर्ममें योग भोगमें कहु गंगा। दुख में सुख
में भले बुरे में रोग अरोग में कहुँ गंगा॥ सोवत जागत
राह बाट में हर्ष शोक में कहु गंगा। मातु पिता दारा सुत
बिछुड़े तो वियोग में कहु गंगा॥ धन दौलत या राजपाट
हो या फिर बनजा भिकमंगा। जौलौं जिये तू कहु इस मुख
से जय गंगा श्री जयगंगा॥१॥ रोवत हँसत नगर अरु वन
में जहाँ रहै तू कहुँ गंगा। सम्पत विपत कुपत और पत नर
सबी सहै तू कह गंगा॥ डूबत तिरत मरत या जीवत मेरे
कहे तू कहु गंगा॥ रे मन मूढ़ समझ अब झठ मेरो मन चहे
तू कहु गंगा॥ जो तेरे मन बसे कार यह लगे तेरे चित में
चंगा। जौलौं जिये तू कह मुखसे जय गंगा श्री जय गंगा
॥२॥ खेलत कूदत उछलत फाँदत अपने मन में कहु गंगा।
बाल जवानी और बुढ़ापा तीनों पन में कहु गंगा॥ नाचत
गावत ताल बजावत हर रागन में कहु गंगा। सात द्वीप
नवखण्ड और चौदह भुवनमें कहु गंगा। अन्धाहो या बहिरा
हो या लूला हो या इकटंगा। जौलौं जिये तू कह इस मुखसे
जयगंगा श्री जयगंगा। घटी नफे में दिवस रात्रि में आदि
अन्तमें कहु गंगा॥ संग कुसंग में रंग कुरंग में साधु सन्त

में कहो गंगा । चराचर चेतन और जड़में तू अनन्तमें कहो गंगा ॥ चाहे सब में बैठके कहो चाहे एकान्तमें कहो गंगा। चाहे तू गरीब बन या कर दंगा । जौलो बनारसी यह कहै चाहै तू जिये तू कहु इस मुखसे जय गंगा श्री जय गंगा ॥

गंगा लहरी-बहेर खड़ी

और सकल देवतों से फल जो मांगोगे तो पावोगे । बिन मागे देहैं गंगा जो एक बार तुम न्हावोगे ॥ शिवजो को जो करो तपस्या मन में ध्यान लगावोगे । और वह श्रीगंगा का जल जब उनके शीश चढ़ावोगे ॥ वेल पत्र अरु आक धतूरा मन्दिर में ले जावोगे । तब वह हुई हैं प्रसन्न जब तुम दोनों गाल बजावोगे ॥ वह कहि हैं कुछ माँगो तब तुम उनसेमाँग के लावोगे । बिन माँगे दे हैं गंगाजो एक बार तुम न्हावोगे। ठाकुरद्वारे जाय जाय जब विष्णु को शीश झुकावोगे । पत्र पुष्प से पूजन कर कर माला को पहिरावोगे ॥ धूप दीप नैवेद्य लगाकर और विष्णुपद गावोगे। तब वह रीझेंगे तुमसे जब उनको भजन सुनावोगे ॥ वह कहि हैं कुछ हमसे लेउ तब तुम करको फैलावोगे । बिन माँगे देहैं गंगा जो एक बारतुम न्हावोगे। ब्रह्माजीका सुमिरण कर कर लाखन वर्ष बितावोगे । कन्द मूल फल खाय खायके बहुतहिं कष्ट उठावोगे ॥ यह काया कंचन तनु अपना इनको खूब सुखावोगे । तब वह दर्शन देइहैं पैहो फल जो कुछ तुम चाहोगे वह कहिहैं कुछ माँगो तबतुम माँगोगे शरमावोगे बिना माँगे देहैं गंगाजो एक बार तुम न्हावोगे॥ करिहौ पृथ्वी पै कर्मा और चारोंधाम फिर आवोगे । जगन्नाथ और रामेश्वर में जायके पाँव थकावोगे ॥ और द्वारका में छापे खा खा के बदन जलावोगे।

जाओ बद्री केदार तब तुम क्योंकर शीत बचावोगे ॥ वहाँ तो तुम आपै मंगिहौ मांगन में बहुत लजावोगे । बिन माँगे देहैं गंगा जो एक बार तुम न्हावोगे ॥ और कहीं जो पाप कर्म करिहौ तो पाप उठाओगे। गंगाजी में देह भी धोइहो तो भी नहीं पछताओगे ॥ लात लगाओ कूदो फाँदो बहुतै धूममचावोगे । तो भी माता प्रसन्न होइ हैं वाके पुत्र कहावोगे ॥ बनारसी कहै अन्त में मुक्ति आपी से तुम पावोगे । बिन माँगे दे हैं गंगा जो एक बार तुम न्हावोगे ॥

गंगालहरी-वहेर खड़ी

आज युद्ध को करो तयारी श्री गंगाजी तुम हम से । मैं पापी तुम तारणहारी बनि हैं पाप बहुत हमसे ॥ मेरा पाप है पहाड़ के सम समर करन में बीर पड़ो । देखौं मैं अब आयके कैसो हैगो तुम्हारो तोर बड़ो । रण में लड़े हटे नहिं कबहूँ मेरो पाप रणधीर बड़ो । तुम तो यही कहत हो मुख से मेरी रेणुका नोर बड़ो । देखो उनको पुरुषारथ जो लड़ि हैं आय मेरे तुम से । मैं पापी तुम तारणहारी बनि हैं पाप बहुत हमसे ॥ जब से जन्म भयो पृथ्वी पर कभी न हरि को नाम लियो । सेवा की नहिं मात पिता की साधुन को नहिं काम कियो ॥ हरो बहुत धन ठग ठग के नहिं हाथ से एकौ दाम दियो । कियो बहुत विषपान न अमृत को भी एकौ याम पियो ॥ कैसे बचिहौं काल से मैं अब कौन छटैहै मोहि यम से। मैं पापी तुम तारणहारी बनि हैं पाप बहुत हम से ॥ वेद पुराण बखानत निशि दिन अधम पापियों को तारा । किया बहुत संग्राम काल ते औ यमदूतों को मारा । सुनो बात यह श्रवण से मैंने किये पाप अपरम्पारा। करिहों और बहुत से अघ देखों कैसे

हो निस्तारा ॥ अब तो येहि लड़ाई ठानी है गंगाजी मैंने तुम
से। मैं पापी तुम तारणहारी बनि हैं पाप बहुत हम से ॥
अई हैं जब यमदूत लैंन को बड़े २ योधा भारी। जब तुम
मोहि बचैहो तब मैं जैहों तुम्हरी बलिहारी ॥ तुम्हरे गण हैं
पुष्प लिये औ यम के दूत शस्त्रधारी। इनका उत्तर देउ वि
सैना किस विधि से यम की हारी ॥ कहौ मुझे समझाय के
झट पट छुट जाऊँ मैं इस भ्रम से। मैं पापी तुम तारणहारी बनि
हैं पाप बहुत हम से। फिर गंगाजी बोली मेरी एक रेणका
असंख्यवान। भगि हैं सब यमदूत बुलैं हों मैं तुमको भेज के
विमान ॥ एक बिन्दु गंगाजल से जल जायँ पाप नहिं रहे
निशान। किये पाप देवीसिंह ने यह पाप भी होगये पुष्प
समान। बारम्बार ये कहत जात क्यों बनारसी तुम हम से।
मैं पापी तुम तारणहारी बनि हैं पाप बहुत हम से ॥

गंगा-लहरी बहेर खड़ी

ब्रह्मा विष्णु महेश शेष सनकादिक सबने किया भजन।
तब आई ब्रह्ममण्डल से श्रीगंगाजी तारन तरन ॥ ब्रह्मरूप
निर्भर निर्वानी अखण्ड गंगा की धारा। विष्णु से ब्रह्मा के
पास आई तब शिवजी ने धारा ॥ जटा को उनके शोभा दिया
रूप भी सुन्दर सुधारा। आगे कहूँगा वृत्तान्त जिस विधि
तीन लोक को उद्धारा ॥ अस्तुति करके आप ईश ने शीश
चढ़ाई भये मगन। तब आई ब्रह्ममंडल से श्रीगंगाजी तारन
तरन ॥ भागीरथ ने करी तपस्या मगन भये शंकर भोला।
कहा माँग कुछ हम से तब भागीरथ मुख से ये बोला ॥ गंगा
देउ नाथजी मुझको शुद्ध करो कुल का चोला। तब फिर
अपनी जटा को शिव ने अपने हाथ से खोला ॥ एक बिन्दु

गंगा जल निकला जटा से जब अति किया जतन। तब आई
ब्रह्ममण्डल से श्रीगंगाजी तारन तरन ॥ एक बिन्दु की तीन
धार भई धारा एक गई पाताल। शेषनागने दर्शन पाये जीवन
मुक्त भये सब व्याल ॥ एकधार आकाश गई सब देवते भये
खुशहाल। हाथजोड़ दंडवत करी गंगाने उन्हें तारा तत्काल ॥
एकधार भागीरथ लाये मृत्युलोक तारन कारन। तब आई
ब्रह्ममण्डल से श्रीगंगाजी तारन तरन ॥ मृत्युलोक में चलीं
वेगसे तब समुद्रने किया विचार। हाथजोड़ गंगासे कहा तुम्हरे
बलका नहिं पारावार। ये मुझसे नहिं जाय सम्हारा बहुत
सिन्धने करी पुकार। तब गंगाने प्रसन्नहोकर धारा अपनी
करीं हजार ॥ नामपड़ा गंगासागर कहै बनारसी नितकर
दरशन। तब आई ब्रह्ममण्डलसे श्रीगंगाजी तारन तरन ॥

लावनी

श्रीगंगाजी के तीर नीर पीने को नाग यक आया।
था बड़ा वह विषधर नाग भाग्य कछु वादिन वाके जाके।
जब जल पीने वह लगा तो मेंढ़क देखकर भागे ॥
इतने में आये गरुड़ चोंच से पकड़ के खाने लागे।
झटपट वाको गये निगल प्राण तत्कालै वाने त्यागे ॥
मरत ही विष्णु तन धारा। चढ़ गरुड़पै यही पुकारा ॥ अब वाहन मिला हमारा।
धन धन गंगा को बिन्दु मुझे गोविन्दै आप बनाया।
श्रीगंगाजी के तीर नीर पीने को नाग यक आया ॥
शिर मोरमुकुट की लटक कान में कुण्डल अधिक बिराजें।
गल बैजन्ती माल पोत पीताम्बर तनु पर साजें ॥
वो शंख चक्र और गदा पद्म की सम्पूरण छवि छाजें।
यह चरित्र वाके देख २ कर गरुड़जी मन में लाजें ॥

कुछ कहत नहीं बन आवे । गंगा जो चाहे बनाय [illegible] धरा[illegible]

है महिमा अपरम्पार पार नहिं सुरनर मुनि ने पाया ।
श्रीगंगाजी के तीर नीर पीने को नाग यक आया ।
फिर श्री गंगा की आप स्तुति करी गरुड़ ने मुख से ।
भई प्रसन्न गंगामाता तो वाणी बोलीं यक सम्मुख से ।
था बहुत कष्ट में नाग छुटाया मैंने इसको दुःख से ।
अब तुम इसको बैकुण्ठ पहुँचावो बसै जाय यह सुख से ।

ये गरुड़ ने आज्ञा मानी । तब उड़े बड़े बलवानी ।। गंगा की महिमा जानी

झटपट पहुँचे उड़ धाय उसे वैकुण्ठ के बीच बिठाया ।
श्रीगंगाजी के तीर नीर पीने को नाग यक आया ।।
जो ये स्तुति गंगा की कान दे सुने औ मुख से गावै ।
वो भक्ति मुक्ति सम्पूर्ण पदारथ मन मांगे फल पावै ।।
गंगा से बड़ा नहिं और देव कोई मेरी दृष्टि में आवै ।
हैं धन २ वाके भाग जो दर्शन करै और गंग नहावै ।।

कहैं देवीसिंह भज गंगा । तन तेरा मन होय चंगा । मन बनारसी ने रंगा

गंगाजी में तन बोर २ झकझोर के पाप बहाया ।
श्रीगंगाजी के तीर नीर पीने को नाग यक आया ।।

गंगा लहरी अधर-बहेर छोटी

सागरकी गिन जाँय लहर गिने जाँय तारे । नहिं जाँ[illegible] गिने श्रीगंगाजी के तारे । षट्शास्त्र गिने जाँय गिने जाँ[illegible] नरनारी । दशदिशा गिनो जाँय सृष्टि गिनी जाय सारी । सिद्धसाधु गिने जाँय गिने जाँय आचारी । राजारानी गि[illegible] जाँय गिनेजाँय खलक सरकारी ।। गिनेजाँय शाह शाहनीगि[illegible] जाँय हलकारे । नहिं जाँय गिने श्रीगंगाजी के तारे ।। गि[illegible] जाँय नदीनद सिंधु गिनेजाँय नाले ।। गिनेजाँय श्वेत रं[illegible]

लाल गिनेजाँय काले । दरखत डाली जाँयगिनी गिनीजाँय डालें ।। छत्तीस रागनी राग सकल गिनडाले। गिनतेगिनते कई कई हजार शायर हारे । नहीं जाँयगिने श्री गंगाजी के तारे । खग चीरद जाते गिने गिनेजाँय चातर ।। हर जात गिनीजाँय नगर गिने जाँय घरघर ।। कागज स्याही जात गिनी गिनेजाँय अक्षर । सरदार गिनेजाँय गिनेजाँय सागर सर ।। क्या जाने गंगाने कितने शठ निस्तारे ।। नहिं जाँयगिने श्रीगंगाजी के तारे ।। दिनरात गिनेजाँय गिनोजाँय तिथी घड़ी । शायरी गिनीजाँय गिनोजाँय छन्दकी लड़ी । शायर कायर जाँय गिने गिनी जाँय कड़ी । जंगल खेड़ा गिनेजाँय गिनी जाँय जड़ी । यह सत्यसत्य छन्द काशीगिरि ललकारे । नहिं जाँय गिने श्री गंगाजी के तारे ।।

यमराज का विष्णु से श्रीगंगा पर फर्याद करना

अब विष्णु से जाकर यमने यही पुकारा । गंगाने बन्द करदिया नरकका द्वारा ।। लाखों पापी पृथ्वी पै रोजमरते हैं । क्या कहों मैं यक क्षणभर में तरते हैं ।। मेरे भय से भी जरा नहीं डरते हैं । गंगा के गण उनको रक्षा करते हैं ।। बिन भजन किये होता उनका निस्तारा । गंगाने बन्द कर दिया नरक का द्वारा ।। हिन्दू या तुर्क या बेहना डोम कस भंगी धोबी हड़फोड़ या होवे नाई । गंगाकी लहर जिसेदूर से दी दिखलाई ।। फिर अन्त समय में उसने मुक्ति पाई । दर्शन करतेही तरा महा हत्यारा । गंगा ने बन्द कर दिया नरकका द्वारा ।। जो मेरेदूत पापियोंको जाँय पकड़ने ।। तो गंगाके गण आवें उनसे लड़ने । वो देख-देख दूतों को लगे अकड़ने । और मारेबान तनुबीच लगे वो गड़ने ।। मैं लड़-

लड़ के कई लाख लड़ाई हारा। गंगाने बन्द करदिया नरक का द्वारा।। गंगासे सौ योजनपर एक नगर था ।।उसनगर में इकपापी का ऊँचाघर था ।वह पापकर्म कर करता रोज गुजर था।। मरगया तो उस पर पड़ा एक वस्तर था । गंगा का धोया उसीने उसको तारा ।। गंगाने बन्द कर दिया नरकका द्वारा । यह सुनीबात जब विष्णुजी यमसे बोले । गंगाकी महिमा कहाँलौं कोईखोले । इस नेत्रसे दरशन श्री गंगा के जो ले ।। बैकुण्ठमें वह फिरझूले सदा हिंडोले ।कुछ बस नहीं मेरा चले न चले तुम्हारा ।। गंगाने बन्द करदिया नरकका द्वारा ।। जबमृत्युलोकसे गंगा आप सिधरि हैं।तब वह पापी फिर कौन विधिकर तरिहैं ।। उसकालमें जोकोई पाप कर्म कर मरि हैं। वह आन आनकर नरक तुम्हारो भरि हैं ।। यमराजजी अब थोड़ेदिन करो गुजारा । गंगाने बन्द कर दिया नरक का द्वारा ।। यह सुनीबात यमराज ने घर फिर आये। कुछ हँसे और कुछ कुछ मनमें पछताये ।। मन मारके यह गंगाको बचन सुनाये । अबतौ तुम्हारे थोड़ेदिन रहने पाये ।। कहें बनारसी कुछ यमका चला न चारा। गंगा ने बंद करदिया नरक का द्वारा ।।

बहेर–छोटी

जौलौं पृथ्वीपर गंगाकी धारा । तौलौं यमराजा करि हैं कहा तुम्हारा ।। मतडरो कोई यमदूत से मेरेभाई । रक्षा करनेको है श्री गंगामाई। जबसे शंकरने अपनेशीशचढ़ाई। तब ईश और जगदीश की पदवी पाई ।। शिव बिना वोही जिसने यक गोता मारा । तौलौं यमराजा कार हैं कहा तुम्हारा ।। कुछ जोर न यमको चले पाप नहिं लागे । औ

काल भी देखे दूरसे तो वह भागे ।। जो गंगाके दरशन कर काया त्यागे । वह अमरलोक पुर बसे अलख हो जागे ।। ये निश्चय करके मानो बचन हमारा। तौलौं यमराजा करि हैं कहा तुम्हारा ।। चाहेहो पुत्र कुपुत्र तो माता पाले । कुछ कर्म अकर्म न उसके देखेभाले ।। जो एकबार प्राणी गंगामें न्हाले। तो जन्ममरण के सकल पापको टाले ।। गंगा के बल से दलसब यमकाहारा। तौलौं यमराजा करिहैं कहा तुह्मारा। मतचलो हमारेमित्र किसीसे डरके । निर्भय हो दर्शन श्री गंगाका करके ।। कहै देवीसिह गंगाको ध्यानमें धरके । जैहौ भवसागर सहजै आप उतरके।। गंगाकी महिमा जगमें अप-रंपारा। तौलौं यमराजा करिहैं कहा तुम्हारा।

स्तुति श्रीकृष्णके बाँसुरी की-बहेर तवीर

हरि प्रथमबजाई जब बंसुरी राधावर कुन्जबिहारी ने । ध्वनि सुनत अचानक उठिधाईं तजिकाज सकल ब्रजनारी ने ।। पड़ीभनक श्रवण मुरलीकी जब तब सब सखियाँ उठि धाय चलीं। कोउ एक दृगमें सुरमादेकर कोउएक कर मेंहदी लगाय चलीं ।। कोउ आधीसारी तनढाके कोउ यौवन खोलि दिखायचलीं । कोउके आधेदाँतन मिस्सी कोउ आधाशीश गुन्थायचलीं ।। कोउ लटलटकाय चलीं झटपट लज्जा तज सकलविचारीने । ध्वनि सुनत अचानक उठिधाईं तजि काज सकल बृजनारीने ।।१।।कोउ पाँयनसे बाँधेपहुँची कोउहाथन पायन डालचलीं। कोउ कण्ठमें धारे किंकिणीको और कोउ कटिपहिने मालचलीं । कोउके कानन नथुनी लटकन कोउ खोले शिरके बालचलीं । कोउ के नाकन बाली झुमके जो चलीं तो सब बेहालचलीं ।। जब पहुँचीकृष्ण निकट सखियां

तबही लखीं गिरवरधारीने। ध्वनि सुनत अचानक उठधाईं तजिकाज सकल ब्रजनारी ने ॥२॥ फिर बोले कृष्ण कौनहो तुम कैसे तुमने शृंगार किये। पाँयन पहुँची हाथन पायल और कटि मुक्ताके हारकिये ॥ काननमें नथुनी और लटकन ये भूषण बिना बिचार किये। नाकन में बालो और झुमके काहे तुमने ब्रजनारि किये। ये सुनत वचन तबदिया जवाब बृजकी युवती दो चारीने। ध्वनि सुनत अचानक उठ धाईं ताजकाज सकल ब्रजनारी ने ॥३॥ जब तनको सुधि कुछ नहिं रही भूषण कौन सुधारचले। मन तो अटका इस बंसुरी में दृगसे अँसुवनकी धारचले ॥ तुम रागबजावो राग करो ऐसानहीं कोउ बिहारकरे। मंझधारमें नावपड़ी हमरी तुम बिनको बेड़ापार करे। तुम पति हमरे हमदासी सबये दिया जवाब दुखियारीने। ध्वनि सुनत अचानक उठधाई तजाकाज सकल बृजनारी ने। लख प्रेम सकल बृज वनिता का जब कृष्णने मुर्ली अधर धरी। मोहनभी वा दिन मोहि गये वह तानजो निकली रागभरी ॥ मन मन की सुधि कुछ नाहिं रही जब श्रीराधे पर दृष्टि परी। कहैं काशीगिरि बोलो सन्तो जयकृष्ण राधिका हरीहरी। ऐसी लीला नहिं करो कोउ जैसी करी हरि अवतारी ने। ध्वनि सुनत अचानक उठधाईं तजिकाज सकल ब्रजनारी ने।

स्तुति श्रीकृष्णकी बाँसुरी की-बहेर तवीर

हरि बंसुरी ध्वनि सुन बृज युवतीं चलीं झुंड के झुंड मगन मनकर। धन धन्य हरी धन धन्य सखी धन धन्य बंसुरी तनमन लियोहर॥ मन प्रेमप्रवल अति तन सुन्दर सब वेद श्रुति अस गुणगावें। तजलाज सकल गृहकाज छोड़चलीं

हरिपद पंकज मनभावें॥ हरि आनन चन्द्रचकोर सखी छवि निरख निरख कर सकुचावें। कुछ कहि न सकें चित की बतियाँ अति लज्जित मनमें मुसिक्यावें॥ अति व्याकुलगीत मदन मदकर सखि चाहत मिलें मनोहर वर। धन धन्य हरी धन धन्य सखी धनधन्य बंसुरी तनमन लियोहर ॥ मनकी बांछालखि मुरलीधर ब्रज युवतिन संग बिहारकरें। एकएक हरी एकएक सखी यकयक के कर यकयक पकरें॥ यकयक मुरलीदे गोपिकनको हरि कहते बजावो तबहि बरें। यहप्रेम कथा सुन हँस हँसकर मुख धरतन बजत प्राण बिखरें॥ कहैं बृजयुवती हम कीन्ह कहा अब तुम्हीं बजावो नटनागर। धन धन्य हरी धनधन्य सखी धनधन्य बंसुरी तनमन लियो हर। यकयंक तरुवर तर यकयक हरि यकयक युवतिन संगबात करें इत घर आवें यशुदाके पास उत गोपियन बीच प्रभात करें। हरि ढीठ पकड़मुख चूमें और बात सखी सकुचात करें। यह मांगत वर विनती कर-कर विधना नित ऐसी रातकरें। जब तिनके पति आवत सब गृह पावत अपनी पत्नी घरघर। धन धन्य हरी धनधन्य सखी धनधन्यबंसुरी तनमनलियो हर॥ शिव नारद आदि सकल ऋषिमुनि सब देखत मगन विमान धरे। कौतुक गिरधरके लखन परें तन मानुष ब्रह्म अखण्ड हरे॥ युवती तन नारि वेद सुरति रविलीला ब्रजमें खेलकरे। हरि पुण्य न पाप दुःख न सुख कछु वेदान्तके कर्ता खेदपरे॥ रचिछंद यह काशीगिरि स्तुतिकरि मांगत भक्ति पदारथवर। धनधन्य हरी धनधन्य सखी धनधन्यबंसुरी तनमन लियोहर।

निर्गुण पलंग-बहेर खड़ी

चलो आज हिलमिल के सोवें प्रीतम प्यारे के अब संग।

उत्तम जिसकाबिछा पलंग।। पंच
सात द्वीप नवखंड के ऊपर
तत्वसे अलग है वोऔर तीनों गुण से न्यारा है । दिव्य रूप
सुन्दरसे सुन्दर अपना प्रीतम प्यारा है।। दरवाजेपर चौकी
देता जिसके कुतुब सितारा है।जहां न चन्दासूर्य अग्नि पवन
का तनिक गुजारा है ।। सोमेरे इस शरीरमें है उसी से
अपना सत्संग। सातद्वीप नवखंडके ऊपर उत्तम जिसका बिछा
पलंग।। सदैव एकरंग बनारहे नहीं वृद्धहोय नहीं बाला है
उसीसे चन्दासूर्य अग्नि में प्रकाश और उजियाला है। उसी
से तू कर नेह अरी बुद्धि वो भोलाभाला है। इसशरीरकीसेज
में है वो पर हमसे निरयाला है ।। गले उसी के लगके सोऊं
अपने मनमें यही उमंग। सातद्वीप नवखंड के ऊपर उत्तम
जिसका बिछा पलंग।। नेह निवारसे बुना है वो और कंचन
के चारों पाये । लगे हैं जिसमें पँचरंग तकिये तहां सहजवो
दरशाये ।। योग युक्ति से शीशमहलमें जोप्राणी आये जाये
अपने पतिसे वहां मिले जो प्राणायामसे लव लाये ।। सोवत
जागत चित्त उसी में लगा रहै सुखपावे अंग। सातद्वीप नवखंड
के ऊपर उत्तम जिसका बिछापलंग ।। पतिव्रता है वही जो
कोई ऐसे पतिसे भोग करे । दोनों सुखपावें उससे मिलभोग
करे और योगकरे ।। जन्ममरणके दुःखसे छूटे दूर जगतका
रोगकरे। देवीसिंह कहैं आवागमन मिटजाय न मनमें शोक
करे।। बनारसी सोवै अपने सांईसंग और नहावै गंग । सात
द्वीप नवखंड के ऊपर उत्तम जिसका बिछा पलंग ।।

निर्गुण वर्षा-बहेर खड़ी

निरआसरे हैं निरंकार जहँ अमृतकी वर्षा बरसे । निर-
आसरेपीवें योगीजन सुधा जिन्हें सद्गुरु दरसे ।।निरआसरे

अनहदघनगरजैःनाद-बीनबोलेचाले। निरआसरे अपनी हरि
याली आपीवो देखेभाले ।। निरआसरे उल्टेबहतेहैं ब्रह्मांड
में नद्दीनाले । निरआसरे दामिन दमकें चलें निरआसरे
बादल काले ।। निरआसरे वर्षे आषाढ़ सावन भादों उसके
घर से । निरआसरे पीवें योगीजन सुधा जिन्हें सद्गुरुदरसे।
निरआसरे स्वांतीकी बूँद जबप्राण पपैहा पानकरे । तभी
मिटै तृष्णा उसकी जब नारायणका ध्यानकरे ।। निरआसरे
हो मुक्त उसीसे वह मुक्तीकी खानकरे। निरआसरे हैं असोज
जोसारी वर्षामें पानकरे।। निरआसरे हो गजमुक्ता स्वांती
बूँद जबगज परसे । निरआसरे पीवें योगीजन सुधा जिन्हें
सद्गुरु दरसे ।। निरआसरे ब्रह्मा विष्णु और वो महेशउसमें
नहाते हैं । निरआसरे श्रीसूर्य किरणोंसे अमृत जल बरसाते
हैं ।। निरआसरे हैं नक्षत्र जो सब वर्ष वर्ष सुख पाते हैं ।
निरआसरे हैं चंद्रजड़ीको सदा पियूष पिलाते हैं । निरआसरे
गंगाजल बरसे शिवजो जटा खोलें कर से । निरआसरे पीवें
योगीजन सुधा जिन्हें सद्गुरु दरसे ।। निरआसरे दक्षिण में
कंचन गायत्रीने बरसाया। निरआसरे हैं शक्तिऔर हैं निर
आसरेउसकीमाया।। निरआसरे हैं आदि ब्रह्मायेदेवीसिंहने
छंदगाया। निरआसरे हैं बनारसी जिसनेघटमें दर्शनपाया।
निरआसरे वो चिरंजीव किस किसकी लगन लगी हरिसे ।
निरआसरे पीवें योगीजन सुधा जिन्हें सद्गुरु दरसे ।।

लोक लोक की वर्षा बहेर-खड़ी

चन्द्रलोक से अमृत बरसे सूर्यलोकसे बरसे ज्ञान । आदि
ब्रह्मसे ब्रह्मज्ञान बरसे सोहं करते हैं पान।। इन्द्रलोकसे वर्षा
बरसे सकल सृष्टिका हो कल्याण । कुँवेर घरसे धन बरसे

पावें तो होवे धनवान । आषाढ़ सावन भादौ कुंवार ये चार महिने दो ऋतु जान । स्वातीसे बरसेमुक्ता औरअनेकऔषधी की वो खान । विष्णुलोकसे भक्ति बरसे पूजाजप तीरथऔर दान । आदि ब्रह्मसे ब्रह्म ज्ञान बरसे सोहं करते हैं पान ।। सत्यलोकसे धर्म बरसता है सत्यबात बोले गुणवान । स्वर्ग लोकसे स्वरूप बरसे सुन्दरताई तनमें जान । शिव के लोक से तप बरसेजो करे सोहोवे भानु समान । वेदसे बरसे गायत्री निशिदिन जपते हैं संत सुजान । गोलोकसे गोरस बरसे लूटें ब्रजमें श्रीभगवान । आदि ब्रह्मसे ब्रह्मज्ञान बरसे सोहंकरते हैं पान । सात स्वर्ग से गंगा बरसे जिनमें सब करतेस्नान । यमके लोकसे यमुना बरसे वेदशास्त्र ये कहैं पुरान । शक्ति लोकसे सरस्वती बरसे उत्तम जिसका है सुस्थान ।। सोमेरी जिह्वा पै बैठके भाषामें करै वेद बखान । गुण बरसे गण-पतिलोकसे औ विद्याकाहो सन्मान ।। आदि ब्रह्मसे ब्रह्मज्ञान बरसे सोहं करते हैं पान ।। बरसे राग गंधर्वलोक से करें अप्सरा सुन्दरगान । सदां वो गावें भगवत के गुण सुनने से हांवें पवित्र कान ।। देवीसिंह कहै बनारसी ख्यालसे बरसे मीठोतान । कही ये मैंने निर्गुण वर्षा सुनो लगाओ ब्रह्म में ध्यान ।। सर्वलोक मेरे शरीरमें मुझे दिखावें कृपानिधान । आदिब्रह्म से ब्रह्मज्ञान बरसे सोहं करते हैं पान ।।

बहेर-खड़ी (उत्तर)

कर्म करै और फल नहीं चाहै यही तो है सन्यास का कर्म । धर्म अधर्मको समकर देखें इससे परे न कोई धर्म ।।
करें आत्माको वो ग्रहण और शरीर का त्यागें अभिमान ।
सोवतजागत सुमिरण में रहैं सदा रूप देके निर्वान । निर्बल

से नहिं लडें लड़ाई उससे जोकोई होवे बलवान । कुबेरउनकी आज्ञामें रहें भिक्षासे करते गुजरान ।। जीव ब्रह्मको एक समझते तनिक न उनके मनमें भर्म । धर्म अधर्म को समकर देखें इससे परे न कोई धर्म ।। गुह्यज्ञानकी बात करें अज्ञानी नहिं समझन पावें । येही बोलनेमें है मौन सब अर्थ तुम्हें हम समझावें ।। भोजनतो ये क्षुधाकरें हम कुछनहिं खाँय औरसब खावें । बैठेरहें एक आसनपर योगमार्गसे फिर आवें ।। लोहे से कड़ा और मन मोमसेभी है जिनका नर्म । धर्म अधर्मकोसमझ कर देखें इससे परे न कोई धर्म ।। इन्द्रीका जो धर्म है वो वह अपना अपना करती हैं भोग । अपनेको कर्ता नहिं माने योग विषे हैं येही भोग ।। शरीरका दुखसुख है आत्मासदा अवध्य है सदा निरोग । जिनका ऐसा ज्ञान उनको एकहि है संयोग-वियोग ।। ब्रह्मज्ञान की बातका कोई ब्रह्मज्ञानी पावे मर्म । धर्म अधर्मको समकर देखे इससे परे न कोईधर्म ।। शरीर को धारे हैं परवो आपनहीं बनते काया । माया से हैं वोही रहित जिनकेबीच योगमाया ।। देवीसिंहयेकहें जिसनेश्रीकृष्ण का गुणगाया । बनारसी सुन उस प्राणीने सहजहि परमधाम पाया ।। जिनके मनमें द्वैत नहीं है वो क्या जाने धर्मअधर्म । धर्मअधर्म को समकर देखें इससे परे न कोई धर्म ।।

योगाभ्यास-बहेर नई

मैं सत्य सत्य कहूँ हाल सुनो अहे बाल तनका बाया ।
हैब्रह्मांडमेंबादशाहब्रह्मसोईआदिज्योतिभगवानसोयम भगवान
जहाँ महत्तत्व है पवन करो तुम श्रवण सोई है शक्त ।
रहे पारब्रह्म के संग वह है अर्द्धंग बात कहूँ सत्त ।।
हैं शोशमें श्रीमहादेवजी उन्हींको सेवकरोतुम भक्त ।

हैं वही ब्रह्मके खवास हाजिर रहैं वहां हर वक्त ।।
सुन प्यारे जहँ तरह तरह के राग रंग होते हैं ।
सुन प्यारे उस बादशाह के सभी संग होते हैं ।।
दोहा-हैं चार वो उसके वजीर, उनका जुदाजुदा सुननाम ।
ब्रह्मा और विष्णु वो रुद्र करें, श्रीगणेश पूरण काम ।।
ये अगमअगोचर छंद हरफ कड़ी बन्द ज्ञानविज्ञान ।
हैब्रह्मांडमेंबादशाहब्रह्म रसोईआदिज्योतिभगवानसोयमभग०
दो नयन हैं चौकीदार बड़े हुशियार फिरें दिन रात ।
हैं खबरदार दो कान इधर धर ध्यान खबरले जात ।।
नासिका मालनीदोई लिये खुशबोई पुष्प और पात ।
वह ब्रह्म करे सब भोग कही ये महायोग की बात ।।
तोड़ा-सुन प्यारे ये जिहवा पढ़के सभी वो हाल सुनावे ।
सुन प्यारे और कण्ठ गन्धर्व राग रागिनी गावे ।।
दोहा--हैं मुख में बत्तीस दाँत सोई हैं हीरे मोती लाल ।
वह ब्रह्म पहनके भूषण सुन्दर सदा रहैंखुशहाल ।।
दिल दलेलरहता संग करै वह जंग युद्ध घमसान ।हैब्रह्मांड०
पढ़ मुखसे चारों वेद खोलदिया भेद सौं चारों धाम ।
ऋगवेद हैं बद्रीनाथ और श्री जगन्नाथ हैं श्याम ।।
तीसरा अथर्वण वेद न कर निषेध भजो हरनाम ।
सोई रामनाथ रमि रहे गुणीजन लहें सिद्ध हो काम ।।
तोड़ा-सुन प्यारे हैं यजुर्वेद में बनी द्वारकापुरी ।
सुनप्यारे कहो अलख निरंजन छोड़ो बातें बुरी ।।
दोहा-मन घोड़ेपर असवारी करता ब्रह्मबादशाह राजा ।
हिरदे हाथी को पारब्रह्म ने खूब तरह से साजा ।।
दमदिवान दफ्तरदार बड़ा पुरकार ज्ञानकी खान।हैब्रह्मां०

हैं तरह तरह के महल औ सुन्दर पहल हीरों से जड़े ।
औ सत्तर दो बहत्तर खाने नव दरवाजे खड़े ।।
दशमी खिरकी में आप रहा वो व्यापशब्द ध्वनि झड़े ।
बाजेनाद बीन और शंख आपनो शंख रहे निम छड़े ।।
तोड़ा—सुन प्यारे है शीशमहल में आदि ब्रह्मका बासा ।
सुन प्यारे अपनी इच्छाकर उसने जगत प्रकाशा ।।
दोहा—वह परात्पर है आप और नहिं कोई उससे परे ।
औ अव्यय अविनाशी सन्यासी नहिं जन्में नहिं मरे ।।
है मुक्ति उसीके युक्तिसे कियानाम निशान । हैब्रह्मांड० ।।
है पाँच तत्व का तख्त बना शुभवख्त तीनगुण भरा ।
सब है मायाका खेल उसी में मेल निरंजन करा ।।
लें तेज ताजको ईश आप जगदीश शीश पर धरा ।
जो धरता उसका ध्यान ज्ञान से वो भवसागर तरा ।।
तोड़ा—सुन प्यारे रही कलाकी कलंगी झलक फलकसे दूनी ।
सुन प्यारे उस पारब्रह्म की अगम ज्योति है धूनी ।।
दोहा—तनतख्तके ऊपर बैठबादशाहकरै अदल इन्साफ ।
चाहे जिसको दे सजा करै वह चाहे जिसको माफ ।।
हरनिराकारनिराधारवो है अपरंपारउसेपहचान । है ब्रह्मांड०
सब रोम रोम है फौज कर रही मौज कटे और बढ़े ।
कोई पीछेको हटजाय कोई बढ़ जाय कोई जा चढ़े ।।
हैं दोनों हाथ हथियार करैं सब कार हरी ने गढे ।
और शब्द नकारा चोबदार चित नाम नकीब पढ़े ।।
तोड़ा—सुन प्यारे ये फ फकीरा पारब्रह्म से मांगे ।
सुन प्यारे नाभी में सर है भरा कमल सब लागे ।।
दोहा—बिनलिंगभग पैदाकरै सकल संसार ब्रह्मब्रह्मचारो ।

और आपी आप हैं एक नहीं वोपुरुष नहीं वो नारी ॥
हैं हलकारे दो पाँव कहे नाम देवीसिंह जवान।
है ब्रह्मांडमेंबाहशाहब्रह्मसोई आदिज्योति भगवानसोयम भग

योगाभ्यास गोपिनी बहेर-छोटी

है ऊपर कुआँ औनीचे जिसके डोरी । पानीभरती पनि-
हारिन चोराचोरी ॥ डोराके ऊपर घिरनी चक्कर खावे।
वो मधुर-मधुर ध्वनिबोले मोहिं सुहावे ॥ जब तलक वो
डोरीकुँएमें आवेजावे। तबतलक कुआवो नहीं सूखनेपावे॥
उसकुँएके ऊपरखड़ोहजारोंगोरी। पानी भरती०॥ मुखबंद
कुँएका रहै और पानी दरशे। ओह देखे जिसकी डोर जगी
रहै हरसे ॥ जब पनिहारिन कुछ काम न राखे घरसे। तब
अमृतजलको छके छुटे सब डरसे ॥ वह नितउठ गागर भरे
बनीरहै कोरी। पानी भरती०॥जब उलटा डोलवह जायतो
पानी आवे ॥ फिर सींचे अपना बाग अमर फल पावे। है
काहेका वोह डोल औ कौन बनावे ॥ जो पूरा योगी होयतो
मोहिं बतावे। उसकुएँके ऊपर नहीं चले बरजोरी। पानी
भरती०॥ उस कुएँ पै गंगाजमुना सरस्वती हैं॥ औरमहादेव
अविनाशी पारवती हैं। नौ नाथ चौरासी-सिद्ध और बाल
यती हैं ॥ नाना प्रकार की उसमें बेलपती हैं। है राह वहां
को बहुते साँकर खोरी ॥ पानी०॥ लाखों पनिहारिनएक है
जहाँ पनिहारा। उस पनिहारेने सबको भरदी धारा॥जिसने
पाया वहनीरतो जन्मसुधारा। कहे बनारसीउसकीगति अप-
रंपारा। वोन्हावे उसमेंजिसका पंथ अघोरी। पानी भरती०।

उत्तर बहेर-छोटी

ब्रह्मांड कुआं और श्वासा जिसकी डोरी। जिह्वा पनिहा-

रिन पिये अमीरस चोरी ॥ जोगुरु देवे उपदेशकानमें आप।
तो जिह्वा उसका करती गुपचुप जाप ॥ सुमरन करने से
दूरहोय संताप। ये वो चोरीहै जिसमें कुछ नहीं पाप॥ मन
मगन रहै गुणगावे नन्द किशोरी। जिह्वा पनिहारिन० ॥
कर प्राणायाम जब उलटा चढ़ावे। तबवह अमृत फिरउसी
डोलमें आवे ॥ मुँह उलटा उसका रहे बूँद टपकावे। हो
जन्ममरणसे रहित अमर होजावे। मैं सत्यसत्य कहूँ हाल
बात सुन मोरी। जिह्वा पनिहारिन०॥ हैं नव-दरवाजेखुले
औ दशवाँ बन्द। जहाँआदिज्योति है पूरण परमानन्द ॥ जो
देहभावको जोड़रहे निर्द्वन्द। वोहदेख उसको कटेजगतका
फंद ॥ निशिदिन खेलैं फिर आप ब्रह्मसंग होरी। जिह्वा
पनिहारिन०॥ अनहद बाजों के बीचमें घिरनी डोले। हर
श्वास श्वासपर मधुर मधुर ध्वनि बोले ॥ जो ज्ञानगंगते
अपनी आतमा धोले। वह देखे जो भीतरकी आँखें खोले ॥
ज्ञानीसे कालभीनहींकरे बरजोरी। जिह्वा पनिहारिन०। सब
सृष्टि है पनिहारिन औब्रह्म पनिहारी। है सबके बीच में
उसीका देख पसारा ॥कहैं देवीसिंह वो सबमें सबसे न्यारा।
जिसजिसने उसको लखावो उसका प्यारा ॥ उसनिरमेंकाया
बनारसी बोरी। जिह्वा पनिहारिन पिये अमीरस चोरी॥

दवा नारायणके नाम की-बहेर खड़ी

हर एक ढूँढ़ते हैं जंगल में दवा रसायन को बूटी।
नारायण है संजीवन भाई वो बूटी हमने लूटी ॥
कोई ढूँढ़ता उस बूटीको जिसमें पारा तुरत मरे।
कोई खोजता जड़ी को जो तन काया के दुःख हरे ॥
बहुत लोग खोदें पृथ्वीको जो वृक्ष काटते हरे भरे।

उनकोभी फिर यम काटेगा कहे शब्द ये खरे खरे ।।
हरी हरी बूटी है समझो हरी नाम है सबसे परे ।
उस बूटी को जिसने पाया वे भवसागर सहज तरे ।।
राम रसायन पाई हमने औ रसायन सब छूटी ।
नारायण है संजीवन भाई वह बूटी हमने लूटी ।।
कोई कहे हम सिंदरफ मारें और काढ़ें गंधक का तेल ।
कोई देखते जड़ी बिरंगी को ढूँढते अम्मर बेल ।।
हमने सबको देखा यारो ये तो हैं सब झूँठे खेल ।
अमर नाम है दत्तनिरंजन उसको अपने मन में मेल ।।
मनको मारके बनाले कुस्ताजो गुजरे रहे दिलपरझेल ।
तनधोशोधके शुद्धकरो तुमतजोझूँठऔर तजोझमेल ।।
जौन शख्स फूँके धातुको उनके हियेकि हैं फूटी ।
नारायण है संजीवन भाई वह बूटी हमने लूटी ।।
कोई मारते अभरख ताँबा कोई फूँकते हैं हरताल ।
हमने अपने मनको मारा मिले हमें गोविंद गोपाल ।।
कोई कहै हमचाँदी मारें जिससेहो कुछ धन औरमाल ।
इन कर्मों को जोकोइ करता उसका होता हालबेहाल ।।
कोई कहेहम सोना मारें और करैं पैसा को लाल ।
ठगठग के लूटें दुनियाको उसकोएकदिन ठगेगाकाल ।।
बहुत घोटते खरल में धातू सन्तों ने काया कूटी ।
नारायण है संजीवन भाई वो बूटी हमने लूटी ।।
कोई मारते हैं कलईको जिसमें होवे पुष्ट शरीर ।
घरको फूँकके तवाह किया वो अमीरसे होगये फकीर ।।
साधू का नहिं धर्म जोकि मारें धातू करके तदबीर ।
कहे देवीसिंह हरी हरी कहोयहजिह्वा ह्वैगी अकसीर ।।

खाकसार की जवाँ रसायन इसमें है हर एक तासीर ।
जवाँसे वह मुर्दे को जिलादे जवाँसे दे डाले जागीर ।।
बनारसी ये कहै हमारी रामनाम हैगो बूँटी ।।
नारायण है संजीवन भाई वह बूँटी हमने लूटी ।।

कामधेनु-बहेर लंगड़ी

यह काया है कामधेनु कर प्रेम प्रीति हमने पाली ।
सभी पदारथ हैं इसमें इच्छा फल देने वाली ।।
मगन रूप मस्तक झलके संतोष सुमत के सींग खड़े ।
नहीं वो मारें किसी से नहींमरें और नहीं लड़े ।।
हीरे मोती लाल और हर एक रतन रसना में जड़े ।
कृपा और करुणा के दोनों कान नहीं छोटे न बड़े ।।
त्रय गुणके हैं तीन चिन्ह कहिं श्वेतश्याम कहिंहैं लाली ।
सभी पदारथ है इसमें इच्छा फल देने वाली ।।
दया धर्मके दृग दोनों जैसे रवि शशिका उजियाला ।
बनी नासिका नाम निश्चय रूपी सबसे आला ।।
अपार महिमा का मुख उसमें मंत्र रूप फिरती माला ।
अपनी काया को हमने कामधेनु करके पाला ।।
उस जिह्वा और दिव्य दंत कल्याणकंठ रेखा काली ।
सभी पदारथ हैं इसमें इच्छा फल देने वाली ।।
परमतत्त्व की बनीपीठ और उग्रतेज का उद्र भला ।
परमारथ की पूछ हिलरही करे रह एक कला ।।
चतुराई के चारों थन में सम दृष्टि सम दूध ढला ।
चरचारूपी चरण चारों सुन्दर सबसे अबला ।।
जगमगात हिरदे में जगमग ब्रह्म जोतिकी उजियाली ।
सभी पदारथ हैं इसमें इच्छा फल देने वाली ।।

हमने धार दुहो धीरज की अब अपना उद्धार करा।
छान छान के दूध को हिरदे की हांडी में भरा ॥
ज्ञान से गरमकिया इसको संजीवन जामन बीचधरा।
जमा दही को मथा छल छिद्र छाछ नहिं रही जरा ॥
मुक्तिरूप माखन पाया हुई पूरी मनसा मन वाली।
सभी पदारथ हैं इसमें इच्छा फल देने वाली ॥
जो माँगे सो पावे इससे ऐसी काया कामधयन।
विश्वरूप है जो देखे इसको उसको होय चयन ॥
बनारसी कहे इसे देख कर खुशी हमारे हुए नयन।
रंग रंग की पड़े वाणी और बोले मधुर बयन।
सबको मनशा पूरण करती कोऊ नहिं फिरे खाली।
सभी पदारथ हैं इसमें इच्छा फल देने वाली ॥

ख्याल वेदांत-वहेर जी की

सबके बीच में है और देखाई नहीं दे गोविन्द ।
हुआ दुनियाँ को मोतियाबिन्दजी ॥
भीतरकी गईफूट देह बाहरसे देखलाई, कहें बापहैं ये माईजी
मरजावेतोकोईसाथनहिंचलेबहनभाई, याचाचाहोयाताईजी
झूठ बात नहिं बोले बोले सत्यबचन ये रिंद ।
हुआ दुनियाँ को मोतियाबिन्दजी ॥
गोदी में लड़का औ ढिंढोरा शहर में फिरवाते, मसलजो है
वोही हम गातेजी । इसीतरह से घट में हर बाहर खोजन
जाते मिलें नहिं उलटे फिर आते जी ॥
मुसलमान मक्के जा भटके हिन्दू भटके हिन्द ।
हुआ दुनियां को मोतियाविन्दजी ॥
अरे मूढ़ अज्ञान, तू क्योंभटकेहै चारों धाम, तेरे है घटमें आत्म

रामजी । उन्हें तू क्यों नहिं देखे जो हिरदे में करे विश्राम,
नाम जप तौ तेरा हो नामजी ॥
घट में आत्मा सूझ पड़े नहिं योंही गमाई जिन्दगी ।
हुआ दुनियाँ को मोतियाबिन्दजी ॥
जगन्नाथ और बद्रीनाथ सब हम भी फिर आये, कृष्ण
इस हिरदे में पायेजी । देवीसिंह ने ज्ञान ध्यान के सदा छन्द
गाये राम के चरणों चितलायेजी ॥
बनारसी ने ज्ञानदृष्टि से दिया जगत् को नींद ।
हुआ जगत को मोतियाबिन्दजी ॥

शुद्ध वेदान्त–वहेर जी की ।

नहिं करो मैं ग्रहण और कुछ त्याग न हम से होय ।
न पाया कुछ न दीना खोयजी ॥
नहिं रेनि को सोवैंहम और दिन में नहिं जागें, लड़ाई लड़ें
न हम भागे जी ॥ ज्ञान अग्नि में दग्ध करें हम कर्म न तन
दागें न देवें दान न कुछ मांगेंजी ।
सुख पावें तो हँसे नहीं दुःख में देवें रोय ।
न पाया न कछु दीना खोय जी ।
नहिं रैन वहाँ होय और जहाँ दिन का नहीं प्रकाश, हमारा
निशि दिन वहीं निवासजी । नहीं किसी से दूर बसें हम नहीं
कोई के पास, न स्वामी बने न कोई के दासजी ॥
अनहोनी होनी से परे हम सोहं पद है सोय ।
न पाया कछु न दीना खोय जी ॥
नहिं शत्रु से विरोध अपना मित्र से नहीं सनेह, नहीं हम
देह हैं नहीं विदेह जी । वन में अपना बास नहीं और नहीं
हमारे गेह, न चाहे धूप न चाहे मेहजी ॥

मात पिता दारा सुत भगिनो, सब हैं और नहिं कोय
न पाया कछु न दोना खोयजी ॥
धर्म में हम नहिं पुण्य चाहै, और अधर्ममें नहिं पाप, न
वरदान न कोई को शापजी। जिधर को देखें एक ब्रह्म सर्व
रहा है व्याप, अलख को लखा अलख भये आपजो ॥
बनारसो कहै एक है वह मत समझो उसको दोय।
न पाया कछु न दोना खोय जो ॥

श्रीकृष्ण और शिवजी का स्वरूप वर्णन-बहेरजी की

शिव गौरा को सब कोई कहते ये दोउ एकी अंग।
कृष्ण शिव हम कहते अर्द्धंग भला ॥
आधे शीश पर जटा औ आधे लटके लट काली।
आधे शिव आधे वनमाली जी भला ॥
आधे मुख वेदांत और आधे वेद की ध्वनि आली।
करें आपस में बोला चाली जी भला ॥
दोहरा—कहें गौरजा सुनो लक्ष्मी देखो पति का रूप।
ऐसा रूप नहीं देखता सो देखो आज स्वरूप ॥
आधे शिर मुकुट आधे शिर गंग भला।
आधे शीशपर चन्द्र और आधे चन्दन का है खौर ॥
इधर मुरछल और उधर हो चौंर भला।
आधे मुख माखन और आधे धतूरे का है कौर ॥
आधा अंग श्याम आधा अंग गौर भला।
दोहरा—आधे अंग में भस्म लगी आधे अंग लगी सुगंध
आधा अंग है क्रोधवंत और आधा अंग अनंद
आधे अंग वस्त्र आधा आधा अंग नंग भला ॥
आधे मुख मुरली बाजे आधे मुख बाजे नाद।

न उनका अन्त न उनका आदि भला ॥
आधे मुख अमृत और आधे हलाहल का है स्वाद ॥
दूर करें क्षण में विघन विषाद भला।
दोहरा—आधे अंग में सर्प और आधे अंग में भूषण हेम ॥
आधा अंग है कर्म रहित और आधे अंग में नेम ॥
आधा ब्रह्मचर्य आधा शरभंग भला।
आधे कमर में लंगोटा आधे कटकछनी कसे ॥
दोनों अंग एक अंग में बसे भला।
आधा आसन गरुड़ पर आधा नंदीगण पर लसे ॥
ये शोभा देख मेरा मन हँसे भला।
दोहरा—अर्ध स्वरूप है महाकाल और आधा पालन हार ॥
काशीगिर ये कहै उनकी महिमा अगम अपार।
देख सुर नर मुनि होगये दंग भला ॥

एक रूप में चार सूप-बहेर लंगड़ी

आधे अंग में कृष्ण लक्ष्मी आधे में शिव पारवती।
एक अंग में रूप है चार ये वर्णन करैं यती ॥
एक समय मैंने भक्ति कर कहा हरीहर से भाई।
एक अंग में मुझे तुम चार रूप देव दिखलाई ॥
शिव के बाँये गौर दाहिनी श्री लक्ष्मी यदुराई।
भक्त के बस हैं प्रभू यह महिमा वेदों ने गाई ॥
ऐसाई रूप दिखाया मुझको लक्ष्मीवर और गवरपती।
एक अंग में रूप हैं चार ये वर्णन करैं यती ॥
श्रीकृष्ण के मोरमुकुट शिव का जूड़ा बँध रहा विशाल ॥
गौरको सोहै हार फूलों के रमा रमा के मुक्तामाल।
शिव धारें भस्मी माथे पर श्रीकृष्ण के केसर भाल ॥

रमा को सोहें वह भूषण दिव्य गवर के लपटे व्याल ।
चार वेद चारों की अस्तुति करें न पावें पाव रती ।।
एक अंग में रूप हैं चार ये वर्णन करें यती ।
श्रीकृष्ण के शंख हाथ में शिवजी करमें लिये कपाल ।।
रमा बजावें वो चुटकी गौरी दो कर से दें ताल ।
मनमोहन की मुरली बाजे शिवका डमरू बजे धमाल ।।
गौर के माथे पँ चन्दन रक्त रमा के बिन्दी लाल ।
शिवयोगी हरि ब्रह्मचारी लक्ष्मीकुँवरी और गौरसती ।।
एक अंग में रूप हैं चार ये वर्णन करें यती ।
श्रीकृष्ण के चक्र सुदर्शन शिवजी करमें लिये त्रिशूल ।।
पार्वती के हाथ में खंग रमा के कमल का फूल ।
देवीसिंह ने कहा ख्याल यह वेद पुराणों के अनुकूल ।।
बनारसी के छन्द में कभी न हरगिज निकले भूल ।
जो इस पदको सुने औ गावे उसकी होजाय तुरत गती ।।
एक अंग में रूप हैं चार ये वर्णन करें यती ।

हरिहरात्मक मूर्ति-बहेर जीकी

श्रीकृष्ण शिव एक रूपहैं रहते एकी संग, हरिहर दोनों है अर्द्धंग भला। आधा अंगहै श्रीकृष्ण का आधा शिवका जान, कहा ये परम पुरातन ज्ञान भला ।। कृष्ण करैं शिवका स्मरण शिव धरे कृष्णका ध्यान, आत्मा एक, एक स्थान भला ।

दोहा-शिवजी साधें योग, कृष्णजी करते भोग विलास। योग भोग दोनों एकीदोनोंका ब्रह्ममें बास।। वह पहिने भूषण वह रहें नंग भला । कृष्ण पढ़ें गीता और शिवजी पढ़ें आप वेदांत, वोकरते क्रोध वो रहतेशांत भला।।कृष्ण करैं क्रीड़ाब्रज में शिव रहेंसदा एकान्त, दोनोंकी सुन्दर शोभा कान्ति भला।।

दोहा-शिवका सुमिरण करते करते कृष्णजी होगये श्याम।। शिवजी होगये श्वेत जपाकरते हैं कृष्ण का नाम।। ऐसा नहीं कोई का सत्संग भला।। कृष्ण बजावे मुरली मुखधर शिवजी गातेगान। निकले दोनोंमें एकी तान भला ।। कृष्ण भरें भंडार जगत् के शिव देते वरदान, करें दोनों जिनका कल्याण भला।।

दोहा—कृष्ण करैं वैराग तीव्र और शिव धारैं सन्यास । वो उनके सेवक हैं और वो हैंगे उनके दास ।। करैं राक्षसोंका दोनों ढंग भला ।। कृष्ण सोवते शेष की सेज्या पर करके आराम, करैं शिव मशान में विश्राम भला । कृष्ण करैं शिव की सेवा शिवकरें कृष्ण का काम ।। रटो दोनों याम भला ।।

दोहा-शिवपूजें विष्णु के चरणकरें कृष्ण लिंगपूजा । हरी हरातम है यक मुरती और नहीं दूजा ।उनके शिरमुकुट उनके शिर गंगभला।।त्रयीगुणसे शिवरहित कृष्ण हैं तीनलोकसे परे, भजो चाहे हरि भजो चाहे हरे भला। शिवने त्रिपुरासुर को मारा कृष्णने कौरव मारे ये दोनों कोऊ से नहीं डरें भला।।

दोहा—शिवके संग रहैं सदा योगिनी और भूत बैताल ।। कृष्ण लिये ग्वालिनीसंग में ब्रजके सारे ग्वाल। वो पीते दूध वो पीते भंग भला । कृष्ण बने गौराजी शिवजी बने लक्ष्मी आप । न उनको पुण्य न उनको पाप भला । कृष्ण हरै वाधा तनकी शिव दूर करें संताप, मेरा मनदोनोंमें रहा व्याप भला।

दोहा-कृष्ण बने नन्दीगण शिवजी गरुड़ रूप लैधार ।। वो उनपर बैठे और ओ होते उनपर असवार।। ये दोनों एकऔर बहुरंग भला ।। कृष्ण पारथी पूजें शिवजी पूजें शालिग्राम। बना दोनोंका सुन्दरधाम भला। शिवकी काशीबनी श्रीकृष्ण का गोकुलग्राम । देवीसिंह दोनों का ले नाम भला ।।

दोहा-शिव का शिवाला बना कृष्ण का है ठाकुर द्वारा।
बनारसी ये कहें मुझे दोनों का नाम प्यारा। उठें हैं मन
यही तरंग भला।

लक्ष्मी गौरा का–अभेद छन्द

वोही लक्ष्मी वही गौरा जो चारवेदमें देखा। शक्तिहै ए
जुदे दो वेषभला ।। विष्णुके संगरहे सदा लक्ष्मी शिवके सं
पार्वती। लखी नहिंजाय दोनोंकी गतीभला ।। लक्ष्मीके प
इंद्रजीतहैं गौराके पति यती। लक्ष्मीकुँवारी गौरा सतीभला।
दोहा-लक्ष्मीको चढें पुष्प और गौराकोचढें बेलपती। उनक
बुद्धि निर्मल है और है उनकी मती-सुमती ।। रूप दोनों क
अलख अलेखा भला। लक्ष्मीके मस्तक पर सोहै सुन्दर बें
भला। गौरीके मस्तक चन्द्र विशालभला ।। लक्ष्मीके उरप
हार है जिसमें मोती लाल। गौरीके कंठ मुंडकी माल भला
दोहा-लक्ष्मीके दोनों करमें हैं कड़े जड़ाऊ पड़े। गौरीके क
सोहैं कंगन दोनों के भागहैं बड़े। लिखी विधनाने ऐसी रे
भला। लक्ष्मी सेवक है सोसब करत सुन्दर भोग ।। गौरी
सेवक साधें योग भला ।। लक्ष्मी को जो सुमरे उनको क
न व्यापे सोग। गौरि को भजे सो रहे निरोग भला ।।
दोहा-क्षीरसिंधुमें बसे लक्ष्मीनारायणके पास ।। गौरिब
शिव संग जहाँ सुन्दर पर्वतकैलाश। भक्तजन लेते उन्हें पर
भला।। लक्ष्मीका शीतल स्वभाव है जल और चन्द्रमा जान
गौरिको समझो अग्निभानु भला ।। लक्ष्मी के हैं पास में ही
लाल मोतिनकी खान। गौरि की विभूतीहै धनवान भला।
दोहा-लक्ष्मीमें बसें गवर, गवरमें करै लक्ष्मीबास। सुनोइध
धर ध्यान तुमहमसे इनकी उनकी रास।।है उनकोकुम्भऔ

उनकी मेष भला। श्रीलक्ष्मी पहने तनुके ऊपर बस्तर लाल।।
गवरजाओढ़ रहीं मृगछाल भला। कहीं भार्या बनी कहींजननी
हो करें प्रतिपाल।। बनो कहीं अन्त काल का काल भला।।
दोहा-ब्रह्मालिखतेथके शेषजीने नहिंपाया पार। बनारसीये
कहेंकहूँमैं कहाँतलक विस्तार, मुझेदोनोंकी भक्ति विशेषभला

ख्याल अद्भुत–बहेर जी की

जो चाहे सो करै प्रभू उनकी गति लखी न जाय। कर्म के
लिखे को देय मिटाय जी ।। कितने ही मरगये तो उनको पलमें
दिया जलाय। कालकोदेखै कालै खायजी।। लूला चढै पहाड़के
ऊपर बिना पौरुषसे धाय। एक तृण में त्रैलोक समायजी।।
सेतु बांधके समुद्रमें हरि पत्थर दिये तराय। कर्मके लिखेको
देय मिटायजी।। मूरख चातुरको देता एक पलमें वेद पढ़ाय।
जिये ओ सदा जो विष को खायजी। मीन धूप में मगन रहै
नहीं पानी उसे सुहाय ।। कहो कोई इसको अर्थ लगाय जी।
लोहा कंचन बने जो उसको पारसदेव छुवाय कर्मके लिखेको
देय मिटाय जी ।। विधवा होय सुहागिन उपजे पुत्र तो करै
सहाय। आगको पानी देय जलाय जी ।। भूखा भोजन नहीं
करे और पेट भरा सब खाय। शेरको भेड़ीदेय भगायजी।।
भृंगी कीड़े को अपने सम लेता आपबनाय ।। कर्मके लिखेको
देय मिटायजी। मार्कंडेयजीबारा बरसकी आये उमरलिखाय।
लिखी विधनानेबहुत चितलायजी। सोतो होगये चिरंजीव मैं
सत्य सत्य कहूँ गाय।। प्रभूकेआगे कर्म लजाय जी। बनारसी
कहै नरसे प्राणी नारायण होजाय। कर्म के लिखे को० ।।

सिद्धान्त-बहेर जी की

चार फरिस्ते हुकममें हाजिर रहैं मेरे दरबार। लिये वो

चार चार तलवारजी ॥ जिधर इसारा करूँ उधर दलडा
मार। करेंवोदुष्टोंको मिसमारजी॥आँख उनकी लाल बनी
रहैं उतरे नहिं खुमार। है ताकत उनमें बिना सुमार जी ॥
कोई न पापी बचैं जड़ें जिस वक्त वो कातिलवार, लिये वो
चार चार तलवारजो। कोई अमर छेड़े औकरै कुछ मुझ से
दारोमदार॥ दिखावें उसीको वोःफिर दार जो। हत्यारोंको
तनसे शिर करदें दम्में नादार ॥ हुकुमये है दावरदादारजी।
मशरिकसे मगरिब तक घूमेंचारों तरफवो चार लियेवो चा
चार तलवारजी। कोई नहीं जीते उनसेजो लड़ेसो जावैहार।
करै वो चारोंतरफ गोहारजी ॥ जिस जिसको वो मारेंउसको
कर डालें आहार। चोट उनकोक्या सके सहारजी ॥ एकहाथ
से काटेंवह काफिरको लाखतलवार॥लिये वो चारचार तल
वारजी।नाम एकका सुनो शनिश्चर दूजे मंगलाचार ॥ तीसरे
को समझे एकतार जी।एक बृहस्पति सदा सुखीरहैं मेरे चार
यार। उतारेंकुल पृथ्वीका भारजी। मेरे कहेसे दुर्बुद्धिका क
डालेंसंहार। लिएवो चारचार तलवारजी॥काँप उठै आसम
जिस घड़ीमारें वहकिलकार। मरें सबदुनियाके मक्कारजी।
बनारसी कहैं तीनलोक में मचै वह जय जयकार। बचै नहिं
कोई भी बदकारजी ॥ सतयुग को दे राज और कलयुग क
डारे फटकार। लिए वह चार चार तलवार जी।

श्रीकृष्ण के लट की स्तुति

श्री गिरिधर ने लट काली लटकाली आनन परआला
अति विचित्र लटकी लटक लटक कर अमृतरस को चाखें
ज्यों सर्प ओस जिह्वासे चाटके प्राणको अपने राखें॥ शशि
मंडलकी सी शोभा उपमा वेदभो ऐसीभाखें। राधे सखिय

से कहैं घूमकर मन को मेरे सुलाखें।

तोड़ा—मोहनी अलकन में बसी-छवि भाँति-भाँति की
फँसी। मानो बने कृष्ण महेश पहनकर नागनकी सी माला।
श्रीगिरिधर ने०॥ कोई बांबीमें से लपक चलें कोई गिड़ली
मार के बैठे। कोई उगलके मनको खड़े और कोई संगनारके
बैठे॥ कोई फनसे फुफकारें और केंचली उतार के बैठे।मानों
विष भरे भुजंग वह मलयागिरि विचार के बैठे॥

तोड़ा—कोईश्वेत लाल कोई पीलेरंग रंगके सर्प रंगीले।
रोली केशर चंदनसे चर्चके अद्भुतरंग निकाला। श्रीगिरि-
धर० ॥ उपमा एक और कहूँ जो सुनो कोउ कविसे कही न
जावै। मानों कजली वन से सुगन्ध नाना प्रकार की आवै॥
एक तो मन उलझा काव्य में दूजे कृष्ण की लट उलझावै।
जो कुन्ज कुन्ज में परदेशी भूला नहिं रस्ता पावै।

तोड़ा-हरिकी लट भूलना वीरा-भूले ब्रजके नरनारी। जो
प्रेमजाल में फँसा वहीं वह बसा न गया निकाला। श्रीगिरि-
धर ने० ॥ अति उत्तम छवि अकलन की सुन्दर श्याम घटा
दरसे। जब कृष्ण करै स्नान तो मोती झूम झूमकर बरसे॥
वो घूँघरवारे केश छाये चहुँ देश बसे अम्बर से। स्तुति कर
करके थके शेष और महिमा को जी तरसे॥

तोड़ा—जो इस पदको कोई गावै॥ वह मुक्ति सब पावै॥
कहै बनारसी भज राम कृष्णगोविंद और श्रीगोपाला। श्री
गिरिधर ने लटकाली लट काली आनन पर आला॥

ख्याल-अधर

कान्हा ने लट लटका के लटका लटका नया निकाला।
श्रीकृष्ण की अलकें अलख केशसे शेष लजत धरणीधर। घन

घटा देखकर चटत निशा अतिछकतकहत धरणीधर ।। काली काली लट कला करै चित हरत तकत धरणीधर । रसना सहस्त्र से रटन रटन दिन रात थकत धरणीधर ।।

तोड़ा-करसे गहकर छिटकाई-नागि देखलहराई । काली ने शंका-खाई-लेखना लिखना लिखत अलख जद दिखत कृष्ण की आला । कान्हाने०।।दृग चञ्चल चतुर हरीके,नेत्र लागत खंजनते नीके । करें लहर लकीरें लाल लगत कारे अंजनते नीके ।। गड़ गये कलेजे आय धायके चन्द्रकिरण तै नीके । रस सागर ते अति सरस हरन चित लगत हरिन ते नीके ।।

तोड़ा-शैर चलत नेत्रते तीखे जद लड़त दृगनते दीखे । हरि चरित्र कैसे सीखे।। कसकत हिरदे दिन रैन नयनते ऐन कलेजे शाला । कान्हा ने० ।। आनन का षट्दश चेला दिन्नते हीरे लाललजाये। दर्शन कारण षट् दर्शन आसन त्याग त्यागकर आये ।। शंकर इन्द्रादिक सहित चरण नंगे कर करके धाये। श्रीकृष्ण की लीला देख छन्द आनन्द से कथ कथ गाये ।।

तोड़ा—तन चन्दन हार चढ़ाये-अक्षत ले शीश लगाये। हिरदे चरणन चितलाये।। नन्दलाल कंसके काल काट दिया अन्धकार का तारा । कान्हा ने० ।। हर निरधार चार कर त्रयी तालके करता। षट् राग तीस रागिनी नारायण तीन तालके करता ।। हैं सच्चिदानंद आनंद काल कालके करता। है आदि अनादि अगाध कृष्ण अक्षय अकाल के करता ।

तोड़ा—कहै काशीगिरि हारे हर हर-दिन रैन ध्यान हृदय धर । रज चरणन की अंजन कर ।। कहा अधर छन्द धर ध्यान ज्ञान दे दान नन्द के लाला । कान्हा ने० ।।

श्रीकृष्ण के विश्वरूप की मूर्ति

नन्दनंदन ब्रजराजकी छविअब कोटिन भानु प्रकाशकरें। उद्दित करें चन्द्र कोटिन और कोटिन तम का नाश करें ।। कोटिन शीश नेत्र कोटिन अरु कोटिन कर्ण हरी के हैं ।। कोटिन हैं नासिका हरीकी कोटिन वर्ण हरीके हैं ।। कोटिन मुख कोटिन जिह्वा कोटिन गति शरण हरी के हैं । कोटिन भुजा उदर कोटिन अरु कोटिन चरण हरी के हैं ।।

शैर—कोटिन हरी के मुकुट हैं कोटिन हैं तिलक भाल । कोटिन हरीके कण्ठहैं कोटिन हैं मुक्ता माल।।कोटिन मणी हरी की हैं कोटिन हरी के लाल । कोटिन हरी के भाव हैं कोटिन हरीकी चाल ।। कोटिन पग पाताल छुवे अरु कोटिन आश आकाश करें । उद्दित करें०।। कोटिन नाम हरीके हैं और कोटिन गाम हरी के हैं । कोटिन कर्म हरी के हैं और कोटिन काम हरीके हैं। कोटिन ग्राम हरीके हैं और कोटिन धामहरीकेहैं।कोटिनशैव हरीकेहैं और कोटिन बाम हरीकेहैं

शैर-कोटिन हरीके वेद हैं कोटिन हरीके मन्त्र। कोटिन हरीके शास्त्र हैं कोटिन हरीके तन्त्र ।। कोटिन हरी की पूजा हैं कोटिन हरीके यन्त्र । कोटिनसे हरी अन्त्र हैं कोटिन से हैं निरन्त्र । कोटिन को सुख देंय हरी कोटिनके मन में त्रास करें । उद्दित करें०।।कोटिन इन्द्र हरी के हैं और कोटिन राज्य हरीके हैं । कोटिन हैं गंधर्व हरीके कोटिन साज हरी के हैं । कोटिन माया हरीकी हैं, कोटिन समाज हरी के हैं । कोटिन मित्र हरी के हैं कोटिन मुहजात हरी के हैं ।

शैर—कोटिन हरी के गज हैं और कोटिन खड़े तुरंग । कोटिन हरीके रथहैं और कोटिन हैं रथके संग।। कोटिन हरी

के वेष हैं कोटिन हरीके रंग। कोटिन हरीकी लहर हैं कोटिन
उठें तरंग ।। कोटिन हरी वैकुण्ठ करें चाहै कोटिन कैलाश
करें। उद्‌दित करें० ।। कोटिन हैं गोपिका हरी की कोटिन
ग्वाल हरी के हैं। कोटिन धेनु हरी की हैं कोटिन गोपाल
हरी के हैं। कोटिन सिन्धु हरीके हैं और कोटिन ताल हरी
के हैं। कोटिन रत्न हरीके हैं और कोटिन थाल हरी के हैं।।

शैर—कोटिनहरी के दैत्य हैं कोटिन हैं देवते। कोटिन
हरी के नाम को मुख से लेवते ।। हरी की नाव हैं कोटिन
कोटिन हैं खेवते। कोटिन हरीके चरणको हैं करसे सेवते।।
देवीसिंह कहै बनारसीके घटमें हरी निवास करें। उद्‌दित०।।

श्रीसीताजी के वियोग में-बहेर लंगड़ी

श्रीसीताजीके वियोगमें भये राम दुर्बल तनछीन। निर्बल
होयकें लड़े रावणसे प्रेमके प्रभु आधीन ।। उठें तो काँपें चरण
खड़ेहोवेंतौ लरजै सकलशरीर। धनुष वह तानें तौ छुटै चुटकी
से धीरजमें तीर ।। क्रोधसे काँपें तीनलोक और जरे राक्षसन
की सबभीर। रावण मनमें डरै देखै जो क्रोधित श्रीरघुवीर।।

शैर—प्रथम तो उनका राजपाट योग में छूटा। औ खानो
पान सियाके वियोगमें छूटा।। अवधका वास गया तात स्वर्ग
को पहुँचे। भरतका साथभी देखौ वो शोकमें छूटा ।। शरीर
तौ पींजर सब बनगया मन रह सीतामें लवलीन। निर्बल०।।
दिवस को होय संग्राम निशा को करे कहौ किस विधि हरि
शैन। मुख ढापें तौ झरें झरना से प्रभु के वह दोउ नैन ।।
करैं जो मुख से बात तौ निकलें जिह्वा से कुछ के कुछ वैन।
लषण सुनें तौ लख प्रभु वियोग में हैं अति बेचैन ।।

शैर-यह कष्ट देखके लक्ष्मण ने वो विचार किया। मरैगा

कल वह रावण मिलैगी आन सिया ।। काल के वश है वोही
जो कि प्रभुसे झगड़ा। हमारे राम से लड़कर ये जग में कौन
जिया।। दुर्बल भये तो मन नहिं हारा याहीते लेह सब छीन।
निर्बल० ।। भोर होत मुख धोय क्रिया जब रामचन्द्रजी ने
स्नान। पूजन विधि से कभी फिर उठा लिया वह धनुष औ
वान।। चले साथ देखने युद्ध लछमन भ्राता और श्रीहनुमान।
पहुँचे रणमें जहाँ रथपर बैठा रावण बलवान ।।

शैर—राम को देखके रावणने धनुषको ताना। औ मारे
पाँच बाण तबये रामने जाना। है इसकी आज मौत काल ने
इनको घेरा। रामजी ने भी अपना धनुष संधाना ।। अंग
तो दुर्बल थाई पर सीताकी शक्ति थी परवीन। निर्बल०।।
आसौज का था मास और वह शुक्लपक्ष दशमी का दिन।
राम औ रावण के उस दिन चले वाण कोटिन गिन गिन ।।
रावणके वाणोंको राम काटै तृण वत पल-पल छिन-छिन।
रावण के शिर कटें उपजें इतने में छिप गया दिन ।।

शैर-हृदयमें अपने वह रखता था ध्यान सीता का। सो
उसके मनसे गया पलमें ज्ञान सीता का ।। उसी समयमें वह
मारे जो वाण दश प्रभु ने। रहा इस जगतमें देखो वह मान
सीताका।। काटके उसके दशों शीश फिर अपने हीमें करलिया
लीन। निर्बल०।। गिरा वह रथसे पृथ्वी पर तो कहा कहाँ है
कहाँ है राम। इस कारण से मिला वह अन्त समयमें उत्तम
धाम ।। किसी बहाने अन्त समय में राम-राम का कहै जो
नाम। कहै देवीसिंह मिले वह राममें और पावे आराम ।।

शैर-यह छन्द रामका अपने जो मुखसे गावैगा। तरैगा
वहभी इसे जो सुनै सुनावैगा। यह पूरी होगई रावणके मारने

की कथा। वो ही समझैगा इसे जो कि लव लगावैगा ॥ रामचन्द्र ने लेकर सीता लंक विभीषण को देदीनी। निर्बल०॥

स्तुति शिवजी के त्याग की-बहेर खड़ी

धन धन भोलानाथ तुम्हारे कौड़ी नहीं खजाने में। तीन लोक बस्ती में बसाये आप बसे बीराने में ॥ जटा जूट का मुकुट शीश पर गले में मुण्डों की माला। माथे पर फूटासा चन्द्रमा कपाल का करमें प्याला॥ जिसे देखकर भय व्यापै सो गले बीच लिपटा काला। और तीसरे नेत्रमें तुम्हारे महा प्रलयकी हैं ज्वाला॥ पीने को हरवक्त भांग और आक धतूरा खाने में। तीनलोक०॥ चर्म शेर का वस्त्र पुराना बूढ़ा बैल सवारीको। तिसपर तुह्मरी सेवाकरती धन धन गौर विचारी को॥ वह तो राजाकी व्याही गई भिखारी को। क्या जाने क्या देखा उसने नाथ तेरी सर्दारी को॥ सुन तुह्मारे व्याह की लीला भिगमंगों के गाने में। तीनलोक०॥ नाम तुह्मारे अनेक हैं पर सबसे उत्तम है नंगा। याही ते शोभा पाई जो बिराजती शिर पर गंगा॥भूत प्रेत वैताल साथमें यह लश्कर सब चंगा। तीन लोक के दाता होकर आप बने क्यों भिखमंगा। अलख मुझे बतलाऔ मिलै क्या तुमको अलख जगाने में। तीन लोक० ॥ यह तौ सगुण का स्वरूप है निर्गुण में निर्गुण हो आप। पल में प्रलय करो छिन में रचना तुम्हें नहीं कुछ पुण्य न पाप॥ किसी का सुमिरन ध्यान न तुमको अपना ही करते हो जाप। अपने बीच में आप समाये आपी आप में रहे हो व्याप ॥ हुआ मेरा मन मगन यह सिठनी ऐसी नाथ बनाने में। तीन लोक० ॥ कुबेर को धन दिया और तुमने दिया इन्द्र को इन्द्रासन।

अपने तन पर खाक रमाई नागोंके पहने भूषण। मुक्ति कि मुक्ते दाता हो मुक्ति भी तुह्मारे गहे चरन। देवीसिंह कहै दास तुह्मारा हित चित से नित करे भजन॥ बनारसी को सब कुछ बख्शा अपनी जवाँ हिलाने में। तीनलोक०॥

ख्याल शिवजी का निर्गुण-बहेर खड़ी

शिवजी तो कुछ सूम नहीं जो धन को धरें खजाने में। सारी वसुधा बाँट दई मशहूर हैं यही जमाने में॥ राईभर चाँदी नहिं सोना हीरे मोती लाल नहीं। जिह्वासे सब कुछ देदें जिसको वह हो कंगाल नहीं॥ विभूति में जो कुछ उनके वह कुवेर घर माल नहीं। दीन के ऊपर दया करें कोई ऐसा दीन दयालु नहीं। भागीरथ को गंगा देदी मुक्ती मिली नहाने में। सारी वसुधा० ॥१॥ वेद न जाने भेद कुछ उनका पुरान पावे पार नहीं। शास्त्र न जाने गति कुछ उनकी शिवसा कोई अपार नहीं। जहँ पर है उनका आसन वहाँ किसी का विस्तार नहीं। रवि शशि अग्नि पवन भी तो कोई उनके पहुँचे द्वार नहीं॥ निर्गुण में तो ब्रह्म वोही हैं सगुण हैं लिंग पुजाने में। सारी वसुधा० ॥ २ ॥ तीनलोक के बीच में कोई नहीं है ऐसा वरदानी॥ कोई नहीं योगी ऐसा और कोई नहीं ऐसा ध्यानी। भिक्षुक वेष न देखो उनका वह सरूप है निरवानी॥ सर्प न लिपटे जानो तन में यह तो भक्त सब है ज्ञानी। खुले आँख जब भीतर की तब आवे दरशन पाने में॥ सारी वसुधा बाँट दई मशहूर है यही जमाने में॥ ३ ॥ निंदा में स्तुती करे तो इसी में वह होते हैं मगन॥रूप अमंगल मंगलदायक उनका तो उलटा है चलन॥ प्रेम से उसको गाली दो तो उसी को समझे हैं भजन॥ जो

कोई उनको जहर चढ़ावे उसी को वह देते अन धन ।। और कुछ उनको ख्वाहिश नहिं वह मगन हों गाल बजाने में ।। शीश सारी बसुधा बाँट दई मशहूर है यही जमानेमें ।।४।। शीश न उनके लिंग न उनके चरण न उनके औ सब है। ऐसा कोई विरला जन जान उसे नहीं व्यापे फिर भय ।। देवीसिंह यह कहै अरे नर कहु तू मुख से शिव जय ।। बनारसी जय जय करने से शिवस्वरूप में होगया लय ।। राजा हिमाचल दंग होगये पारवती ब्याहने में ।। सारी बसुधा बाँट दई० ।।

शिवजी का बटिना-बहेर खड़ी

धनधन भोलानाथ बांट दिये तीनलोक इक पलभर में ।। ऐसे दीनदयालु हो दाता कौड़ी नहीं रखी घर में ।। प्रथम दिया ब्रह्मा को वेद वो बना वेद का अधिकारी। विष्णुको दे दिया चक्र सुदर्शन लक्ष्मी सी सुन्दर नारी। इन्द्र को देदी कामधेनु और ऐरावत सा बलकारी। कुबेरको सारी वसुधा का कर दिया तुमने भंडारी। अपने पास पत्र नहीं रक्खा रक्खा तो खप्पर करमें। ऐसे दीन दयालु हो दाता कौड़ी नहीं रखी घरमें। अमृत तो देवतोंको दिया और आप हलाहल पान किया। ब्रह्मज्ञान देदिया उसे जिसने कुछ तुम्हारा ध्यान किया। भागीरथ को गंगा देदी सब जग ने स्नान किया।। बड़े बड़े पापियों का तुमने इक पल में कल्याण किया।। आप नशेमें चूर रहो और पियो भांग नित खप्पर में। ऐसे दीन-दयालु हो दाता कौड़ी नहीं रखी घर में ।। रावण को लंका दे दी और बीस भुजा दश शीश दिये। रामचन्द्र को धनुष वाण वो तुमहीं ने जगदीश दिये ।। मन मोहन को मोहनी दे दी और मुकुट तुम ईश दिये। मुक्ति हेतु काशी में बास

भक्तोंको विश्वा बास दिये।। अपने तनुपर वस्त्र न राखो मगन रहो बाघम्बर में। ऐसे दीनदयालु हो दाता कौड़ी नहीं रखी घरमें।। नारदको दई बीन और गन्धर्वोंको रागदिया। ब्राह्मण को दिया कर्मकांड और संन्यासीको त्याग दिया।। जिसपर तुम्हरी कृपा हुई उसको तुमने अनुराग दिया।। देवीसिंह कहै बनारसी को सबसे उत्तम भाग दिया।। जिसने पाया उसी ने दिया महादेव तुह्मरे वर में। ऐसे दीनदयाल हो दाता कौड़ी नहीं रखी घर में ।।

ख्याल श्रीहनूमानजी का "पंचमुखी कवच का माहात्म्य" इसके पढ़ने से होगा।

बहेर खड़ी-तीन तीन मिसरेका चौक

प्रथम मुख की स्तुति ।। १ ।।

महावीर मस्तकम् ललित सेंदूरम् कुमकुम् अगरम्।।
ज्ञानवान अभिमान रहित निर अहँकार हर योगी।
इन्द्री जीत कामना त्यागी नच कामी नच भोगी।।
रूप आनन्दम् परमानन्दम् महावीर मस्तकम्।।

द्वितीय मुख की स्तुति ।। २ ।।

दशकन्धर अभिमान हनन् लंका दाहन बजरंगी।।
पूरण ब्रह्म अखंड सच्चिदानन्द साध सत्संगी।।
नाम उचारत नित गोविन्दम्।
महावीर मस्तकम् ललित सेंदूरम् कुमकुम् अगरम्।।

तृतीय मुख की स्तुति ।। ३ ।।

रक्तम् चीर गदा कर शोभित पुष्पमाल उर धारन।
दैत्यन दलन हनन दुष्टन दल सकल शत्रु संहारन।।
शब्द ध्वनि गर्जंत हरि हरि बम् बम् बम् बम्।
महावीर मस्तकम् ललित सेंदूरम् कुमकुम् अगरम्।।

चतुर्थ मुख की स्तुति ।। ४ ।।

शिव शंकर सर्वज्ञ स्वरूपम् विश्वेश्वरम् विशालम्।।

परम वैष्णव शुद्ध आत्मा कालंकाल अकालम् ।
बहु विस्तारम् मम किम् वर्णम् ।।
महावीर मस्तकम् ललित सें दूरम् कुम्कुम् अगरम् ।।

पंचमुख की स्तुति

जटाजूट मकराकृत कुण्डल रत्न जड़ित तनु भूषण ।
पंचमुख सुखदायक दाता देऔ पति निर्दूषण ।।
छन्द काशीगिरि शास्तरि थकितम् ।
महावीर मस्तकम् ललित सें दूरम् कुम्कुम् अगरम् ।।

।। इति पाँचों मुख की स्तुति सम्पूर्ण ।।

विश्व रूपी बाग

विश्वरूप खिलरहा बाग जिसमें आदम की गुलजारी । रंग रंगके फूल हैं तरह २ की फुलवारी ।। पूरव पश्चिम उत्तर दक्षिण ये चारों दीवार बनी । हर एक तरफ से नदियों की हैं छूटी नहर घनी ।। सात सिंधु सोइ तालाब सातों सबका मालिक वही धनी । चाहे बनावे चाहे एक पल में करदे फनाफनी ।। विश्व बाग के भीतर कुदरत की फैली क्यारी । रंग रंग के० ।। नवखंडों के महल बनाये दशों दिशा के दश द्वारे । त्याग किये हैं बाग में चौदा भुवन न्यारे न्यारे ।। आसमान की छत लगाई जिसमें जड़ दिये हैं तारे । गरज गरज घन करैं छिड़काव छोड़ते फौवारे ।। चांद और सूर्य चारों तरफ की करते हैं चौकीदारी ।। रंग रंग के० ।। चमत्कार का चमन लगाया पारब्रह्म के आपौ आप । हरजरे में झलकता हरशय में वो रहा है व्याप ।। इसो बाग के भीतर बैठे ऋषी मुनो सब करते जाप । कोई गावते भजन और कोई रहे पच अग्नि ताप ।। साधु संत करैं सैर बागमेंपरमहंस या ब्रह्मचारी ।।

रंग रंग के० ।। कल्पवृक्ष औ मलियागिरि वो फले हैं उसमें अमृतफल । कभी न सूखे कि जिसमें ज्ञान रूप है गंगाजल ।। देवीसिंह कहैं हरि कृपा से जिसकी हो बुद्धि निर्मल । ऐसे बाग में अमर वो होय न आवे उसे अजल ।। विश्व बाग का मालिक है वो ही श्रीकृष्ण गिरवरधारी । रंग रंग के० ।।

भक्ति योग-बहैर जी की

भजनहरिके प्यारे वो तोहोवेंगे कालके काल, कालको क्या समझें मालजी । निरंकार को भजे उसे नहिं व्यापे भव जंजाल उसी की रचना तीनों कालजी ।। आठ याम लेनाम उसीकाशेष नाग पाताल, चतुरपद पक्षी जपते व्याल जी । भीड़ पड़ि जहँ जहँ सन्तोंपर हुए आप रछपाल, बचाये ब्रजमें गोपी ग्वालजी ।।

दोहा—सदा भक्त के काज को, उठ धाये तत्काल ।
ग्राह से गज को छुटा दिया, ऐसे नन्द के लाल ।।
जो कोई उनको सुमरे उनका होय न बांका बाल ।
काल को क्या समझें वो मालजी ।।

पूछा तेरा राम कहाँ जब गिर्द अग्नि दो बाल, दिखाय त्रास वो खड्ग निकालजी । उसने कहा है मुझमें तुझमें सब श्रीगोपाल, करे वो सब जग का प्रतिपालजो ।।

दोहा—खम्भ फाड़ प्रकटे ऐसे, और धारा रूप विक्राल ।
हिरणाकश्यपु दैत्य को, मार दिया पैमाल ।।
उसकी याद में जो रहते, वो सदा बजावें गाल ।
काल को क्या समझें वो मालजी ।।

श्रीकृष्णके मित्र सुदामा ज्ञानी द्विज कंगाल, पढ़े थे दोनों एकीसाथजी । शरण गयेवो हरिके होगये एक पल में निहाल । मिले निर्धन को वो धनमालजी ।। उसकी याद बिन प्राणो

जैसे सूखा जल बिन ताल, नाम जप साईं का रहु लालजी।
दोहा—बिना भक्ति नहिं मुक्तिहै, कहाँतक कहूँ अहवाल।।
नाम लिये से तर गये, कई पापी चण्डाल।
लाख चाट ले रोज जो रक्खे उनके नामकी ढाल।।
काल को क्या समझें वो मालजी।।
उसकी यादमें मीरा नाचीं देदे दोऊ ताल, गावता फिर प्रभूके ख्यालजी। उसकी याद में वह ताकत है कोटि व्याधि दे टाल, कभी नहिं आवे उसे बवालजी।। देवीसिंह कहैं बनारसीको उसका हुआ विशाल, देखता दिल में वही जमालजी।
दोहा—निहुरके चलना जहाँ के अन्दर, यह है बड़ा कमाल।।
जिस दरख्त पर मेवा होवे झुकै उसीकी डाल।
नाम प्रभूको प्यारा भक्तोंको नहीं होय जवाल।।
कालको क्या समझे वो मालजी।

परमेश्वर मिलने का मार्ग-बहेर खड़ी

नरतन पाय जतन कर ऐसे जिसमें वो करतार मिलै। ऐसी उत्तम योनि पदारथ फिर नहिं बारंबार मिलै।। बनेहैं पूरब कर्म कुछ ऐसे उसीकी है यह प्रभुताई। जो तूने संसार में है यह सुन्दर नरदेही पाई।। पायके ऐसी कंचन काया भजन करो हरि को भाई। जन्म जन्म की बिगड़ी बात सब इसी जन्म में बनजाई।। सुख दुख भोग पिता औ माता और सकल संसार मिले। ऐसी उत्तम० ।। मिला मुझे अनमोल रत्न ये अब उपाय तू ऐसा कर। त्याग सकल कामना जगत की हित चित से हारे नाम सुमरि।। वासुदेव भज नारायण तू कृष्ण कृष्ण और कहो हर हर। जीते ये भवसिंधु जगतसे क्षण में जाते पार उतर।। जन्म मरण नहिं हो तेरा नहिं जग में फिर

अवतार मिलै। ऐसी उत्तम०।। कर विचार मनमें अपने तू किस कारण जग में आया। किस कारण संसार में तुझको मिली है यह कंचन काया।। जिसने कछु नहिं भजन कियो नहिं मुख से गुण गोविंद गाया। सुन्दर जन्म गँवाय वृथा वो अन्तकाल फिर पछताया।। लख चौरासी पड़े भरमता यम दूतों की मार मिले। ऐसी उत्तम०।। दुर्लभ ये जामा नरका है मिला बड़े संयोगों से। देवीसिंह कहता है सदा समझाय के ये सब लोगों से।। भजन करो आनन्द रहो और छुटो दुःख सुख भोगों से। हर्ष सदा मन में व्यापे और शुद्ध चित्त रहो सोगों से।। बनारसी कहै और जन्म में नहिं उसका दीदार मिलै। ऐसी उत्तम० ।।

ज्ञान नौका-बहेर खड़ी

भवसागर है कठिन कि इसमें और नाहिं कोई खेवैया। दीनदयालु जो कृपा करें तो पार लगे मेरी नैया।। गहरी नदिया थाह मिलै नहिं चारों तरफसे उठे बयार। मायामोहका जाल पड़ा उसमें किस विधि से उतरे पार।। चारों तरफ जो देखा तो कुछ नजर न आये वारापार। कितने होगये डूब इसी में गोते खा खा के मँझधार। भवसागरके पार उतारै कोई नहीं ऐसा भैया। दीनदयालजो०।। चलै जो आँधी भवसागरमें तब उसमें वोह उठे तरंग। लोगकुटुम्बकेसब रोवेंऔरकोई न देवे उसका संग। कालबली जब आकर घेरे कोई न जीते उससे जंग जो होई हरि का भजन करे तौ मौत भी उससे होजा दंग। सब कोई हैं अपने स्वारथी क्या बाबा और क्या भैया।। दीनदयालजो०।। भयके इसमें भँवर पड़े और चिन्ता की चादर न्यारी, काम क्रोधऔर लोभ मोहके मगरमच्छ करते ख्वारी।।

सातों समुद्र जरासे हैं औ भवसागर सबसे भारी। उससे पार वोही उतरै जो नाम जपै गिरिवरधारी। अंतकाल में पापी रोवैं दीनदयालु जो कृपा करें तो हार लगे मेरी नैया। सौ होंवे तोहजार माँगें हजार होतो ढूंढें लाख ॥ लाख होयतो करोड़ चाहें कहैं बदैं कछु उसमें साख। दया धरम नहिं हिरदे मेंतो अंतमें जलके होजा राख ॥ बनारसी कहै खुन्नीलाल तू नाम सुधारक मन में चाख। राम नाम को सुमिरण कर मन मुख से कह तू कन्हैया। दीनदयालु जो० ॥

शरीर का भेद—बहेर लंगड़ी

आजकल नहिं कहा किसी ने और न कोई कह सकेगा अब। आसमान हो तले जमीं ऊपर इसका कहो क्यामतलब ॥ अगर तुम्हें मालूम होय तो कहो मायने इसके सब। आईने में शकल नजर नहिं आये इसका कौन सबब ॥ और बात मैं कहूँ आपसे इसके तईं सुनना साहब। उलटा दरिया चलै कहाँ पर इसका ज्वाब दीजियेगा कब ॥ अचरज ये मैं रोज देखता हूँ इन आखों से बेढब। आसमान हो०॥ ऐसी बात बतलाये अःही जिसको दिखलाई देहै रव। अब्बल माया मायामें जोरू जोरू में माक छब ॥ आगे इसके एक बात है यही मुझे है बड़ा अजब। है आजुरदा औ कभी न होवे जिसके ऊपर पड़े गजब ॥ ईमान से देखा मैंने तो मुझे नजर आया जब तब। आसमान हो०॥ नीचे को ऊँचा समझे औ जीसे इल्मका होंगे कसब। आदम हो के याद न भूले आपकी पहिचाने तब ॥ आपको जो पहचाने औ आपी आप है अब औ जब। अल्ला अकबर आदम ईदम दशरिक अरब खरब ॥ अन्दर दिल के देख अरे नादान तुझे गर हो कुछ ढब। आसमान हो० ॥

अगरचे जो तुम सुनो तो मैं सब कहता हूँ उसका करतब। आदि कुंवारी बनीरहें औरकुल जहानसे करें कसब। अपने खसमको मारा बनी सुहागिन लाल औ लब ॥ उसे नहीं आनके कोई कहै रांड सुन बनारसी औ बड़ी चरब। इसके मायने वही बतावे जो कोइ प्रभु का करे अदब ॥ आसमान हो०॥

होली निर्गुण-बहेर छोटी

होली में इज्जत रहै तो खेलो होली। ओ होली मत खेलो जो होयठठोली॥ पाँचों भूतोंको मारके तू पिचकारी। रंग हरीकेरंगमें इन्हें तो होहुसियारी॥सरबोरउसी में करदे काया सारी। हरवक्त नाच और गाव तू गुण गिरधारी। तू ज्ञान गुलाल से भरले अपनी झोली। ओ होली०॥ तुम काम क्रोध कुमकुम को अपने मारो। वह लड़ो लड़ाई कालसे भी नहिंहारो ॥ दो प्रेमकी गाली प्रभुको उसेपुकारो।ओ कबीर के संग आत्मज्ञान बिचारो। जो ज्ञानी हो तो पहिचानो ये खेली। ओ होली० ॥ तुम ज्ञान अग्नि में लोभ औ मोह जलावो। लव उस मालिक से अपनी आप लगावो। तुम तत्व तालदे मृदंग बीन बजाओ। अनहद बाजे को सुनो तो उसको पाओ। मत कीचड़में तुम गिरो जो आवे डोरी॥ओ होली०॥ जल गई होलिका प्रहलाद को आँच न आई। ऐसी होली खेलो तो होय बड़ाई॥ कहैं देवीसिंह तुम सुनो हमारे भाई। है बनारसी की अद्भुत कविताई॥ सुन मिनौचेहर की बात रंगीली भोली। ओ होली० ॥

लावनी बालमीकिजी की—बहेर जी की

चाहे जपो तुम मरामरा चाहे तुम भजलो राम। उलटा सीधा राम नाम हर विधसे आता कामजी ॥ त्रेतायुगमें एक

पुरुष करता था बटमारी। कितने हूँ को माराउसने पापकिये भारीजी।। हत्याकरते उसकीसूरत होगई हत्यारी।बहुतकिये अपराध बोझसे पृथ्वी तक हारी ।। तोड़ा धर्म रायभी जी में डरे ।। यह पालत कोई कहाँ धरे । अब यह पापी कैसे तरे।।

दोहरा-कभी न सुमिरा राम को ना दया करी नहिं दान। कितनों ही का धन हरा मारी कितनों की जान ।। कौन पुण्य से होगा इसका बाल्मीक सा नाम । उलटा सीधा राम नाम हर विधिसे आता कामजी ।। १ ।। एक समय नारदमुनिजो ने किया उधर फेरा । बाल्मीक ने आकर नारदमुनि को भी घेराजी ।। नारदमुनिने कहा बचन सुनले तू यह मेरा। क्यों मुझको मारेहै।। क्यों मुझकोमारेहै मैंने किया हैक्या तेराजी।।

तोड़ा-जब पापी बोला ललकार । मेरा वो है एही कार।। कितनों ही को डाला मार ।

दोहा-नहीं मेरी को वृत है करता मैं खेती। कुटुम्ब अपना पालता हूँ लूटमार सेती। क्या जाने कितनों से मैंने कियायहाँ संग्राम।।उलटा सोधा रामनाम हरविधिसे आता कामजी।२।। बाल्मीकिको फिर नारदमुनिने यह समझाया।तैंने धनलूटा सो तेरे कुटुम्ब ने खायाजी । दौलतका हिस्सा तेरे सब घरने पाया। पाप जो तैंने किया उसे नहीं किसी ने बटवायाजी। दारा सुत भगिनी भाई ।। सबसे कहो यह जाई ।। पाप यह मेरा लो बटवाई ।।

दोहरा-जो वो तेरे पाप को लेवें सब बटवाई ।। तो तू मुझको मारियो अपने गृहसे आई ।। इतना सुनके बाल्मीकि उठ धाया अपने धाम । उलटा सीधा रामनाम हर विधिसे आता कामजी ।। ३ ।। चलते चलते बाल्मीकि पहुँचा अपने

द्वारा। भाईबन्धु अरु लोग वहाँके सबको उसने टेराजी।। सुनर के सब उठ ठाढ़े भये औ बैठे चौफेरे। बाल्मीकिने कहा वचन यह सुनलो सब मेराजी ।। जो जो धन मैं हर लाया। सो सब तुमने खाया। पाप मेरा नहिं बटवाया।

दोहरा-अब तुम मेरे पापको सबकोई बटवाओ। धन लूट के तुम घर बैठे खाओ।। जितनी दौलत हरूँगा मैं लाऊँ सब तुम्हीं को दूँगा दाम। उलटा सीधा रामनाम हर विधिसे आता कामजी ।। ४ ।। बाल्मीकि का सुना वचन सब बोले नर नारी। क्या जाने हम तैंने है कितनों की जान मारीजी।। हमें पापसे काम नहीं है तुही पाप धारी। कियेसे अंत समय होती है ख्वारीजी ।। बाल्मीकि हो के लाचार। छोड़ दिया अपना घरवार । मनमें करता शोच विचारजी ।।

दोहा-भाई बिरादर त्याग के अब चलूँ गुरु के पास। वो चाहै तो पाप का एक पलमें करदे नाश ।। अब घर से कुछ काम नहीं बसूँगा मैं इस ग्राम। उलटा सीधा० ।।५।। नारायणने करी कृपा जब हुआ उसे वैराग। जितने खोटे कर्म थे उनको छिनमें दीना त्यागजी।। नारदमुनि के पास आया और जागे उसके भाग। दिया शीश उनके चरणों में किया बहुत अनुरागजी ।। कहा गुरूजी सुनो वचन ।।

दोहरा-भाई बिरादर कुटुम्बके कोई नहीं बाँटे पाप।तुम अपनी कृपा करो काटो मेरे संताप ।। तुमहो गुरु मैं हूँ चेला शिरझुका किया परणाम । उलटासीधा रामनाम हर विधि से आता कामजी ।।६।। फिर नारदमुनिने देखा अबहुआइसे कुछ ज्ञान। राम नाम रटने से होवेगा इसका कल्यान जी ।। वोही मंत्र उपदेश दिया और बताया उसको ध्यान। इसी

नामसे पापतेरे होवेंगे पुण्य समानजी।। अबतेरा होगयाभला। किसी का मत काटियो गला ।। पाप तेरे सब दिये जला ।।

दोहा-बाल्मीकिने रामनाम मनमें जाप करा। राम राम के नामसे निकले मरामरा। बड़े शोचमें वह आया पगलिये गुरू के धाम ।। उलटा सीधा०।।७।। बाल्मीकिने कहा गुरूजी राम राम गयाखोय। मैं कहता हूँ रामरामजी तो मरामरा मुख होयजी। नारदमुनिने कहा जपैंहैं यही नाम सबकोय। मरा मरा कहनेसे रामजीसबदुख डाले धोयजी।।बाल्मीकि निश्चय करके। बैंठगया आसन भरके।। उलटा नाम हिरदे धरके।

दोहरा-नारदमुनि तो चल दिये, बैठा ध्यान लगाय। मरा मरा रटने लगा गई भूख प्यास विसराय ।। वर्षा ॠतु जाड़ा झेल गरमी में सही अति घाम। उलटा सीधा० ।। ८ ।। शरीरकी सुधि नहीं रही और तनुपै जमगई घास। और आश सब छोड़ लगाई मरामराकी आशजी ।। जब तो रामने करी कृपा आपहुँचे उसके पास। बाल्मीकिके घटमें अपना किया रामने बासजी। ब्रह्मज्ञान देदिया उसे ।। अपनी आत्माकिया उसे। लगा कंठ से लिया उसे ।।

दोहरा–जब तो तालो खुल गई भये बालमीकि चेतन। कंचन सा तनु वन गया पायो निर्गुण दर्शन। बाल्मीकि के घटमें रामने किया आप विश्राम। उलटा सीधा०।।९।।मरा मरा कहने से होगये बाल्मीकि ज्ञानी। रामनाम रामायणकी कथा कही है गई सिद्ध बानी ।। दश हजार बरसों की बात आगे सब पहचानो। भूत भविष्यत् वर्तमान ये तीनों राह जानी उलटा नाम जपा भाई ।। तिसपर यह पदवी पाई। बाल्मीकि की कविताई ।।

दोहरा-विष्णुसहस्त्रनाममें श्रीरामनाम में सार। जो कोई सुमिरे रामको उनका होता उद्धार।। सकलकामना मिले उसे जो जपे नामनिष्काम। उलटा सीधा०।।१०।। मरामराकहने से ही ऐसे पापी तरते। राम नाम जो रटे हैं वो क्या जाने क्या करतेजी ।। रामनामते समुद्रमें अबतक पहाड़ तरते। वो भी होजाय रामनामको जो हिरदे धरतेजी। रामनामकी सब माया ।। पारकिसीनेनहिं पाया। येही राम चहुँदिश छाया ।।

दोहरा-जो कोई ऐसे छन्द को गावे सुने दे कान। मुक्ति पावे वहीं और हो उसका कल्यान ।। भुक्ति बनारसी है राम नाम सरनाम। कहै देवीसिंह उलटा सीधा० ।।११।।

लावनी अहंकारनाशिनी

जो कहता हम करते वो दुःख भरता है जो करता जग के कार वही करता है ।। जो कहता हमने वेदपढ़े हैं चारी। उसको कहते हरी इसकी मति है मारी ।। कोई कहता हम क्षत्री हैं हम ब्रह्मचारी। सब अहंकार में फँसे हुए नर नारी। जो अहं बुद्धि को तजै करै ना चारी ।। उसको मिलते इक पलभरमें गिरधारी। जो निष्फल पूजा करे वही तरता है।। जो करता० ।। १ ।। जो कहता हम तौ नित्य दान करते हैं उसका परमेश्वर नहीं मान करते हैं।। जो देत वस्तु मन में गुमान करते हैं वो स्वर्ग छोड़ सिर नरक पान करते हैं ।। जो अहंकार तजि हरि का ध्यान करते हैं। उसका स्वामी आदर अरु मान करते हैं जो करता है सो वही वही धरता है ।। जो करता० ।। २ ।। जो कहता हम हैं बड़े कवीश्वर ज्ञानी। उसको हरि कहते इसकी मिथ्यावानी।। कोइ कहता हम हैं बड़े वीर बलवानी। उसको हम कहते यह तो है

दहकानी ।। कोई बनकेबैठे राजा और कोई रानी । इसपृथ्वी पर हैं बड़े२ अभिमानी ।। इस अहंकारसे अपना दिल-डरता है ।। जो करता० ।।३।। जो कहता मैंने बड़ा जंग जीता है। वह मरताहै फिर कभी नहींजीताहै।।जिस जिसने मनमें अहं-कार जीता है ।वह दो दिनमें दुनियांसे होबीताहै। अबदेवीसिंह दिलफटा हुआ सीताहै । जो कर्म किया प्रभुके अर्पण कर देता है।।कहै बनारसी हरिभक्त नहीं मरताहै ।। जो करता०।।४।।

वचन पलटने वाले का जो हाल होता है यह सही लिखा—बहेर छोटी

जो जवाँसे कहिके सखुन पलट जाते हैं । शिर दगाबाज के अक्सर कट जाते हैं ।। जो कहते हैं वो करते हैं पूरे नर । चाहे इसमें हो जाय कलम धड़से सर ।। मैं कहूँ तू झूठा कौल किसीसे मतकर । जो कहिके सखुनको नहींकरैं वो हैं खर ।। जो झूँठ बोलते हैं वो फिरते दरदर । कह सत्य वचन बलि विक्रम राजा गये तर ।। जो कायर हैं वो रन से हटजाते हैं ।। शिर दगाबाज के० ।। १ ।। जो कलाम पै अपने रहते हैं साकर। तौ लाकलाम वोह खालक मिलता आकर।। मत झूँठ किसीसे बोल यह नरतन पाकर ।। सब बुरा कहैंगे कहूँ तुझे समझा कर । जो करै दगा अपने घर में बुलवा कर ।। ले उसका बदला साईं उससे आकर । नहिं मिलै हशरत का जब दिल फट जाते हैं ।। शिर दगाबाज के० ।।२।। पूरों का सखुन नहिं लाखों में टलता है। सर सखुन के आगे शूरोंका चलता है ।। जो सच्चा है वह कुटुम्ब से फलता है । उसका चिराग उसके आगे बलता है ।। जो करके दगा यारों के तईं छलता है ।। वो नरक कुण्डकी आतिशमें जलता है ।। सच्चों के आगे झूँठे घटजातेहैं। शिर दगाबाजके०।।३।। जो कलाम

को झूँठा मुख से फरमाते । वो अन्त समय दोजख में डाले जाते ।। कहैं देवीसिंह जो साईं से लव लाते । वह भवसागर एक लहजा में तर जाते ।। छन्द बनाय के तो सच्चा मिसरा गाते । हरनाम सुमिर के सभा में चंग बजाते ।। कहैं बनारसी हम सखुन में डट जाते हैं । शिर दगाबाज के० ।।४।।

भगवान से विनय-बहेर छोटी

कर दया दास के कष्ट हरो गिरधारी । करुणानिधि करुणा करो मैं शरण तुम्हारी ।। सब संकट मेरे दूरकरो अबस्वामी । ऋद्धि सिद्धि से मुझे भरपूर करो अब स्वामी ।। अपने अब मुझेहुजूर करोतुम स्वामी । चरणोंकी मुझेतुम धूर करोअब स्वामी । यह काम तो मेरा जरूर करो अब स्वामी। भक्तों में मुझे मशहूर करो अब स्वामी ।। हो निर्भय पूरणब्रह्म आप अवतारी । करुणानिधि करुणा० ।।१।। सब संतों को आपी तुमने ताराहै । ग्राहसे यहगज को तुह्मींने उबारा है।। प्रह्लाद की खातिर नरसिंह तनु धारा है। नखसे नाभीको चीर असुर मारा है । मुझको वो नाम श्रीनारायण प्यारा है ।। प्रभुतेरे बिन अब कोई न हमारा है। क्यों मेरे वास्ते करी देर बन-वारी । करुणानिधि करुणा० ।।२।। पाँचों पाँडवों का साथ किया है तुमने । ब्रज में सखियन से रंग किया है तुमने । काली को नाथ के तंग किया है तुमने। कंसा से जाय फिर जंग किया है तुमने ।। हर एक राक्षस को तंग किया है तुमने। सब असुरों को चौरंग किया है तुमने । अब मेरे पाँच भूतों को मार मुरारी । करुणानिधि करुणा०।।३।। सब कसूर मेरा माफ आप अब कीजै । शिर चरणों में अपने मेरा नाथ लीजै ।। यह उम्र सदा दिन रात घड़ी छीजै । कर मेहर प्रभू कछु भक्ति

में अपनी दीजै ।। एक अरजी मेरी गरीब की सुन लीजै। दिल भक्ति में तुमरी सदा हमारी भीजै। हरि हरलो तन की पीर हुआ दुःखभारी। करुणानिधि करुणा० ।।४।। तुम जो चाहोसो करो आप यदुराई। राई से गिरि कर देते गिरि से राई ।। है सत्य सत्य साँची तेरी प्रभुताई। तरगये वही जिसने तुमसे लव लाई।। कहैं देवीसिंह जिन तुह्मारी महिमागाई। वह भवसागर के पार उतर गया भाई ।। कहैं बनारसी यह राखो लाज हमारी। करुणानिधि करुणा० ।।५।।

ख्याल निर्गुण चौकड़–बहेर शिकस्ता

बहुत दिनों पर बिछी है चौसर सम्हर के खेलो ये चाल क्या है। जो फेंकूं पासे तो छूटैं छक्के नलोदमन की मजाल क्या है।। मैं हूँ जुवारी सुघड़ खिलाड़ी हमेशह जीतूं कभी न हारूं। सदा पड़े पोदुइ दूर हो चौरासी यों घर घर की नरद मारूं। पढ़े अगरचे जो तीन काने तौ अपने दिल में मैं यह विचारूं। ये तीन गुण हैं सभी के तन में मैं इनसे चलके अलग सिधारूं। हैं चार काने वो चौथा पद है मिला अब हमको मजाल क्या है।। जो फेंकू० ।। १।। है इसमें पंजड़ी सो पाँच तत्व हैं मैं इनसे गोटी चला बचाके। और फेंकूं छकड़ी ले आऊँ सत्ता सत को सद्‌गुरु के पास जाके।। है दाँव अट्‌ठा सो आठ सिद्धी नव ऋद्धी मैं रखूं मनाके। पड़े अगर छः चहार दश तौ दशौ द्वार देखूं दिल लगा के ।। न रंग अपना मेरे किसी से मैं अब समझता हूँ काल क्या है। जो फेंकूं ।।२।। आये हमारे वो दश पौ ग्यारा तो ग्यारहौ रुद्र हैं बदन में। और बारह राशें सो दोनों बारह समझ सोच कुछ तू अपने मन में ।। बड़े हैं इनमें वो दोनों तेरा मैं तेरा

कहूँहूँ मनमें। तू चौधरी है जहाँका मालिक नजर पड़े चौदहौं भुवन में ।। करूँ भजनमें ये पन्द्रहों दिन माया मोह का वो जाल क्या है। जो फेंकूं० ।। ३ ।। है आत्मासोलहों कलाये सों पांसेमें सोलहों बनाये। वो आये सत्रहये सतरहा अब हरी हरी के गुण गाये। पढ़े अठारह पुराण हमने और अर्थ उसके ये दिल में पाये।। उठे रंग बदरंग भी उठगये वो सारी माया को जीत लाये। बनारसी को सदा बनारस बना हुआ है बावला क्या हैं। जो फेंकूं० ।। ४ ।।

ख्याल जौ की लयका

नहीं मेरे ये शरीर है नहिं है मुझको दुःख द्वन्द। मेरा है रूप सच्चिदानन्दजी ।। नहीं लोभ नहिं मोह नहिं बुद्धिनहिं अहँकार। नहिं आचार औ नहीं विचारजी ।। नहीं रात नहीं दिन नहीं तिथि घड़ी लग्न नहिं वार। नहीं है अपना पारा वारजी ।। नहीं ऊजड़ नहीं जंगल बस्ती नहीं कुटुम्ब घरवार। नहीं दारा सुत नहीं परिवारजी ।।

दोहरा—नहीं शोश नहिं मुख नहिं जिव्हा नहिं वाणी नहिं हाथ। नहीं उद्र नहिं लिंग चरण नहिं नहीं वर्ण नहिं जात ।। नहीं वेद नहिं शास्त्र नहीं श्लोक नहीं पद छन्द। मेरा है० ।। १ ।। नहीं काम नहीं क्रोध नहीं कुछ ज्ञान नहीं अज्ञान। नहीं कोई मंत्र तंत्र नहीं ध्यान जी। नहीं नेम नहीं संयम पूजा नहिं तोरथ अस्थान। नहिं ब्रत होम यज्ञ नहिं दानजी ।। नहीं योग नहीं भोग नहीं संयोग मान अपमान। नहिं बनवासी नहिं स्थानजी ।।

दोहरा—नहिं सीधा नहिं गोल नहीं दुबला औ नहिं मोटा। नहिं टेढ़ा नहिं बेड़ा बहुत नहिं बड़ा नहिं छोटा।।

नहीं तुर्श नहीं लौन अलौना नहीं कड़वा नहीं कंद । मेरा है०॥ २ ॥ नहीं सुखी नहीं दुखी नहीं धनवान नहीं कंगाल। नहीं मन्त्री और नहीं भूपालजी ॥ नहीं सिन्धु नहीं नदी नहीं है कूप बावड़ी ताल। नहीं आकाश नहीं पातालजी ॥ नहीं श्वेत नहीं पीत नहीं है कपोत नीला लाल । नहीं है वृक्ष फूल फल डालजी ॥

दोहरा—नहिं हीरा नहिं मोती माणिक नहिं रत्नकी खान। नहीं खड़ग नहीं चक्र नहीं त्रिशूल धनुष नहीं बान ॥ नहीं जाग्रत नहीं स्वप्न सुषुप्ति नहिं खुला नहीं बन्द । मेरा है०॥ ३ ॥ नहीं त्रिदंड नहीं बनखंड़ी नहीं ब्रह्मचारी । नहीं मुण्डित न जटाधारीजी ॥ नहीं अग्नि नहीं पवन न पानी नहीं मीठा खारी । पशु नहीं पुरुष नहीं नारीजी ॥ नहींशक्ति नहीं वैष्णवी नहीं आचारी। नहीं हलका और नहीं भारीजी॥

दोहरा—नहीं मिमाँसक नहीं जैनी नहीं उदासीन मतवाद। नहीं देव गंधर्व यक्ष नहीं नहीं विघ्न विख्याद ॥ नहीं बिजली नहीं घना नहीं तारे नहीं सूरज नहीं चन्द । मेरा है० ॥ ४॥ नहीं शिष्य नहीं गुरू न माता पिता नहीं भ्राता । नहीं रिस्ता और नहीं नाताजी ॥ नहीं बैठा नहीं खड़ा नहिं आता है नहिं जाता। नहिं भूखा है नहिं खाताजी॥ नहिं लेय नहिं धरे नहीं देता नहिं दिलवाता। सखी नहीं सूम नहीं दाताजी ॥

दोहरा—नहीं कर्म की रेख लेख नहिं नहिं पढ़ा जाता। नहिं मौन हो रहे हरि बोले नहिं बुलबाता ॥ नहिं पक्षी नहिं फन्द कहे नहिं जाल नहिं फरफन्द । मेरा है० ॥ ५ ॥ नहिं हिन्दू नहिं मुसलमान याइदी नहिं फिरंग। नहिं कोई रूप नहीं कोई रंगजी। नहीं बीन बाँसुरी नहीं करताल मृदंग नहीं

जल तरंग नहिं उपंगजो। नहिं कलंगो नहिं तुर्रा नहीं अनघड़ डुंडा नहिं चंग ॥ नहिं कोई संग है नहीं असंगजो।

दोहरा—आपी आपमें आप है रहा आप में व्याप । नहीं स्वर्ग नहिं नरक है नहीं पुण्य नहिं पाप ॥ बनारसी कहै रूप हमारा अखंड परमानन्द । मेरा है० ॥ ६ ॥

मथनी श्रीकृष्णके खेलकी—बहेर छोटी

यह नन्दलाल यशोदाका दुलारौ कन्हैया। लै गयो सखीरी मेरी दधिकी मथनियाँ ॥ सुन सखी एक दिन कान्हा मेरे घर आया। दधि गोरस दी ढलकाय औ माखन खाया। दधिकी मथनियां हाथ में लेकर धाया ॥ मैं देखा चोरी करत पकड़ बिठलाया॥ उन फाड़ो मेरी चीर में तोरी तनिया। लै गयो०। वो कुंस्तंकुस्ता मुस्ती करने लागा। मथनी भी ले गया हाथ छुड़ा कर भागा। इतने में हो गया भोर ससुर घर जागा। पतिने मुझको यह कलंक लगाकर त्यागा ॥ डर सास ननदका हमसे लड़े जिठनियाँ। लै गयो०॥ सुन सखी श्याम से मथनी क्योंकर पाऊं। मोहि माँगत आवे लाज बहुत सकुचाऊं ॥ है नया नेह शर्माते सन्मुख जाऊँ। दूरी से नटवर वेष देख ललचाऊँ ॥ मुख धर बाँसुरी बजावे तान रसभिनियां। लै गयौ० ॥ वोह सुन्दर साँवरा मेरी नजर जब आवे। पलकोंसे मारे सैन नैन मटकावे। वंशीमें मोहिनी डाल मुझे बिलमावे॥ एक नजर दिखाकर तन मन हर ले जावे। है ब्रज में प्रकटो बड़ो वो छैल चिकिनियां ॥ लै गयौ० ॥ माथे पर चंदनमौर मुकुट शिर साजै। कानोंमें कुण्डल कर मुरली बिराजे ॥ एक पड़ी वो नाक बुलाक अधिक छवि साजे। साँवरी सूरत पर पीतांबर राजे ॥ कटि किंकिणी बाजे पग म्याने पैंजनियां

लै गयो० ॥ भोला मुख भोली बतियाँ लगती प्यारी । मन चाहे चित से प्रेम राह रस न्यारी॥ग्वालिन की लगनसे मगन हुए गिरधारी। कहै देबीसिंह मैं कृष्ण तेरी बलिहारी॥ दिन रात तुम्हारा ध्यान धरै दुनियाँ। लै गयो० ॥

ख्याल तबहीर–बहेर तबीर

मैं देखूँ हूँ सबके हैं सरपर वही पर अपनातो रखतावो सर हो नहीं। ये सितम है कि उसके हैं चश्म कहाँ पर ऐसी किसी की नजर ही नहीं॥ है दैरो हरम में वो जलवे कुनापर अपना तो रखता घर ही नहीं। वो मकीं है अजब के मकांही नहीं वो मक्का है अजीब के दर ही नहीं॥है उसका वह मसकन पाक जहाँ वहाँ वह मोगुमांका गुजर ही नहीं। न तो दिन है वहाँ न तो शव है वहाँ वहाँ देखो तो शम्शोकमर ही नहीं॥ है नूर का उसके जहूरखिला पर है वोकहाँ ये खबरही नहीं। ये सितम है०॥ वह जलवा है उसका तमाम जगह कोई और तो जलवागर हो नहीं। कहीं मिस्ले नूर अयां है वोही कहीं मफी है मुजहर ही नहीं॥ से जमीनो फलक का है उसके सिवा कोई मालक जेरो जबरही नहीं। सरदारहै कुल आलम का वही कोई उसपै तो है अफसर ही नहीं॥ जो चाहे सो करता है आप वही कुछ उनको किसीका खतर ही नहीं।ये सितम० ॥ वोः अजीब है नखले मुरादे चमन कहीं हस्ती में ऐसा सजर ही नहों। तरोताज निहाल लतीफ है वह कोई उससे तो है बेहतर हो नहीं। कहीं नखल में शाखहैं वर्ग नहीं कहीं गुल में तो लगला समरही नहीं। उसे जाके चमन मेंजो ढूँढेंअगर तो औ पाये नसीमो सहरही नहीं॥ वोः सहज है बहार है जिसे है सदा कभी वादे खिजां से नजरही नहीं ये

सितम०॥ जिसे इश्क खदान जहाँ में हुआ कोई उससे तो है बरही नहीं। वालिद ही हुए कुछ अकलो कहे मगर ये भी नहीं तो बशरही नहीं॥कहै काशीगिरि लापरवा हैवोःकुछख्वाहिशे सीमोजर ही नहीं। वो रुतवा है उसका के शाहों कामी कुछ आगे तो उसके बकरही नहीं॥ जो फकीरों के फैजे सखुन में है वो जवाँ में किसी के असर ही नहीं। ये सितम है कि०॥

ख्याल चोहैष बंदा खुदाया–बहेर तबीर

जिसे जिस्मका अपने गुरूर नहीं उसेमौतका खौफो खतरही नहीं।न तो ख्वाहिश उसको विहिश्त की है कुछ दोजखका भी तो डर ही नहीं॥ वो मकां है मेरा तनकाई जहाँ शम्शोकमर का गुजरही नहीं। न आवो हवा न तो आतिशवाँ कोई मेरे सिवा तो बशर ही नहीं॥ जिसके परदा दुईका वो दूर हुआ तो फिर उसमें खुदा में कसरही नहीं। जहाँ देखे वहाँ पे है नूरे खुदा कोई और तो आता नजरही नहीं॥ कोई लाख तरे से जो मारे उसे पर उसका तो कटतावो सरही नहीं। न तो०॥१॥ जिसकी एक निगाह है तमाम जगह उससे आगे तो जैरो जबरही नहीं। जिसे अक्ल फैहम में है दखल बड़ा उसके आगे तो इल्म हुनरही नहीं॥ जिसके कबजे में गंज है वहदका कोई उस्सा दौलतवर ही नहीं । जो कुछ आया वह उसने लुटा ही दिया कुछ पासमें रखता वो जरही नहीं॥ हरहालमें जो के कुशी है वशर ऐसी होती किसी की गुजर ही नहीं न तो० ॥२॥ उसके जेरे से नूर हजार बने आगेतो शम्शो कमरही नहीं। जिसनेदेखा उसे वह उसीमें मिला कोईऔर तो उसका है घर ही नहीं ॥ मैंने दोनों जहाँमें जो देखा तो क्या कोई और तो मेरा जिगरही नहीं। सिवा उसके न कोई

रफीक मेरा मुझे और किसी की फिकरही नहीं। जो है बंदा उसी का न गन्दा हुआ कोई और का उस पै असर ही नहीं॥ न तो० ॥ ३ ॥ मुझे ख्याल उसी का है आठों पहर मैंने याद किसी की तो करी ही नहीं। जबसे देखा उसे तो मैं भूला सभी पर भूला मैं उसका तो डरही नहीं ॥ वोदिलही में मुझको दिखाई दिया कहीं करना पड़ा। कुछ सफर ही नहीं। दरिया है ये देवीसिंह का सखुन कहीं ऐसी तो लहरो बहरही नहीं ॥ है नाम वो तेरा काशीगिरि कोई और तो ऐसा बसरही नहीं। न तो ख्वाहिश० ॥ ४ ॥

फकीर के चारहु रूप ही दुरुस्त हैं चहार दर्वेश गलत–बहेर खड़ी

ऐसे फख्र और काफ से कुदरत रेसे रहम और येसे याद। चार हर्फ हैं फकीरों के जो पढ़े तो हो दिल शाद ॥ फकीर होना बहुत कठिन है जिसमें फख्र की हो नहिं बू। और तो कुदरत भी न हो तो ऐसे फकीरी पर है थू ॥ रहम न हो दिल में तो दुनिया छोड़ न होना फकीर तू। याद इलाही जो कोई करे तू उसके कदम को छू ॥

शैर–यह चारों बातहों जिसमें वह फकीरी कोकरे। नहिं क्या जटा बढ़ाके बोझ शिर पै धरे ॥ इससे बेहतर है कि दुनिया में तू रह और कुछ दे। मैं यह करता हूँ फकोरी तो है परसे परे ॥ ऐसी फकीरी मत करना जो चारों बात होवें बरबाद। चार हर्फ० ॥ १ ॥ फख्र वह कुदरत रहम और यादे इलाही भी है बहुत कठिन। वह फकीरी है कि जिसकी आठों पहर उससे है लगन ॥ फिर उसको क्या ख्वाहिश है दुनिया की और क्या करना धन। फकत गुजारा यहाँ करना है इसी में रहैं मगन ॥

शैर-आगया माल तो दम में लुटा दिया उसने। किसी को दे दिया कोई से ले लिया उसने ॥ न तो लेने की खुशी कुछ भी न गम देने का। काम नेकी का जो कुछ बन पड़ा किया उसने ॥ इसके मायने वह समझें जिसके दिलमें पूरा इतकाद। चार हर्फ०॥२॥ फकीर है कि जो कोई जीते जी समझे मरना। जीते जी जा मरें तो मौत से भी नहिं हो डरना। अगर मरें तो खुदा में मिलै नहिं हो दुःख भरना॥

शैर–खौफ दोजख का न कुछ और न खुशी जन्नतकी। किया दोनोंको तर्क वश ये उनको मन्नतकी॥ दोनों दुनियाँ को छोड़कर मैं न मैंने सुन्नत की। चार हर्फ ये पढ़े और गुने तो वह कहलाये आजाद ॥ चार हर्फ० ॥ ३ ॥ चार किताबें पढ़े तो क्या और सुने अगरचे चारों वेद। पर नहिं उसको गुनें तो कभी न हो पूरी उम्मेद ॥ और इल्म कितने सीखे इस दिलपर आपने उठाके खेद। पर मुशकिल है जहाँ में सुनो फकीरी का कुछ भेद ॥

शैर-मैंने देखा कि फकीरोंके हैं मौताज सभी। फकीरी मुझ को मिलै और न मिलै राज कभी। खुदाने अपनी जुवाँ फख्र से मिलाई। हुक्म में उसके है वो साज और समाज सभी॥ बनारसी भी फकीर है और देवीसिंह उस्ताद। चार हर्फ०।४।

लावनी तौहीद बहेर–लंगड़ी

खुदा से जो कोई मिला तो वह फिर खुदा हुआ नहिं जुदा हुआ। नक्की उसको मिली और हुई का तो हर गया दुआ॥ यकताईके आलिममें हरवक्त चूररहता हूँ मैं। दुई वालोंसेतो लाखोंकोस दूररहताहूँ मैं। अनअल कहजो कहै तो उसके संग जरूर रहताहूँ मैं। पेशानी में जो उसकी बनके नूर रहताहूँ मैं॥

शैर-अगर वह खाकमें लोटें तो गिल अक्सीर बन जावे। करे मिसको तिला उस गिल की वह तासीर बन जावे ।। जवां से जिसको कुछ कहदे तो वह फिर पोर बन जावे। खुदा से गर कहें तू बन तो वह तसवीर बन जावे ।। कभी नहिं हारे दुनियाँ में उन्होंने वह जीता है जुवा । नक्की उसको० ।। १ ।। आबका कतरा मिले जो दरिया में तो वह दरिया बन जाय। खुदा से जो कोई मिले तो वेशक वह माला बन जाय ।। नूर में जिसको मिले नूर कुल जहाँ का यह जलवा बनजाय। दुईको करदे दूर तो आलम में यकता बन जाय ।।

शैर–मिला चाहे तो उससे मिल तू अब अपनी ही हस्ती में। हमेशा मस्त झूमाकर सदा रहो अपनी मस्ती में ।। कभी शहरा में घूमाकर कभी जा बैठे बस्ती में। कभी रहो बुत परस्ती में रहो हक परस्ती में ।। जिसने समझा एक वह तो फिर मौत को जीता नहीं मुवा । नक्की उसको०।। २ ।। हम दश अब्बल खानम बाहेद यकता उसमें हुई नहिं। वारे मेरे दिल के इसमें दुई तो मुतलक हुई नहिं।। जो के जिनसे मैंने पकड़ी वह चीज किसी की हुई नहिं । बात खुदा से तो मेरे सिवा किसी की हुई नहिं ।।

शैर-कलामे मारफत मेरी जवाँ से हर घड़ी निकले। कि जैसे सिफ्त मौला को कुरआँ से हर घड़ी निकले ।। गिरेवाँ फाड़कर हम इस जहाँ से हर घड़ी निकले। बयाँ तौहीद तो मेरे बयाँ से हर घड़ी निकले ।। जिसने खेल खेला है खुदा से जुबा फिर उसने कहा छुवा । नक्की उसको०।।३।। नेक जो है यह एक समझता एक नाम से काम मुझे। मुफ्त मिला वह खर्च नहिं करनी पड़ी छदाम मुझे ।। उस मालिक का

नाम लिये से मिला बहुत आराम मुझे। अब तो यही लौ लगी रहती है आठों याम मुझे ।।

शैर-दुई का उठगया परदा तो यकताई नजर आई। न फिर बाबा नजर आया न वह माई नजर आई ।। अगर रुसवा हुए हम तो न रुसवाई नजर आई। जब अपने आपको देखा तो जेबाई नजर आई ।। बनारसी नहिं कथा अब उसके कांधे का उठ गया जुवा । नक्की उसको० ।। ४ ।।

लावनी तोहीद—बहेर लंगड़ी

पास न कौड़ी रही तो मैंने मुफ्त खुदा को मोल लिया। ऐसा सौदा किया अनमोल और मैंने कुछ न दिया ।। पाया खजाना गयेब का मैंने कभी नहिं घटने का है। चाहे जितने मैं बाटूं कभी नहिं बटने का है ।। खर्च न कौड़ी होय फकत ये जवां ही से रटने का है। ऐसा सौदा तो कोई फकीरसे पटनेका है।

शैर-न रही पासमें मेरे जो एक लंगोटी। मुँडाया उसको भी शिर पर मेरे जो थी चोटी ।। किया सवाल तो सबकी सही खरी खोटी। लगी जो भूख तो खाई वह माँग कर रोटी।। पियास लगी तो पानी भी जैसा ही मिला वैसा ही पिया। ऐसा०।।१।। यह बाजार निरगुन का है मैं खरीददार मालिक का हूँ। मालिक भी हूँ और मैं तावेदार मालिक का हूँ ।। वह मेरा है दोस्त और मैं भी तो यार मालिक का हूँ। जो चाहें सो करूँ मैं मुखतियार मालिक का हूँ ।।

शैर-यहहाटमें जो गया उसका वहहुआ सौदा। न खर्च कुछ भी पड़ा मुफ्तमें मिला सौदा। हम हाथ उनके बिके जिसे यह किया सौदा।। न कोई देखसके है मेरा छुपा सौदा। कभी नहीं घाटा होवेगा अब मेरा खुलगया हिया।। ऐसा०।।२।।रोजगार